

मार्गदर्शन एवं परामर्श में आकलन एवं मूल्य निर्धारण-II

शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्

मॉड्यूल के विषय में

अब तक आप अच्छी तरह से समझ चुके हैं कि आकलन एवं मूल्य निरूपण की प्रक्रिया एवं कार्यप्रणाली विद्यार्थियों के विषय में विस्तृत जानकारी प्राप्त करने के साधन हैं और इस प्रकार परामर्श के उद्देश्य को पूरा कर रहे हैं। मार्गदर्शन एवं मूल्य निरूपण पर आधारित मॉड्यूल-II आकलन एवं मूल्य निरूपण के सिद्धांत एवं व्यवहार के कुछ और पहलुओं को जारी रखता है।

इस मॉड्यूल में चार यूनिट हैं। पहली यूनिट आपको आकलन एवं मूल्य निरूपण हेतु अभिरुचि, अभिक्षमता तथा उपलब्धि के साथ ही साथ इसके महत्व को समझने में सहायता करेगी। यह अभिरुचि, अभिक्षमता तथा उपलब्धि आंकड़ों को विशेष रूप से शैक्षिक एवं करियर मार्गदर्शन तथा परामर्श में प्रयोग हेतु एकीकृत करने के महत्व को रेखांकित करती है।

व्यक्तित्व का आकलन करियर एवं वैयक्तिक-सामाजिक परामर्श के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण क्षेत्र है। दूसरी यूनिट प्रभावपूर्ण परामर्श के लिए व्यक्तित्व आकलन के विभिन्न मापकों के प्रयोग तथा विद्यार्थियों की एक समग्र तस्वीर विकसित करने में उनकी भूमिका के विषय में जानकारी विकसित करने में परामर्शदाता की सहायता करेगी। तीसरी यूनिट विद्यालय के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता की संभावना को पहचानने एवं आकलन के लिए सृजनात्मकता की प्रकृति, आधारभूत पूर्वानुमान एवं तकनीकों को समझने में आपकी सहायता करेगी। एक परामर्शदाता के रूप में आपको यह जानने की आवश्यकता है कि सृजनात्मकता के पोषण हेतु किस प्रकार से आकलन आंकड़ों का प्रयोग किया जा सकता है। जैसा कि आकलन का मूलभूत उद्देश्य परामर्श में इसका उपयुक्त प्रयोग एवं उपयोग है इसलिए योग्यता, अभिक्षमता, अभिरुचि, तथा व्यक्तित्व आंकड़ों को संग्रहित करने तथा इस प्रकार के आंकड़ों के चयन में अंतर्दृष्टि एवं संवेदनशीलता विकसित करने की आवश्यकता है। चौथी यूनिट आपको परामर्श हेतु मूल्य निरूपण आंकड़ों का सही प्रकार से व्याख्या करने, संप्रेषित करने, प्रतिवेदन एवं एकीकृत करने में सक्षम बनाएगी। मनोवैज्ञानिक आकलन के प्रयोग सत्र के समय आपकी क्षमताओं को और अधिक सशक्त बनाया जाएगा।

हिंदी अनुवाद

राघवेन्द्र पति त्रिपाठी, अध्यापक परामर्शदाता, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

प्रकाश चन्द्र तिवारी, प्रवक्ता, राजकीय इंटर कॉलेज, चौमेल, चम्पावत

शैलजा गौड़, प्राथमिक शिक्षक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, धनपऊ, देहरादून

सदस्य (समीक्षा / संपादन कार्यशाला)

हेमलता तिवारी, प्रवक्ता, एस.सी.ई.आर.टी., देहरादून

राघवेन्द्र पति त्रिपाठी, अध्यापक परामर्शदाता, शिक्षा निदेशालय, दिल्ली

शैलजा गौड़, प्राथमिक शिक्षक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय, धनपऊ, देहरादून

सदस्य-समन्वयक

प्रभात कुमार मिश्र, सहायक प्रोफेसर, शैक्षिक मनोविज्ञान एवं शिक्षा आधार विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली

विषय-सूची

मॉड्यूल के विषय में

यूनिट 1 : अभिरुचि, अभिक्षमता तथा उपलब्धि का आकलन

यूनिट 2 : परामर्श हेतु व्यक्तित्व का आकलन

यूनिट 3 : सृजनात्मकता की प्रकृति तथा आकलन

यूनिट 4 : परामर्श में आंकड़ों का मूल्यनिर्धारण

1

अभिरुचि, अभिक्षमता तथा उपलब्धि का आकलन

1.0 परिचय

1.1 उद्देश्य

1.2 अभिरुचि

1.2.1 अभिरुचियाँ क्या हैं

1.2.2 अभिरुचियों के प्रकार

1.2.3 अभिरुचियों का आकलन

1.3 अभिक्षमता

1.3.1 अभिक्षमता परीक्षणों के प्रकार

1.3.2 अभिक्षमता परीक्षण आकंडों की व्याख्या

1.3.3 अभिक्षमता परीक्षण आकंडों के प्रयोग में विशेष सतर्कता

1.4 शैक्षिक उपलब्धि

1.4.1 उपलब्धि परीक्षणों के प्रकार

1.4.2 मानकीकृत एवं अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षण

1.4.3 उपलब्धि परीक्षण आकंडों के प्रयोग में सावधानियाँ

1.5 परामर्श हेतु अभिरुचि, उपलब्धि एवं अभिक्षमता परीक्षण आकंडों का समेकीकरण

1.6 सारांश

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास के उत्तर बिंदु

आत्म-परीक्षण अभ्यास के उत्तर बिंदु

संदर्भ पुस्तकें

पठनीय पुस्तकें

परिचय

एक लम्बे सप्ताहांत के उपरान्त आज आपका कार्य पर पहला दिन है, आप गणित पढ़ाने हेतु आये हैं। जब अधिकांश विद्यार्थियों ने आपकी उपस्थिति के प्रति प्रतिक्रिया व्यक्त की, उस समय पहली दो पंक्ति में बैठे कुछ विद्यार्थी किसी क्रियाकलाप में तल्लीन हैं, इससे जिज्ञासु होकर जब आप उनके पास जाते हैं तो आप पाते हैं कि अलताफ खिड़की से बाहर की ओर कुछ चिड़ियों को देखने में व्यस्त है और अपनी कविता का सृजन करने का प्रयास कर रहा है, जो कि उसे अच्छा लगता है, उसी के बगल में बैठा बिल अपने कम्प्यूटर में गेम खेलने में व्यस्त है और खेल के अगले स्तर की ओर बढ़ने का प्रयास कर रहा है। ठीक उसके पीछे की सीट पर बैठी रेनु एक पुस्तक पढ़ने में पूर्ण रूप से खोयी है, उसके दोस्तो ने स्पष्ट किया कि रेणु एक बहुत ही शान्त प्रकृति की लड़की है केवल तभी अन्तःक्रिया करती है जब दूसरे उससे बोलते हैं तथा उसे पियानो बजाना अच्छा लगता है। हरि अधैर्यपूर्वक गणित की कक्षा के समाप्त होने का इन्तजार कर रहा है ताकि वह मैदान में अपने दोस्तों के साथ फुटबाल खेलने के लिए दौड़े। स्पष्ट है कि एक विद्यार्थी गणित के प्रश्न हल करने में या कविता लिखने में अपना वास्तविक (प्राकृतिक) झुकाव रख सकता है जबकि दूसरे अपने शब्दकोश के विस्तार में आनन्द ले सकते हैं और इसी तरह अन्य भी। कक्षा में जब आप उपरोक्त विद्यार्थियों एवं अन्य विद्यार्थियों के क्रियाकलापों को देखते हैं तो आप पहचान करते हैं कि वैयक्तिक भिन्नता प्रकृति का नियम है और यह प्रत्येक उम्र के सभी मनुष्यों के लिए समान है। यही चीज सभी मानवीय अभिलक्षणों पर लागू होनी है, व्यक्ति अभिरुचि, सामर्थ्य, योग्यता, उपलब्धि या फिर क्रियाकलापों के चयन के मामलों में और विषयों के मामलों में भी एक दूसरे से भिन्नता प्रदर्शित करते हैं। एक परामर्शदाता के रूप में आप अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धियों के सिद्धांतों की अच्छी समझ प्राप्त करने को चुनौतीपूर्ण पायेंगे। आप पायेंगे कि अपने विद्यार्थियों की अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धि की सूचनाओं के प्रयोग से आपको उन्हें समझने में सहायता मिलेगी और आप उन्हें उनकी सामर्थ्य विकसित करने में सहायता प्रदान कर पायेंगे।

इस यूनिट में अभिरुचियों, उपलब्धि एवं अभिक्षमता के सिद्धांतों का वर्णन है। आपने इनमें से प्रत्येक को पहचानना व उसका आकलन करना सीखेंगे। किसी विद्यार्थी के प्रत्येक पहलू पर प्राप्त आकड़ों को एकीकरण करने से आप उसे उसके विशिष्ट अभिलक्षणों के बारे में एक समग्र चित्र प्राप्त करने में मदद कर सकते हैं और साथ ही उपयुक्त जीवनवृत्ति एवं वैयक्तिक सामाजिक विकल्पों के चुनाव में भी उनकी मदद कर सकते हैं।

1.1 उद्देश्य

इस यूनिट की समाप्ति पर आप समर्थ होंगे कि—

- अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धि के सिद्धांतों को समझ सकें।
- परामर्श में अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धि के महत्व की व्याख्या कर सकें।
- अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धि के आकलन में प्राप्त सूचनाओं के प्रयोग का वर्णन कर सकें।
- अभिरुचियों, योग्यता एवं उपलब्धि आकड़ों से प्राप्त सूचनाओं को विद्यार्थियों के परामर्श प्रक्रिया में समाकलित कर सकें।

1.2 अभिरुचियाँ

विद्यार्थियों की व्यवसायिक/पेशा संबंधी विकल्पों के चुनाव में सहायता करने के लिए परामर्शदाता को उनके विभिन्न क्रियाकलापों के प्रति अभिरुचियों की जानकारी की आवश्यकता होती है।

1.2.1 अभिरुचियाँ क्या हैं ?

यदि आप अपने अतीत के अनुभवों पर नजर डालें तो आपको स्मरण होगा कि आप हर प्रकार की गतिविधियों में शामिल नहीं होते थे। आपने अन्य विषयों की तुलना में कुछ कौशलों के लिए लम्बे समय तक अभ्यास किया फिर भी अनिच्छा या थकावट नहीं महसूस किया जबकि कुछ कौशलों से आप बिलकुल अलग रहे। इसी प्रकार से आपने अवलोकन किया होगा कि आपका एक विद्यार्थी एक विशेष गतिविधि को बहुत पसंद करता है जबकि वह अन्य चीजों को भी करने में सक्षम है। ऐसा क्यों ? यह उसकी अन्य गतिविधियों की तुलना में उन गतिविधियों के प्रति स्वाभाविक लगाव के कारण है। अभिरुचि उन गतिविधियों से संबंधित है जिसे एक व्यक्ति करना पसंद करता है। उदाहरण के लिए, मिरियम पढ़ाई से अधिक गाना पसंद करती है, यह संकेत करता है कि मिरियम भाषा एवं साहित्य की अपेक्षा संगीत में अधिक रुचि रखती है। तथापि, इसका अर्थ यह नहीं है कि मिरियम भाषा एवं साहित्य में अच्छा प्रदर्शन नहीं करती है या नहीं कर सकती है बल्कि यह संगीत के लिए उसकी वरीयता को दर्शाता है, उसकी स्वाभाविक इच्छा को जो अन्य गतिविधियों की अपेक्षा संगीत में अधिक है।

क्या अभिरुचियाँ अर्जित की जाती हैं ? अभिरुचियाँ व्यक्ति के पर्यावरण से अर्जित की जाती हैं और जैसा कि व्यक्ति के पर्यावरण में भिन्नता होती है इसलिए अभिरुचियाँ भी भिन्न होती हैं। ये व्यक्तिगत पर्यावरण के संदर्भ में विकसित होती हैं। उदाहरण के लिए, संगीत में अभिरुचि इस प्रकार के पर्यावरण में होती है जहाँ पर संगीत की उपलब्धता होगी। अभिरुचियाँ व्यक्ति की प्रेरणा, प्रवृत्ति एवं सांवेगिक प्रतिक्रियाओं से परिवर्तित होती हैं और इस प्रकार स्थायी नहीं होती हैं। यद्यपि किशोरावस्था के दौरान अभिरुचियाँ स्थायी होना प्रारम्भ होती हैं, वे विभिन्न अवस्थाओं में भिन्न होती हैं तथा विविध विकासात्मक अवस्थाओं में उनके आकलन की आवश्यकता होती है।

एक परामर्शदाता के रूप में विद्यालयी स्तर पर अभिरुचियों का आकलन आपको एक विद्यार्थी के द्वारा लिए जाने वाले शैक्षिक या करियर क्षेत्र के निर्णयों या दैनिक गतिविधियाँ जिसमें एक व्यक्ति आनंद प्राप्त कर सकता है तथा अच्छी तरह से कर सकता है, उसके विषय में एक विस्तृत परिप्रेक्ष्य के लिए सहायता कर सकता है।

1.2.1 अभिरुचियों के प्रकार

अभिरुचियों को विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया जा सकता है। एक परामर्शदाता को जानना होगा कि क्या किसी व्यक्ति की अभिरुचियाँ स्वाभाविक (अंतःप्रेरित) हैं या बाह्यप्रेरित। बहुत से विद्यार्थी विज्ञान विषयों को पसन्द करते हैं या उनमें अभिरुचि रखते हैं और इसलिए विज्ञान विषयों का चयन करते हैं, यह उनके अन्तःप्रेरित (स्वाभाविक) अभिरुचि को प्रदर्शित करता है। वहीं दूसरी तरफ, प्रायः आपने देखा होगा कि कुछ छात्र विज्ञान विषयों में अच्छा नहीं करते हैं किन्तु फिर भी उनके अभिभावकों द्वारा समाज में प्रतिष्ठित माने जाने वाले मेडिकल या इन्जीनियरिंग पेशे से जुड़ने के उद्देश्य से उन्हें विज्ञान विषय लेने के लिए बाध्य किया जाता है, ऐसी परिस्थितियों में विद्यार्थियों की अभिरुचियाँ उनके माता-पिता द्वारा जगायी जाती हैं और इसलिये बाह्यप्रेरित अभिरुचियाँ कहलाती हैं।

सुपर (1990) ने अभिरुचियों को इस तरह वर्गीकृत किया (i) व्यक्त की गयी (ii) स्पष्ट या अवलोकित की गयी और (iii) मापी गयी या परीक्षण की गयी।

- (i) व्यक्तियों की पसन्द और उनकी ना पसन्द, जैसे “मैं शिक्षण कार्य पसन्द करता हूँ” या “मैं कार्य शिक्षण नापसन्द करता हूँ” आदि, का प्रकटीकरण ही व्यक्त की गयी अभिरुचियाँ हैं। परामर्शदाताओं को यह स्मरण रखना चाहिये कि सेवार्थी के प्रकटीकरण को परीक्षणों, परीक्षण सूचियों, अवलोकनों इत्यादि से अनुमोदित कराने की आवश्यकता होती है। यहाँ तक कि व्यक्त की गयी अभिरुचियों के बारे में जब विचारधाराएँ, स्वीकृत कर ली गयी हों तब भी वे नैदानिक या पूर्वानुसार करने के उद्देश्य से कम महत्वपूर्ण होती हैं क्योंकि वे आत्मनिष्ठ हो सकती हैं।
- (ii) स्पष्ट या अवलोकित की गयी अभिरुचियाँ सेवार्थी के किसी क्रियाकलाप या पेशे में सहभागिता से निर्मित की जाती हैं। उदाहरणार्थ, जब एक विद्यार्थी पर्यावरण संबंधी गतिविधियों, जैसे अपने निवास करने वाले मुहल्ले में जब संरक्षण में भाग लेता है, फिर उसी तरह के अन्य क्रियाकलापों में समय बिताता है तो हम कह सकते हैं कि वह सामाजिक अभिरुचि रखता है। एक विद्यार्थी जो संगीत सुनने में, विभिन्न संगीत उपकरणों को बजाने में समय व्यतीत करता है। सौन्दर्य शासन में अपनी अभिरुचियों दिखाता है, प्रत्यक्ष अवलोकन से निर्मित होने के बावजूद भी इन अभिरुचियों से कोई अनुमान लगाने में, एक परामर्शदाता के रूप में आपको विशेष सावधानी व सतर्कता बरतने की आवश्यकता होती है। अवलोकन एक लम्बे समय अन्तराल तक किये जाने चाहिये और अवलोकन का नमूना/आदर्श आवर्ती होना चाहिये। माता पिता, अध्यापकों या मित्रों द्वारा किये गये अवलोकनों पर भी ध्यान दिया जाना चाहिये और इन अवलोकनों को कुछ वस्तुनिष्ठ आंकड़ों के साथ परिपूरित किये जाने की आवश्यकता होती है।
- (iii) मापी गई या परीक्षण की गयी अभिरुचियाँ वे हैं जिनका कि वस्तुनिष्ठ परीक्षणों द्वारा परीक्षण किया जाना है। अभिरुचि सूचियाँ, शैक्षिक परीक्षण और कभी-कभी उपलब्धि परीक्षण भी किसी व्यक्ति की अभिरुचियों को इंगित कर सकते हैं, उदाहरणार्थ, एक लम्बे समय अन्तराल तक विज्ञान विषय में उच्च अंकों का प्राप्त होना और उतने ही समय अन्तराल तक इतिहास विषय में कम अंकों का प्राप्त होना, इतिहास के बजाय विज्ञान में उच्च अभिरुचि को इंगित करना है।

1.2.3 अभिरुचियों का आकलन

एक परामर्शदाता के रूप में यदि आप किसी व्यक्ति की पेशे संबंधी विकल्पों के चयन में सहायता करते हैं तो आपको उसकी अभिरुचियों एवं विभिन्न गतिविधियों के लिए वरीयताओं को जानने की आवश्यकता होती है। अभिरुचियों का यह अध्ययन आपको एक परामर्शदाता के रूप में सेवार्थी को समझने में भी मदद करेगा। एक सेवार्थी की पेशे संबंधी अभिरुचियों के अध्ययन का सबसे आसान तरीका है कि उससे पेशे के विकल्पों के चयन के संदर्भ में सीधे प्रश्न पूछे जाय। उदाहरणार्थ— परामर्शदाता सेवार्थी से पूछ सकता है कि क्या आप डाक्टर बनना चाहते हैं? इस तरह के प्रश्नों का हाँ में उत्तर सेवार्थी की मेडिकल पेशे में अभिरुचि को इंगित करेगा। किन्तु इस तरह की प्रतिक्रियाएँ परिवर्तन हेतु सुग्राही होती है। बहुत अधिक पसन्द करते हैं का आशय भिन्न-भिन्न व्यक्तियों के लिए भिन्न-भिन्न होगा। दूसरा, भिन्न-भिन्न लोग जॉब की प्रकृति एवं इसकी कार्य करने की

दशाओं के बारे में भिन्न-भिन्न विचार रखते हैं। कुछ सेवार्थियों के लिए मेडिकल से अभिप्राय शल्यक्रिया से या फिर प्रयोगशाला में कार्य करने से या फिर शिक्षण कार्य से हो सकता है। किसी जॉब की पसन्द एवं समझ के स्तर में ये परिवर्तन निश्चित ही सेवार्थी की अभिरुचियों का एक असन्तोषजनक सूचक प्रस्तुत करेंगे, जैसा कि उपरोक्त मेडिकल पेशे वाली दशा में। अभिरुचियों के बारे में सीधे व विशिष्ट प्रश्न पूछना, अभिरुचि की एक अच्छी व विश्वसनीय माप नहीं है।

एक विद्यार्थी की अभिरुचियों का पता लगाने हेतु आप (i) औपचारिक आकलन तकनीकों तथा (ii) अनौपचारिक आकलन तकनीकों का प्रयोग कर सकते हैं।

(i) औपचारिक आकलन तकनीक - अभिरुचि खोज सूचियाँ, अभिरुचि मापन की औपचारिक तकनीकें हैं। साक्षात्कारों की तुलना में अभिरुचि खोज सूचियाँ किसी व्यक्ति की अभिरुचियों का पता लगाने के लिये अधिक विश्वसनीय समझी जाती हैं क्योंकि ये खोज सूचियाँ जीवनवृत्तियों की एक लम्बी श्रृंखला को निरूपित करने वाले बहुत सारे प्रश्नों को सम्बोधित करती हैं।

प्रारूपिक ढंग से खोज सूचियों द्वारा अभिरुचियों के आकलन में विद्यार्थियों को लोगों द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में पूर्व से प्राप्त पेशों एवं किये गये क्रियाकलापों की सूची प्रस्तुत करायी जाती है। विद्यार्थियों से उन क्रियाकलापों का चयन करने को कहा जाता है जिन्हें कि वह प्रारम्भ करना चाहता है और जारी रखना चाहता है, और साथ ही उनका चयन भी किया जाता है जिन्हें करना वे पसन्द नहीं करते हैं। इस प्रकार प्राप्त प्रतिक्रियाओं की पूर्व में चिह्नित प्रतिक्रियाओं से तुलना व्यक्ति की अभिरुचियों के पैटर्न को पहचानने का आधार प्रदान करनी है। यद्यपि अभिरुचि का निर्माण साधारण्यता पेशेगत एवं अवकाश समय की गतिविधियों को श्रेष्ठता प्रदान करता है, अधिकतर खोज सूचियाँ प्रबलता से पेशों की ओर केन्द्रित रहती हैं क्योंकि ये उपकरण सामान्यतया शैक्षिक एवं जीवन वृत्ति/पेशा संबंधी परामर्श के लिए प्रयोग में लायी जाती हैं।

अभिरुचि खोज सूचियाँ – स्ट्रांग वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ब्लैक एवं कुदर प्रिफरेंस रिकार्ड (KPR), अभिरुचि मापन के क्षेत्र में, महत्वपूर्ण मील के पत्थर हैं और इनमें इनके प्रारम्भिक स्वरूप से अनेकों संशोधन किये जा चुके हैं। दोनों ही अभिरुचि खोज सूचियाँ अपने निर्माण एवं उद्देश्यों, जिनके लिये कि ये प्रयोग की जाती हैं, के उपागमों के पदों में एक दूसरे से भिन्न हैं।

पेशा संबंधी अभिरुचियों का प्रथम व्यवस्थित आकलन एडवर्ड के स्ट्रांग जूनियर द्वारा स्ट्रांग वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ब्लैक का विकास था। SVIB सेवार्थी से उसकी वरीयता को पसन्दों, नापसन्दों या तटस्था के पदों में सूचित करने को कहकर उसकी अभिरुचियों के पैटर्न को प्रकट करने में मदद करता है। किसी व्यक्ति की अभिरुचियाँ किसी दिये गये पेशे में सफल हुए लोगों की अभिरुचियों के किस सीमा तक अनुरूप है इसका मापन करने हेतु SVIB का डिजाइन किया जाता है।

जी फ्रेडरिक कुदर द्वारा निर्मित KPR व्यक्ति की विशिष्ट क्रियाकलापों के प्रति वरीयताओं का आकलन करना है। प्रत्येक मद/विषय तीन विकल्प रखता है। सेवार्थी का इन तीन विकल्पों में से किसी एक को अपनी पहली पसन्द व किसी अन्य को अपनी तीसरी पसन्द के रूप में चुनना होता है।

किसी एक विषय में दिये गये तीन पसन्दों के विकल्पों का एक उदाहरण इस प्रकार है –

- खग गृह का निर्माण
- खगों के बारे में लघु लेख लिखना
- खगों के रेखाचित्र खींचना

इस विशेष विषय का उद्देश्य तीन तरह की अभिरुचियों तथा यान्त्रिक, साहित्यिक, व ललित कला संबंधी का परीक्षण करना है।

यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि किसी व्यक्ति द्वारा KPR में प्राप्त उच्च अंक, किसी पेशे में उसकी अभिरुचियों को प्रदर्शित नहीं करते हैं बल्कि ये उच्च अंक उसकी अभिरुचियों को उस पेशे में सफल अधिकतर लोगों की अभिरुचियों के साथ समानता को निरूपित करते हैं।

यद्यपि किसी पेशे में अभिरुचियों एवं उस पेशे में सफल लोगों के जैसी अभिरुचियों के मध्य एक घनात्मक सह संबंध पाया जाता है।

दो प्रकार की खोज सूचियों में जो मुख्य अन्तर है वह यह है कि कुदर प्रिफरेंस रिकार्ड में सेवार्थी को बलपूर्वक कहलवाया जाता है कि इन तीन में से वह किस गतिविधि को सर्वाधिक एवं किस गतिविधि को सबसे कम पसन्द करता है भले ही वह उन तीनों में से किसी भी गतिविधि को पसन्द न करता हो, इसीलिए इसे बलपूर्वक प्रकार का मद चुनाव कहते हैं। स्ट्रांग वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ब्लैंक में सेवार्थी को पसन्द, नापसन्द या तटस्थ के मध्य उत्तर करना होता है, इसलिये इसे श्रेणी प्रतिक्रिया प्रकार का आकलन कहते हैं। एक परामर्शदाता के रूप में बहुत सारी उपयुक्तता के बारे में अनुमान निकालने हेतु आपको यदि किसी व्यक्ति का विवरण चाहिये हो तो अभिरुचि के आकलन हेतु आप कुदर प्रिफरेंस रिकार्ड उपकरण को वरीयता देंगे।

दूसरी तरफ यदि आपको कुछ सीमित कार्यों (नौकरियों) के लिये किसी व्यक्ति की अभिरुचि का मूल्य निर्धारण करना हो तो स्ट्रांग वोकेशनल इन्ट्रेस्ट ब्लैंक अधिक उपयोगी है। यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि SVIB एवं KPR व्यक्ति की योग्यता या अभिक्षमता के बारे में कुछ भी नहीं कहते हैं। ये दोनों अन्य विषयों द्वारा आकलित किये जाते हैं।

अभिरुचि खोज सूचियों या परीक्षणों के परिणाम परामर्शदाता के लिए उपयोगी होते हैं क्योंकि

- अभिरुचि खोज सूचियों की मदें भयमुक्त होती हैं और इसलिये विद्यार्थी के अधिक ईमानदारी से प्रतिक्रिया देने की सम्भावना रहती है।
- खोज सूचियों से प्राप्त अभिरुचि आकंड़े सेवार्थी की वास्तविकता के परीक्षण में सहयोग करते हैं अर्थात् सेवार्थी यह देखने में सक्षम होते हैं कि उन्होंने किस प्रकार से स्वयं को प्रस्तुत किया था।
- परामर्शदाता की सहायता से छात्र को अपनी सतर्कता एवं अभिरुचि खोज सूचियों से आकलित अभिरुचि के मध्य भिन्नता, यदि कोई हो, को जानने में मदद मिलती है।

- अभिरुचि खोज सूचियों से प्राप्त परिणाम परामर्शदाता को यह भी जानने में मदद करते हैं कि सेवार्थी ने जिन अभिरुचियों को प्रदर्शित किया है, वे उस कार्य (नौकरी) जिसको कि वह अपना रहा है, के लिए कितनी उपयुक्त हैं।

उदाहरणार्थ, यदि सेवार्थी ने डॉक्टर बनने की दिशा में चिकित्सा विज्ञान में अभिरुचि प्रदर्शित की है किन्तु फिर भी उसकी मापी गयी अभिरुचि गणित में उच्च व जीव विज्ञान में निम्न अंक प्रदर्शित करती है तो एक परामर्शदाता के रूप में आपको यह देखना होगा कि सेवार्थी का चिकित्सा विज्ञान अपनाने का लक्ष्य वास्तविकता से कितना परिपूर्ण है। अभिरुचि आकड़ों को अवश्य ही अभिक्षमता एवं उपलब्धि आकड़ों के साथ सम्पूरित किया जाना चाहिए।

आप दो भिन्न प्रकार की अभिरुचि खोज सूचियों के बारे में पढ़ चुके हैं। कुछ अन्य उपकरण जैसे- स्व निर्देशित खोज (self directed search, SDS) (हालैण्ड पॉवेल, फ्रिजे, 1994) तथा एसीटी अभिरुचि खोजपूर्ण सूची का यूनीसेक्स संस्करण (UNIACT) (स्वने, 1995) जोकि हॉलैण्ड के सिद्धांत पर विकसित किये गये हैं, भी बहुधा प्रयोग किये जाते हैं। SDS उपकरण का संचालन, अंकना व व्याख्या सेवार्थी द्वारा स्वयं की जा सकती है जबकि (UNIACT) उपकरण की अंकना कम्प्यूटर पर की जा सकती है और यह कम्प्यूटर से प्राप्त रिपोर्ट कार्यक्षेत्र से अंकों का संबंध स्थापित करने में मदद करती है। कैरियर परामर्श की कम्प्यूटरीकृत श्रेणियों में अभिरुचि आकलन के विभिन्न क्षेत्रों यथा प्रशासन से सूचनाओं के समेकन तक, व्यक्तिगत कम्प्यूटरों का अधिकाधिक प्रयोग हो रहा है। यह समय एवं मूल्य मितव्ययी साबित हुए हैं।

- (ii) अनौपचारिक आकलन तकनीकें – सेवार्थी की अभिरुचियों तथा अवलोकन की अभिव्यक्ति के संदर्भ में साक्षात्कारों से परामर्शदाता को उसे समझने के लिये एक अच्छी शुरुआत मिल जाती है। उदाहरणार्थ सेवार्थी जिन पुस्तकों को पढ़ता है और पढ़ने पर जितना समय व्यतीत करता है इससे उसकी पढ़ने के प्रति एवं पढ़ने के प्रकार के प्रति अभिरुचि के बारे में संकेत मिलता है। एक परामर्शदाता के रूप में आप इस तरह की सूचनाओं को आकलन की गुणात्मक तकनीकों यथा सेवार्थी द्वारा सहभागित क्रियाकलापों का अवलोकन या जीवन आख्या वृत्तांत (Anecdotal Record) एवं सेवार्थी की अभिरुचियों के संदर्भ में अनौपचारिक स्रोत के रूप में लिखित कार्य, से सम्पूरित कर सकते हैं।

अभिरुचि खोज सूचियों के प्रयोग में सावधानियाँ

अभिरुचि खोज सूचियों से प्राप्त परिणामों के प्रयोग में, एक परामर्शदाता के रूप में आपको निम्न सावधानियों एवं सतर्कताओं को मस्तिष्क में रखना होगा—

- अभिरुचियाँ स्थायी नहीं हैं। ये अनुभवों से संबंधित हैं, इसलिए जैसे ही व्यक्ति परिपक्व होता है ये परिवर्तित हो सकती हैं। फिर भी, यह माना जाता है कि अभिरुचियों का स्थायीकरण 18-20 वर्ष की उम्र के आस पास होता है, इसलिये अभिरुचि परीक्षणों के परिणामों को विद्यालय में विद्यार्थी द्वारा धारित स्थायी गुणों के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए।
- किसी व्यक्ति के अभिरुचि आंकड़े उसकी अभिरुचियों, (क्रियाकलापों जिनको करना वह पसन्द करता

है, के पैटर्न की रूपरेखा प्रदान करते हैं और इसलिए इन्हें व्यक्ति के सशक्त पक्ष के रूप में नहीं लिया जाना चाहिए।

- अभिरुचि परीक्षणों के परिणाम हमें केवल किसी व्यक्ति के किसी विशेष क्रियाकलाप या पेशे में आनन्द प्राप्ति की सम्भव्यता के बारे में बताते हैं न कि इसके कि वह क्या करने में समर्थ है।
- अभिरुचि खोज सूची में उच्च अंक को किसी कैरियर (वृत्ति) में सफलता के सादृश्य नहीं समझना चाहिए।
- बहुधा अभिरुचि खोज सूचियों के मद अपनी ही पारदर्शिता एवं सामाजिक रूप से इच्छित प्रतिक्रिया देने की प्रवृत्ति के कारण निरूपण के लिये संभाव्य होते हैं।

उपरोक्त खण्ड में आपने पढ़ा कि अभिरुचियों का आकलन एक साधारण स्तर पर संकेत करता है कि व्यक्ति क्या करना पसन्द करता है और किस चीज में आनन्द लेता है। यह याद रखना आवश्यक है कि अभिरुचियाँ सेवार्थी की पसन्द को संकेत करती हैं न कि उसके सशक्त पक्ष को, अभिरुचि खोज सूचियों का जोर स्व-खोज (self exploration) पर होता है। व्यक्ति को अपने बारे में जानना चाहिए और उसे इस सूचना का अपने द्वारा किये जा रहे कार्य के साथ स्थापित करने में सक्षम होना चाहिए। यह विद्यार्थियों को उनके द्वारा प्रदर्शित अभिरुचियों एवं अभिरुचि खोज सूचियों के मध्य समरूपता देखने में मदद करता है। उदाहरणार्थ, सेवार्थी अपनी अभिरुचि कम्प्यूटर प्रोग्रामिंग के लिये प्रदर्शित करता है जबकि अभिरुचि खोज सूचियों द्वारा आकलित अभिरुचियाँ यह नहीं संकेत करती हैं। अभिरुचि खोज सूचियों के परिणाम एक पृथक् रूप में नहीं देखे जाने चाहिए अपितु इन्हें अन्य तकनीकों यथा अवलोकन, साक्षात्कार, अनौपचारिक वार्तालाप इत्यादि से प्राप्त सूचनाओं से सम्पूरित किया जाना चाहिए। अभिरुचि खोज सूचियों के परिणाम स्वयं में काफी कम महत्व के होते हैं। किसी व्यक्ति को उसके शैक्षिक एवं कैरियर संबंधी चुनाव में सहायता करते समय अभिरुचि खोज सूची के परिणामों पर उपलब्धि एवं अभिक्षमता परीक्षण के परिणामों के साथ विचार करना चाहिए। अब आप विद्यार्थी को समझने के लिये शैक्षिक उपलब्धि के आंकड़ों के प्रयोग के बारे में पढ़ेंगे।

आत्म निरीक्षण अभ्यास -1

नीचे दिये गये विकल्पों में से उचित विकल्प को रिक्त स्थानों में भरें –

1. किसी व्यक्ति का उसकी पसन्दों एवं नापसन्दों का अभिव्यक्तिकरण.....अभिरुचियों की माप है।
2. किसी व्यक्ति की किसी क्रियाकलाप या पेशे में सहभागिता से हम उसकी अभिरुचि पहचान सकते हैं।
3. जिन अभिरुचियों का माप वस्तुनिष्ठ मापनी द्वारा किया जाता है उन्हें परीक्षण.....अभिरुचियाँ कहते हैं।
4. अभिरुचि खोज सूची का श्रेणी प्रतिक्रिया प्रकार.....का एक उदाहरण है।
5. सापेक्ष रूप विशुद्ध अभिरुचि कारक को मापता है।

(क) परीक्षण किया हुआ/ मापा हुआ

(ख) स्ट्रांग वोकेशनल इन्ट्रैस्ट ब्लैक

(ग) कुदर प्रिफरेंस रिकार्ड

(घ) प्रदर्शित की हुई

(ङ) प्रदर्शित या अवलोकित

1.3 अभिक्षमता, बुद्धिमत्ता पर आधारित पिछली यूनिट में आप पढ़ चुके हैं कि पारस्परिक मानसिक योग्यताएँ जैसे कि अमूर्त तार्किकता, यादाश्त, अवबोधात्मक योग्यता, सोचने की स्पष्टता इत्यादि को समाहित करते हैं, फिर भी बुद्धिमत्ता के ये परीक्षण किसी पेशे/ कार्य विशेष योग्यताओं के होने या न होने या उस कार्य विशेष के लिये व्यक्ति के सटीक व सुयोग्य होने के बारे में वैद्य प्रमाण उपलब्ध कराने हेतु नहीं बने होते हैं। बुद्धिमत्ता का एक अकेला मापन किसी व्यक्ति की विशेष योग्यताओं का वैद्य मापन नहीं समझा जाता है या बहुत सी विशेष प्रकार की योग्यताएँ जैसे यांत्रिक योग्यता लिपिकीय योग्यता या संगीत संबंधी योग्यता बुद्धिमत्ता के सामान्य परीक्षण का भाग नहीं होता है। कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श के लिये उभरती हुई आवश्यकताओं के साथ अभिक्षमता परीक्षण अस्तित्व में आये। अभिक्षमता को एक नैसर्गिक झुकाव, विशेष योग्यता या क्षमता या योग्यताओं के पुंज के रूप में समझा जाता है। प्रायः नैसर्गिक योग्यताओं को किसी व्यक्ति के सीखने के लिये तत्परता या किसी कार्य/ पेशे विशेष के लिये उसकी सुयोग्यता के संबंध में देखा जाता है।

उदाहरणार्थ — एक सफल वास्तुशास्त्री होने के लिये किसी व्यक्ति के पास कुछ योग्यताओं, जैसे अवलोकन की तीक्ष्ण सूझ, सौन्दर्य बोध की सूझ, अमूर्त तार्किकता और स्वतन्त्र चित्रकारी की योग्यता का पुंज अवश्य होना चाहिए। सामान्य रूप में अभिक्षमता की व्याख्या इन पदों में की जाती है कि कोई व्यक्ति किसी कार्य/क्रियाकलाप को करने में कितना सक्षम है क्योंकि किसी कार्य/क्रियाकलाप को करने में विशेष योग्यताओं का पुंज केन्द्रीय भूमिका में होता है। योग्यताओं का एक पुंज एक विशेष अभिक्षमता का निर्माण करता है जो कि किसी विशेष पेशे में सफलता के लिये आवश्यक होता है।

चूँकि अभिक्षमता किसी विशेष योग्यता या विशेष योग्यताओं के पुंज जो कि किसी कार्य को करने के लिये आवश्यक होती है को कहते हैं, यह किसी कार्य के क्षेत्र में सफलता की प्राथमिक संभाव्यता को संकेत करती है। अभिक्षमता यह भी संकेत करती है कि किसी विशेष योग्यता को विकसित करने में आगे प्रशिक्षण कितना मददगार साबित हो सकता है। अभिक्षमता न होने की दशा में कोई भी प्रशिक्षण कम ही लाभ दे सकता है। उदाहरणार्थ— एक व्यक्ति जो संगीत संबंधी अभिक्षमता नहीं रखता है वह प्रशिक्षण के बावजूद भी अपने प्रदर्शन को कुछ ही सीमा तक सुधार सकता है जो कि सफल होने के लिए पर्याप्त अच्छा नहीं हो सकता है।

अभिक्षमता और अभिरुचि

प्रायः किसी उद्यम विशेष में अभिक्षमता उस उद्यम को अपनाने में अभिरुचि को बढ़ाती है। इस कारण से ये दो अवधारणाएँ एक दूसरे से जुड़ी हैं, और प्रायः एक दूसरे के साथ भ्रमित हो जाती हैं तथा एक दूसरे के स्थान पर प्रयोग कर ली जाती हैं। किन्तु ये दोनों समान अवधारणायें नहीं हैं। अभिरुचि से आशय किसी व्यक्ति की

वरीयताओं से है, और सामान्यता इसे व्यक्ति की पसन्दों व नापसन्दों के पदों में प्रदर्शित किया जाता है जबकि अभिक्षमता से आशय अन्तःशक्ति से है। उदाहरणार्थ— एक व्यक्ति गीत गाने का शौकीन हो सकता है (अभिरुचि) किन्तु यह आवश्यक नहीं है कि वह गाने के लिये अपेक्षित संगीत संबंधी योग्यता (अभिक्षमता) अच्छा भी रखता हो, जो कि आवाज के तारत्व, तीव्रता, लय, मृदुता, स्वर शैली इत्यादि से आकलित की जाती है। अतः समग्र रूप में अभिक्षमता को सापेक्ष तौर पर संबंधित कार्यों में अच्छा निष्पादित करने के लिए आवश्यक स्थायी सक्षमता के रूप में जाना जाता है। कैरियर संबंधी चुनाव करते समय अभिरुचि एवं अभिक्षमता दोनों को ही सम्मिलित किया जाना चाहिए। यह आवश्यक नहीं कि अभिरुचि व अभिक्षमता दोनों साथ-साथ चलेंगे तथापि यह विश्वास किया जाता है कि एक व्यक्ति की उन चीजों व क्षेत्रों में अभिरुचि की सम्भावना अधिक होती है जिनमें कि वह योग्यता रखता है।

ठीक उसी प्रकार दो व्यक्ति जिनकी अभिक्षमता समान हो, भिन्न-भिन्न अभिरुचियाँ रख सकते हैं।

अभिक्षमता और उपलब्धि —

अभिक्षमता और उपलब्धि के मध्य भी सुस्पष्ट विभेद करना आवश्यक है। अभिक्षमता किसी व्यक्ति की किसी कार्य को निष्पादित करने की सक्षमता को बताती है जबकि उपलब्धि प्रदर्शित करती है कि व्यक्ति द्वारा कार्य किस सीमा तक निष्पादित किया गया है। अभिक्षमता किसी व्यक्ति की किसी भी तरह के प्रशिक्षण से पूर्व किसी कार्य को निष्पादित करने की योग्यता को बताती है जिससे कि अनुवर्ती निष्पादन या अनुभव का पूर्वानुमान किया जा सके जबकि उपलब्धि प्रशिक्षण के उपरान्त व्यक्ति की स्थिति को सूचित करती है। इसके अतिरिक्त उपलब्धि सामान्यतया विद्यालय संबंधी अनुभवों से संबंधित माना जाता है जबकि अभिक्षमता, दैनिक जीवन के सामान्य अनुभवों से संबंधित होती है। उपलब्धि परीक्षण सामान्यतया किसी व्यक्ति के वर्तमान ज्ञान का मापन करने के लिये निर्दिष्ट होते हैं।

अभिक्षमता परीक्षण बहुधा भविष्य की सफलता हेतु अनुमान लगाने के लिये प्रयोग में लाये जाते हैं। उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग सामान्यतया शैक्षिक अभिक्षमताओं के आकलन हेतु किया जाता है जबकि अभिक्षमता परीक्षणों का प्रयोग पेशा संबंधी या कैरियर संबंधी अभिक्षमताओं के आकलन हेतु किया जाता है। यद्यपि ऐसे विभेद किए जाते हैं किन्तु कभी-कभी उपलब्धि परीक्षण अभिक्षमता के सूचक के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरणार्थ— प्री-मेडिकल कोर्सों की उपलब्धि परीक्षण मेडिकल क्षेत्र में कार्य निष्पादन हेतु पूर्वानुमान दे सकते हैं। यदि एक विद्यार्थी ने विद्यालय में गणित के परीक्षण में उच्च अंक प्राप्त किये हैं तब ये अंक गणित में अभिक्षमता को प्रदर्शित करने में प्रयोग में लाये जाते हैं। कभी-कभी, फिर भी यह गलत रास्ते पर ले जा सकते हैं, यदि किसी कारण से कोई विद्यार्थी किसी कार्य में अपेक्षित निष्पादन नहीं कर पा रहा है तब भी वह उस कार्य हेतु अभिक्षमता रख सकता है, अस्तु उपलब्धि परीक्षण अभिक्षमता को विश्वसनीय तरीके से नहीं भी माप सकते हैं। यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि निष्पादन की निरन्तरता ध्यान देने योग्य एक महत्वपूर्ण घटक है।

यदि किसी विषय या क्षेत्र विशेष में निष्पादन में निरन्तरता बनाये रखी जाए तो उपलब्धि परीक्षण शैक्षिक क्षेत्रों में अभिक्षमता के सूचक के रूप में सहयोग कर सकते हैं।

1.3.1 अभिक्षमता परीक्षणों के प्रकार

अभिक्षमता परीक्षण भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं। इनमें से कुछ एकल अभिक्षमता परीक्षण होते हैं, जैसे— यांत्रिक अभिक्षमता परीक्षण, संगीत संबंधी अभिक्षमता और भी बहुत से अभिक्षमता परीक्षण। ये परीक्षण किसी पेशे यथा लिपिक, अध्यापक, संगीत इत्यादि के लिए आवश्यक योग्यताओं के समूह को स्वयं में समाहित करते हैं। दूसरे तरह का अभिक्षमता परीक्षण कार्य प्रतिदर्श अभिक्षमता परीक्षण है। इस परीक्षण की माँग होती है कि व्यक्ति या तो सभी कार्यों का निष्पादन करे या फिर किसी पेशे में विद्यमान दशाओं के अन्तर्गत दिये गए कार्य के भाग का निष्पादन करें। आटोमोबाइल यन्त्रकार के पेशे के लिये आवश्यक कार्य निष्पादन अभिक्षमता परीक्षण का अर्थ दोषरहित कार्बुरेटर की मरम्मत करना है। इसके अतिरिक्त अभिक्षमता परीक्षण हेतु विशिष्ट परीक्षण बैट्रियाँ भी होती हैं। एक प्रचलित विशिष्ट अभिक्षमता परीक्षण (Differential Aptitude Test, DAT) बिनेट्, सीशोर एवं बैसमैन (1984) बैट्री है जो अपने अन्दर आठ उप परीक्षणों यथा मौखिक तार्किकता, आंकिक तार्किकता, अमूर्त तार्किकता, यांत्रिक तार्किकता, स्थायिक तार्किकता, लिपिकीय गति व शुद्धता, भाषा प्रयोग, वर्तनी, व्याकरण को धारण करती है। विभिन्न पेशों में सफलता के लिये इस तरह की योग्यताओं का समुच्चय आवश्यक होता है। इस तरह की परीक्षण बैट्रियाँ विद्यार्थी की विशिष्ट योग्यताओं के तुलनात्मक बिम्ब की विस्तृत सूचना दे सकती हैं। एक सम्पूर्ण बैट्री का प्रयोग समय की काफी खपत कर सकता है किन्तु हम चयनित उप परीक्षणों का प्रयोग कर सकते हैं। उदाहरणार्थ— एक विद्यार्थी जो यह पता लगाने का प्रयास कर रहा है कि क्या उसके पास अभियांत्रिकी में जाने के लिये अपेक्षित अभिक्षमता है या नहीं उसे लिपिकीयगत, भाषायी प्रयोग, अभिक्षमता, व्याकरण या मौखिक तार्किकता परीक्षणों को लेने की कोई आवश्यकता नहीं है किन्तु उसे आंकिक तार्किकता, अमूर्त तार्किकता एवं स्थानिक तार्किकता के परीक्षणों को लेना आवश्यक होगा। अधिकतर परीक्षण बैट्रियाँ जो कि विद्यालय स्तर पर अभिक्षमता के आकलन हेतु उपलब्ध हैं, किसी पेशे के लिये आवश्यक अभिक्षमता के सीधे आकलन के बजाय विभिन्न पेशों के लिये आवश्यक योग्यताओं को धारण करने वाली परीक्षण बैट्रियों के रूप में हैं।

1.3.2 अभिक्षमता परीक्षण आंकड़ों की व्याख्या

आप पढ़ चुके हैं कि विभिन्न प्रकार के अभिक्षमता परीक्षण शैक्षिक एवं कॅरियर संबंधी परामर्श प्रदान करने के लिये उपयोगी होते हैं। ये परीक्षण लोगों के विभिन्न कार्यों/पेशों के क्षेत्रों के संबंध में अपनी अभिक्षमता का पता लगाने में मदद करने में उपयोगी हो सकते हैं, छिपी हुई योग्यताओं की खोज पाने में मददगार हो सकते हैं और कॅरियर विकल्पों/चुनावों के प्रयास को संकुचित कर सकते हैं। फिर भी, केवल अभिक्षमता और अभिक्षमता मापन के परीक्षणों का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं है। एक परामर्शदाता के लिये यह आवश्यक है कि वह किसी विशेष पेशे या संबंधित पेशों के समूह के लिए आवश्यक अभिक्षमता का आधार होने वाली योग्यताओं के पुंज की समझ रखे। आइए, हम लिपिकीय अभिक्षमता का एक उदाहरण लें।

अधिकतर लिपिकीय पदों के लिये योग्यता के एक व्यापक समूह की आवश्यकता होती है। ये योग्यताएँ संख्याओं एवं प्रतीकों के साथ तेजी व शुद्धता के साथ कार्य करने के लिये भी आवश्यक होती हैं। शीघ्र अवलोकन का गुण किसी भी तरह की लिपिकीय योग्यता के लिये आवश्यक होता है। इसका मापन अवबोधात्मक परीक्षणों द्वारा किया जाता है। लिपिकों को वर्तनी, तीव्र संगठन, श्रुतलेखन, टंकण इत्यादि कौशलों की आवश्यकता भी होती है। कोई भी परीक्षण इन सभी योग्यताओं का मापन नहीं करता है किन्तु लिपिकीय अभिक्षमता के आकलन हेतु

कुछ विशिष्ट परीक्षणों का निर्माण किया गया है। इसके अतिरिक्त परामर्शदाताओं के लिये यह भी आवश्यक है कि वे कार्य के संसार के बारे में सूचनाएं रखें, विभिन्न पेशों एवं उन पेशों में सफलता हेतु अन्तर्निहित आवश्यक योग्यताओं की जानकारी रखें। इस पहलू को मार्गदर्शन एवं परामर्श में कैरियर सूचना संबंधी पाँचवें मॉड्यूल में पहले ही दिया जा चुका है। न केवल इसे, बल्कि अभिक्षमता परीक्षणों के अतिरिक्त आकलन की प्रक्रिया के बारे में भी जानकारी रखना समान रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि यह व्यक्ति के सशक्त क्षेत्रों के बारे में सूचना दे सकती हैं। ये विभिन्न प्रकार के स्रोतों और सूचनाओं जैसे कि पूर्व उपलब्धि शैक्षिक अभिलेख, अभिरुचि और आराम के समय की गतिविधियों, गैर शैक्षिक निष्पत्तियों, माता-पिता की आख्या, अध्यापकों, स्वयं, इत्यादि को धारण करती हैं। परीक्षणों एवं प्रक्रिया की जानकारी के अतिरिक्त परामर्शदाताओं के लिये यह भी महत्वपूर्ण है कि वे परीक्षण प्राप्तियों के चयन, प्रयोग, और संप्रेषण के लिये आवश्यक कौशलों को भी धारण करें। इस पर भी पूर्व में यूनिट- 2 मनोवैज्ञानिक परीक्षणों के प्रयोग में चर्चा की जा चुकी है।

1.3.3 अभिक्षमता परीक्षण आंकड़ों के प्रयोग में सावधानियाँ

परामर्श का प्राथमिक उद्देश्य विद्यार्थियों/ सेवार्थियों में विभिन्न पेशों के लिए आवश्यक जरूरतों के संदर्भ में अपने व्यक्तिगत अभिलक्षणों की समझ विकसित करने में मदद करना है। यह एक जटिल कार्य है जो कि परीक्षण एवं गैर परीक्षण आंकड़ों तथा अन्य पृष्ठभूमि सूचनाओं पर निर्भर करता है। एक प्रशिक्षित परामर्शदाता जानता है कि परीक्षण का प्रयोग कब व कैसे किया जाय, गैर परीक्षण आंकड़ों का प्रयोग कब व कैसे किया जाय तथा अभिक्षमता परीक्षण आंकड़ों की व्याख्या व संप्रेषण कैसे किया जाय। आकलन प्रायोगिकी में आप इसके बारे में और अधिक जानेंगे।

यह महत्वपूर्ण है कि परामर्शदाता सेवार्थी/ विद्यार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए परीक्षण के अंक अपने आप में सम्पूर्ण सूचना उपलब्ध नहीं कराते हैं और किसी व्यक्ति की अभिक्षमताओं का विभिन्न पेशों के लिये मिलान करना भी एक उचित विधि नहीं है। यदि अभिक्षमता परीक्षण आंकड़ों का उपयोग करना आवश्यक ही हो तो इनका प्रयोग पूर्व उपलब्धि आंकड़ों, वर्तमान अभिरुचियों, आराम के समय की गतिविधियों और कार्य की आदतों के साथ किया जाना चाहिए ताकि विद्यार्थियों को विभिन्न पेशों संबंधी सम्भावनाओं के प्रति निर्देशित किया जा सके। सामान्य मानसिक योग्यता, व्यक्तित्व एवं स्वभाव के घटक भी कैरियर विकल्पों के चुनाव व उसमें समायोजन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

अभिक्षमता परीक्षण किसी व्यक्ति की निश्चित योग्यताओं को प्रतिदर्शित करता है और उसे यह पता लगाने में मदद करता है कि वह अब क्या कर सकता है और आगे इसे कितनी अच्छी तरह से कर सकता है। वर्तमान निष्पादन के आधार पर व्यक्ति की भविष्य में उपलब्धि के आकलन का अनुमान सम्भावनाओं के मर्दों में लगाया जाता है।

यह भी ध्यान में रखा जाना चाहिए कि अभिक्षमता परीक्षण के अंक कैरियर नियोजन में मदद करने हेतु केवल मार्गदर्शन या सुझाव का संकेत देते हैं और ये अंक व्यक्तियों का उपयुक्त पाठ्यक्रमों या अध्ययनों, एवं पेशे से स्वतः सुमेल नहीं करते हैं। ऐसे परीक्षण अकेले पर्याप्त नहीं होते हैं क्योंकि, यद्यपि किसी व्यक्ति की अभिक्षमता किसी क्षेत्र विशेष में उसके निष्पादन या उसकी उपलब्धि की सीमा को निर्धारित करती है, किन्तु व्यक्ति की उपलब्धि को प्रभावित करने वाले अन्य घटक भी होते हैं। उदाहरणार्थ- व्यक्ति किसी क्षेत्र, जिसमें कि उसकी

अभिक्षमता है, में ज्ञान व कौशलों को अर्जित करने में अवश्य ही अभिप्रेरित होना चाहिए। अतः घटक जैसे कि कार्य करने की इच्छा, कठिन परिश्रम, जो कि किसी व्यक्ति के किसी कैरियर में सफलता में योगदान देते हैं, अभिक्षमता परीक्षणों द्वारा नहीं मापे जाते हैं।

गतिविधि – 1

किसी भी पाँच पेशों की सूची बनाइए, प्रत्येक पेशे में, सफलता के लिये आवश्यक योग्यताओं, अभिक्षमताओं के समुच्चय को लिखें। न्यायसंगत कीजिये कि ऐसी योग्यताएं/अभिक्षमताएं क्यों आवश्यक हैं। आवश्यक अभिक्षमताओं की पहचान करने से संबंधित साहित्य या कैरियर सूचनाओं के स्रोतों का पता लगाइए।

1.4 शैक्षिक उपलब्धि

उपलब्धि से आशय है कि कोई व्यक्ति अपने अध्ययन/क्रियाकलाप प्रभाव के क्षेत्र में सफलतापूर्वक क्या निष्पादन करता है। विद्यार्थियों से सन्दर्भित दशा में, इसका सम्प्रत्यय प्रदत्त शैक्षिक सामग्री का सफलतापूर्वक सीखने से हो सकता है। ऐसे सीखने को प्रायः अध्यापकों या दूसरों के सम्मुख या तो मौखिक प्रस्तुतीकरण के द्वारा या फिर लिखित परीक्षा द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। यह दिये गये कार्य में किये गये प्रयास, योग्यता एवं धैर्य पर आधारित होता है। उदाहरणार्थ— जब आप यह नोट करते हैं कि चेरी ने गणित में 89% अंग्रेजी भाषा में 65% और भौतिकी में 95% अंक प्राप्त किये हैं तो आप उसकी भाषा की तुलना में विज्ञान में उच्च उपलब्धि के प्रति अवगत हो जाते हैं। विद्यार्थियों को किसी विषय विशेष में अपनी उपलब्धियों, सामर्थ्यों एवं कमजोरियों के बारे में सूचनाओं की आवश्यकता होती है। यह सूचना उपलब्धि परीक्षणों, मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों तथा अध्यापकों द्वारा निर्मित परीक्षणों के द्वारा एकत्रित की जाती है।

एक उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थी द्वारा किसी सत्र विशेष में प्राप्त ज्ञान व कौशलों, जो कि प्रायः कक्षा शिक्षण या प्रशिक्षण के उपरान्त प्राप्त किये जाते हैं, का मापन करता है। एक शैक्षिक व्यवस्था में उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग प्रायः अनुदेशन के स्तर, जिसके लिये कि विद्यार्थी तैयार होता है, का निर्धारण करने, शैक्षिक शक्तियों एवं कमजोरियों को सूचित करने और समूह/कक्षा में विद्यार्थी की सापेक्ष स्थिति को सूचित करने में किया जाता है। उपलब्धि परीक्षण आंकड़े अन्य आंकड़ों के साथ संयोजित परामर्शदाताओं को विद्यार्थियों के भविष्य के शैक्षिक कार्यक्रमों की योजना बनाने में मदद करने में उपयोग में लाये जाते हैं।

1.4.1 उपलब्धि परीक्षणों के प्रकार

उपलब्धि परीक्षण भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, इनमें से प्रत्येक एक अलग उद्देश्य हेतु कार्य करता है तथा विद्यार्थियों की शैक्षिक दक्षता पर विभिन्न सूचनाएं उपलब्ध कराता है। ये परीक्षण अलग अलग तरह से वर्गीकृत किये गये हैं और इनकी समझ परामर्शदाता को अपने कार्यों को समझने में मदद करती है। यू एस ए की शैक्षिक परीक्षण सेवाएं उपलब्धि परीक्षणों को तीन प्रकार से वर्गीकृत करती हैं (1) उपलब्धि परीक्षण कोर्स के अंत में विद्यार्थी ने क्या सीखा है, इसका मापन करने के लिये इस परीक्षण का प्रयोग किया जाता है, (2) सामान्य उपलब्धि परीक्षण— इसका प्रयोग ज्ञान के वृहत क्षेत्र में विद्यार्थियों के सीखने को पूरा करने में किया जाता है, (3) विद्यार्थियों ने क्या सीखा है और सीखे हुए कौशलों को नई समस्याओं को हल करने में प्रयोग करने की योग्यता का माप करने वाले परीक्षण।

उपलब्धि परीक्षणों को रचनात्मक (formative) तथा संकलनात्मक (summative) मापनों के रूप में वर्गीकृत किया जाता है। अनुदेशन के पूर्व नए अनुदेशन के दौरान ज्ञान व कौशलों में हुई प्रगति को मापने के लिये जिन उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है उन्हें संकलनात्मक परीक्षणों द्वारा प्रदर्शित किया जाता है। अनुदेशन के परिणामों का आकलन करने हेतु कोर्स के अनुदेशन के अंत में जिन उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है उन्हें संकलनात्मक माप कहते हैं।

तत्परता वाले या पूर्वानुमानिक परीक्षणों का प्रयोग इस बात का पूर्वानुमान लगाने के लिये किया जाता है कि प्रशिक्षण से व्यक्ति की किस सीमा तक लाभान्वित होने की अपेक्षा है। इनका प्रयोग प्रायः पढ़ना, लिखना व संख्याओं का संगठन सीखने में बच्चे की योग्यता का पता लगाने हेतु किया जाता है। इन मापनों का प्रयोग प्रायः प्रशासकों, अध्यापकों तथा विद्यालय के कर्मचारियों द्वारा बच्चे को किण्डरगार्डन या प्रथम ग्रेड प्रदान करने के बारे में विद्यालय में प्रवेश स्तरीय निर्णय लेने में किया जाता है।

नैदानिक उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थी के विभिन्न विषयों में प्रदर्शन/ निष्पादन की सूचना उपलब्ध कराते हैं और पढ़ने, गणितीय एवं भाषायी प्रयोग में उनकी सशक्तता व कमजोरी को प्रदर्शित करते हैं।

उपलब्धि परीक्षण या तो कसौटी सन्दर्भित परीक्षण (Criterion References Test) हो सकते हैं या फिर मानदण्ड सन्दर्भित परीक्षण (Norm Referenced Test)।

दोनों ही परीक्षण अपने निर्दिष्ट उद्देश्यों, विषयवस्तु के चयन के तरीकों और स्कोरिंग की प्रक्रिया जो कि परीक्षण के परिणामों की व्याख्या करने के तरीकों को परिभाषित करती है, में भिन्नता रखते हैं। NRTs का निर्माण विद्यार्थियों के मध्य उपलब्धियों के अन्तर पर विशेष बल देने के लिये और उच्च अंक प्राप्त करने वालों से लेकर निम्न अंक प्राप्त करने वालों तक के अवधि क्रम में विद्यार्थियों को एक कोटि क्रम प्रदान करने के लिये किया जाता है। इस तरह के परीक्षणों का उपयोग अध्यापकों/ परामर्शदाताओं को उपचारात्मक कार्यक्रमों या प्रतिभाशाली बच्चों के कार्यक्रमों के लिये विद्यार्थियों का वर्गीकरण करने में मदद करने में किया जाता है। कसौटी सन्दर्भित परीक्षण, परीक्षण में शामिल होने वाले विद्यार्थियों की क्षमता का निर्धारण करते हैं अर्थात् वे क्या जानते हैं और क्या कर सकते हैं न कि अन्य की तुलना में। ये परीक्षण विद्यालय परिचर्चा में सम्मिलित शैक्षिक उद्देश्यों या परिणामों के विनिर्दिष्ट समुच्चय में पूर्व निर्धारित प्रदर्शन/ निष्पादन स्तर के सापेक्ष विद्यार्थियों के निष्पादन / प्रदर्शन का प्रतिवेदन (report) देते हैं।

एक उपलब्धि परीक्षण का निर्माण यह मापने के लिये किया जाता है कि कोई व्यक्ति किसी प्रकरण/प्रसंग या क्षेत्र जैसे कि गणित, भूगोल या विज्ञान के बारे में कितना अधिक जानता है। उपलब्धि परीक्षण मानकीकृत परीक्षण हो सकते हैं या फिर अध्यापक द्वारा निर्मित। आप इस यूनिट में बाद में इनके बारे में पढ़ेंगे।

उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों का प्रयोग

मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग विद्यार्थियों के प्रोन्नयन, वर्गीकरण, उपचार या मूल्यांकन के लिये किया जाता है। परामर्शदाता उपलब्धि परीक्षणों का प्रयोग निम्न के लिये भी कर सकते हैं।

- सेवार्थी की स्व-समझ का प्रोन्नयन करने हेतु विद्यालय के किसी विषय विशेष में किसी सेवार्थी के सशक्त पक्ष या कमजोरी को एक उपलब्धि परीक्षण के परिणामों द्वारा प्रकट किया जा सकता है। ये परिणाम सेवार्थी के लिये यह सम्भव बनाते हैं कि वह अपने व्यक्तिगत अभिलक्षणों के प्रकाश में अपने प्रदर्शन/निष्पादन पर चिंतन करे।
- सेवार्थियों के निर्णय लेने में मदद करने हेतु विद्यार्थी प्रायः 'क्या मुझे विज्ञान का अध्ययन करना चाहिए?' क्या मैं एक वकील या क्या मैं अभियान्त्रिकी ले सकूंगा? तरह तरह के प्रश्न परामर्शदाताओं से पूछते हैं।

इस तरह के प्रश्नों को उत्तर आंशिक रूप से उनके उपलब्धि परीक्षण के अंकों से दिए जा सकते हैं। कैरियर के उचित विकल्पों पर चर्चा प्रारम्भ करवाने हेतु एक परामर्शदाता उपलब्धि परीक्षण के अंकों का प्रयोग कर सकता है।

• स्वाध्याय को प्रोत्साहित करने हेतु

चूंकि उपलब्धि परीक्षण के आकड़े विद्यार्थी/सेवार्थी को अपने स्वयं के बारे में जानने में मदद करते हैं, इसलिए ये परीक्षण स्वाध्याय को प्रोत्साहित करने हेतु उपयोग में लाये जा सकते हैं। उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों के जरिये विद्यार्थी विभिन्न विषयों में अपने सशक्त पक्षों एवं कमजोरियों के प्रति एक अन्तर्दृष्टि प्राप्त कर सकता है जिससे वह आवश्यक प्रयास करने हेतु प्रोत्साहित रहता है।

• निदान में सहायता करने हेतु

परामर्शदाता विद्यार्थियों द्वारा विभिन्न विषय क्षेत्रों में सामना की गयी समस्याओं के निदान हेतु उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों का उपयोग कर सकते हैं। तदनुसार सुधारात्मक उपचारों की योजना बनायी जा सकती है और उन्हें क्रियान्वित किया जा सकता है।

- सामान्यतया अपनी योग्यता को कम स्तर का कहे जाने की तुलना में उपलब्धि परीक्षण के प्रतिकूल अंकों की स्वीकार्यता सेवार्थी द्वारा अधिक होती है। यह परीक्षण में प्रतिभाग करने के सकारात्मक प्रवृत्ति को विकसित करने में सहयोग करता है।

1.4.2 मानकीकृत तथा अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षण

एक उपलब्धि परीक्षण इस बात का मापन है कि विद्यार्थी ने क्या सीख लिया है। उपलब्धि परीक्षण वृहत समूह पर प्रयुक्त मानकीकृत परीक्षण हो सकते हैं या इनका निर्माण विशिष्ट विषयवस्तु पर आधारित विशेष समूहों के लिये किया जाता है। राष्ट्रीय एवं प्रादेशिक स्तर पर प्रयोग किये जाने वाले मानकीकृत उपलब्धि परीक्षणों का एक व्यापक संग्रह है और ये शैक्षिक परिक्षेत्रों से संबंधित होते हैं। बुनियादी तौर पर ये परीक्षण राष्ट्रीय तथा प्रादेशिक/संस्थानिक स्तर पर विशिष्ट प्रतिदर्शों के सापेक्ष विभिन्न विषयों में विद्यार्थी की स्थिति को इंगित करते हैं। प्रत्येक कक्षा व विद्यालय में अनौपचारिक परीक्षण एवं परीक्षाएँ उपलब्धि परीक्षणों की तरह अध्यापकों द्वारा विशिष्ट विषयों में संचालित अर्हता प्राप्त कर सकती हैं। तालिका 1.1 मानकीकृत एवं अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षणों के मध्य तुलना को प्रदर्शित करती है।

तालिका 1.1 मानकीकृत एवं अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षणों की तुलना

आयाम	मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण	अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षण
1. अधिगम परिणाम एवं मापी गयी विषय वस्तु	अधिकतर विद्यालयों के लिये मापे गये परिणाम एवं विषयवस्तु एक समान होते हैं। ये बुनियादी कौशलों तथा जटिल परिणामों का परीक्षण करते हैं, ये स्थानीय पाठ्यचर्या पर विचार/चिन्तन नहीं करते हैं।	ये स्थानीय पाठ्यचर्या की विषयवस्तु व परिणामों के प्रति भली भाँति अनुकूलित हो जाते हैं। नई वस्तुओं एवं परिवर्तित विधियों से मापन के प्रति अनुकूलन इन परीक्षणों के लचीलेपन के कारण सम्भव होता है। जटिल अधिगम परिणामों को ये उपेक्षित करते हैं।
2. परीक्षण मद की/के विशेषता /गुण	इन परीक्षणों की विश्वसनीयता उच्च होती है	गुणवत्ता तब तक अज्ञात रहती है जब तक कि कोई इन परीक्षण मदों के विश्लेषण का उपयोग न कर ले। अध्यापक के सीमित कौशलों व सीमित समय के कारण ये सामान्यतया निम्न गुणवत्ता के होते हैं।
3. विश्वसनीयता	जो कि 0.80 से 0.95 के मध्य होती है।	इन परीक्षणों की विश्वसनीयता अज्ञात होती है किन्तु यदि सावधानी पूर्वक इनका निर्माण किया गया हो तो इनकी विश्वसनीयता उच्च हो सकती है।
4. परीक्षण करना एवं अंकन	मानकीकृत विधियाँ, विशिष्ट अनुदेशनों का प्रावधान	एक समान विधि किन्तु अनुदेशन में लचीलापन।
5. अंकों की व्याख्या करना	सम्भावित मानदण्ड आधारित समूहों के साथ तुलना। व्याख्या एवं प्रयोग में परीक्षण मैन्युअल मदद करते हैं।	तुलना एवं व्याख्या, स्थानीय विद्यालयी स्थितियों तक सीमित

दो प्रकार के उपलब्धि परीक्षणों की तुलना से यह प्रदर्शित होता है कि प्रत्येक प्रकार का परीक्षण एक भिन्न उद्देश्य के लिये प्रयोग में लाया जा सकता है, मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण विस्तृत विषय क्षेत्रों को अपने अंतर्गत लेते हैं, इसलिए इनके संचालन/प्रयोग एवं प्रयोग उपरान्त आंकने हेतु एक अधिक दृढ़तापूर्वक नियंत्रित प्रक्रिया की आवश्यकता होती है और इसलिए अंकों के मूल्यांकन हेतु मानकों की आवश्यकता होती है। यह उपलब्धि परीक्षणों को निम्न उद्देश्यों के लिये महत्वपूर्ण बनाता है —

- मूलभूत कौशलों में एवं उन शैक्षिक परिणामों में, जो अध्ययन के अनेकों कार्यों में समान होते हैं, विद्यार्थी के सामान्य शैक्षिक विकास का मूल्यांकन करने में।
- शैक्षणिक वर्ष में किसी कोर्स में विद्यार्थी की प्रगति का मूल्यांकन करने में।
- अनुदेशन हेतु विद्यार्थियों के समूह बनाने में।
- किसी विषय या कौशल के क्षेत्र में विद्यार्थी की सापेक्ष सबलता व कमजोरी का निर्धारण करने में।
- विद्यार्थी की उपलब्धि के सामान्य स्तर का उसकी शैक्षिक अभिक्षमता के साथ तुलना करने में।

दोनों प्रकार के उपलब्धि परीक्षण अर्थात् मानकीकृत परीक्षण एवं अध्यापक निर्मित परीक्षण पढ़ाये गये विषय क्षेत्रों व भाषाओं पर आधारित होते हैं और वैध माने जाते हैं। इनका प्रयोग किसी निश्चित प्रोग्राम (कोर्स) में प्रवेश के लिये आवश्यक चीजों हेतु सम्पूर्ण दक्षता के स्तर का आकलन करने में या फिर किसी विषय विशेष में दक्षता का आकलन करने में किया जाता है। अनौपचारिक कक्षा उपलब्धि परीक्षण विद्यार्थियों के एक समूह के निष्पादन का चयन करने हेतु उपयुक्त होते हैं। यह लचीले होते हैं और विद्यार्थियों के स्थानीय पाठ्यचर्या में परीक्षण को सम्मिलित करते हैं। दो प्रकार के परीक्षणों को एक दूसरे के पूरक के रूप में प्रयोग किया जाता है।

1.4.3 उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों के प्रयोग में सावधानियाँ

उपलब्धि परीक्षण आंकड़े उपयोग करने हेतु अत्यन्त साधारण लग सकते हैं किन्तु एक परामर्शदाता के रूप में आपके लिये यह जानना महत्वपूर्ण है कि केवल उपलब्धि परीक्षण आंकड़े सेवार्थी के बारे में सम्पूर्ण जानकारी उपलब्ध नहीं कराते हैं। विद्यार्थी की उपलब्धि का एक सम्पूर्ण व समग्र परिदृश्य प्राप्त करने हेतु परामर्शदाताओं को चाहिए कि वे विभिन्न स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का उपयोग करें। अब आप उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों के प्रयोग में आवश्यक कुछ सावधानियों के बारे में पढ़ेंगे।

- उपलब्धि परीक्षण के अंक बिल्कुल भी गारन्टी नहीं देते हैं कि मापा गया प्रदर्शन/निष्पादन एक प्रतीकात्मक/आदर्शस्वरूप प्रदर्शन/निष्पादन है, एक परामर्शदाता के रूप में यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जो विद्यार्थी किसी उपलब्धि परीक्षण हेतु कम प्रयास/कम मेहनत करते हैं या फिर उपलब्धि परीक्षण के वक्त आदतन भावनात्मक समस्याओं से प्रभावित हो जाते हैं, वे उपलब्धि परीक्षण में औसत से नीचे प्रदर्शन/निष्पादन कर सकते हैं। इसलिये यह निष्कर्ष नहीं निकाला जाना चाहिए कि उसका प्रदर्शन/निष्पादन सदैव ही निम्न स्तर का होगा। परामर्शदाता को उपलब्धि परीक्षण अंकों की व्याख्या व्यक्ति की आदत संबंधी रीतियों या प्रतिक्रियाओं के साथ-साथ समय समय पर विद्यालय में प्राप्त अंकों के रिकार्ड के मर्दों में करनी चाहिए। परामर्श हेतु ये अधिक उपयोगी आंकड़े उपलब्ध कराते हैं।
- उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों की अध्यापक द्वारा प्रदत्त ग्रेडों या अंकों के साथ परिपूरित करें, ये विद्यार्थी के प्रदर्शन/निष्पादन के महत्वपूर्ण सूचक होते हैं। यद्यपि अध्यापकों द्वारा प्रदत्त अंकों की अपनी सीमाएँ हैं फिर भी परामर्शदाताओं के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वे उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों की व्याख्या के समय इन अंकों को विचार में लें।

- किसी व्यक्ति की सम्प्राप्ति एवं प्रदर्शन/निष्पादन में पैटर्न व झुकाव की खोज करना। परामर्शदाताओं को चाहिए कि वे किसी पैटर्न का निर्माण करने में उपलब्धि परीक्षण के आकड़ों, प्राप्त ग्रेडों, अध्यापक द्वारा प्रदत्त अंकों का समेकन करें और आकड़ों के मध्य संबंध का अध्ययन करें।

मूल्य निरूपण सूचनाओं को पैटर्न पर आधारित होना चाहिए बजाय इसके कि उसका निर्धारण एक अकेले आकड़े से किया जाय, जैसा कि आपने मार्गदर्शन एवं परामर्श में आकलन एवं मूल्य निर्धारण संबंधी यूनिट-1 में पढ़ा है।

आप पढ़ चुके हैं कि अभिरुचि का आकलन यह प्रदर्शित करता है कि कोई व्यक्ति क्या करना पसन्द करता है और उसमें आनन्द लेता है, जबकि उपलब्धि बताती है कि वह कुछ अनुदेशन प्राप्त करने के उपरान्त किस सीमा/अंश तक सफलतापूर्वक सीख चुका है। प्रशिक्षण/अनुदेशन से पूर्व आपके लिये यह भी जानना महत्वपूर्ण है कि विद्यार्थियों की सीखने की क्षमता क्या है जो कि वस्तुतः अभिक्षमता का आकलन है। अभिक्षमता आकलन के बारे में आप अगले प्रखण्ड में पढ़ेंगे।

आत्म निरीक्षण अभ्यास-2

रिक्त स्थानों में निम्न में से उचित विकल्प भरें।

क. पूर्वानुमानिक ख. मानदण्ड संबंधी ग. संकलनात्मक

घ. कसौटी संबंधी

1. परीक्षण, परीक्षार्थी की शक्ति का निर्धारण करते हैं।
2. परीक्षण, अनुदेशन के परिणामों का आकलन करते हैं।
3. परीक्षणों से यह अनुमान लगाया जाता है कोई व्यक्ति प्रशिक्षण से कितनी अच्छी तरह लाभान्वित होगा।

1.5 परामर्श हेतु अभिरुचि, अभिक्षमता एवं उपलब्धि के आकड़ों का समेकन

किसी क्रियाकलाप में अभिरुचि का होना यह नहीं है कि उस क्षेत्र में व्यक्ति की अभिक्षमता या उपलब्धि भी हो। यद्यपि इन तीनों संकल्पनाओं में एक निश्चित मात्रा में अतिव्यापन है किन्तु ये तीनों संकल्पनाएं भिन्न हैं और इसीलिए परामर्श की दशाओं में एवं आकलन करने में इन तीनों के मध्य सावधानीपूर्वक विभेदीकरण किये जाने की आवश्यकता होती है।

किसी विद्यार्थी की अभिरुचि, अभिक्षमता एवं उपलब्धि की जानकारी परामर्शदाता को उस विद्यार्थी को कोर्स एवं कैरियर के चयन करने हेतु एक और अच्छी सलाह देने में सहायता करती है। चूँकि अभिरुचि खोज सूचियों की मदद मूल्यांकन न करने के अर्थ में होती हैं इसलिए वे विद्यार्थियों को भयभीत करने वाले नहीं होती हैं। इसीलिए इन अभिरुचि खोज सूचियों का प्रयोग परामर्श की प्रक्रिया के लिये अच्छी शुरुआत होती है। चूँकि अभिरुचियाँ सेवार्थी की पसन्द को बताती हैं न कि उसके सामर्थ्य को इसलिए अभिरुचि खोज सूचियों के परिणामों को व्यक्ति

की रुचियों, अभिक्षमताओं आदि के साथ परिपूरित किया जाना चाहिए। अभिरुचि खोज सूचियाँ स्व अन्वेषण में अर्थात् स्वयं के बारे में जानने में सहायता करती हैं और इन सूचनाओं से यह संबंध स्थापित कर सकते हैं कि कोई व्यक्ति क्या कर रहा है और कैसे कर रहा है। उपलब्धि परीक्षणों का निर्माण यह मापने के लिये किया जाता है कि कोई व्यक्ति पहले से ही कितना प्राप्त कर चुका है या सीख चुका है और इसलिए इनकी प्रासांगिकता व्यक्ति के लिये शैक्षिक निर्णय लेने हेतु तथा यह जानने हेतु है कि अपने जैसे लोगों के समूह में स्थानीय स्तर, जिला स्तर, राज्य स्तर व राष्ट्रीय स्तर में वह कहाँ खड़ा है और कहाँ तक जा सकता है। विद्यार्थियों को वैयक्तिक व शैक्षिक निर्णयों के बारे में सूचना देने में एक परामर्शदाता उपलब्धि के विभिन्न अभिलक्षणों एवं विभिन्न परीक्षणों (अध्यापक द्वारा निर्मित परीक्षण, मानकीकृत परीक्षण, कसौटी संदर्भित व मानदण्ड संदर्भित परीक्षण) की खूबियों व खामियों की जानकारी का प्रयोग कर सकता है। उपलब्धियों का परीक्षण दिनों दिन और अधिक महत्वपूर्ण होता जा रहा है क्योंकि यह सिद्ध करने की जिम्मेदारी हो रही है कि विद्यार्थी सीख रहे हैं। किन्तु मार्गदर्शन हेतु सामर्थ्य को प्रदर्शित करने के लिये अभिक्षमता एक अच्छी माप हो सकती है।

विद्यार्थियों को सम्भावित सफलता प्राप्ति के क्षेत्रों तथा सही कैरियर का पता लगाने में मदद करने में एक परामर्शदाता के रूप में अभिक्षमता के बारे में जानकारी रखना आपके लिये महत्वपूर्ण है। संस्थानिक एवं वैयक्तिक निर्णयों में अभिक्षमता का आकलन उपयोगी पाया गया है। (संस्थानिक निर्णयों के बारे में इस वाक्य की व्याख्या करें)। जैसा कि आप पढ़ चुके हैं कि विभिन्न अभिक्षमताओं के आकलन हेतु आप अलग-अलग परीक्षणों का प्रयोग कर सकते हैं या सामान्य एवं विशिष्ट अभिक्षमताओं को जानने के लिये परीक्षण बैटरी का प्रयोग किया जा सकता है। अभिक्षमताओं की जानकारी आपको विद्यार्थियों की विशिष्ट अभिक्षमताओं के अंकों पर आधारित विकल्पों के साथ उनके लिये कैरियर योजना बनाने में सहायता करती है। उदाहरणार्थ, एक विद्यार्थी जो कि किन्हीं कारणों से प्राथमिक व माध्यमिक शिक्षा में कुछ नहीं सीख सका हो, संबंधित अध्ययनों व कैरियर में अच्छा करने की अभिक्षमता रख सकता है, विशेषकर अब जब वहाँ उसकी अभिरुचि हो, यद्यपि, उसकी शैक्षिक रूप से ग्राह्य क्षमता होनी चाहिए।

अभिरुचि परीक्षण में किसी विद्यार्थी के अंक यदि उसकी अभिरुचि को अभियांत्रिकी में प्रदर्शित करते हैं किन्तु उपलब्धि परीक्षण के उसके अंक यह प्रदर्शित करते हैं कि वह विज्ञान व गणित में अच्छा नहीं है तो उसे अभियांत्रिकी के क्षेत्र में प्रवेश न करने की सलाह दी जायेगी। इसी प्रकार अभिरुचि परीक्षण, उपलब्धि परीक्षण एवं अभिक्षमता परीक्षण तीनों में ही प्राप्त अंक एक ही चीज को इंगित करते हों तो एक परामर्शदाता के रूप में आप सेवार्थी से कह सकते हैं कि अभियांत्रिकी के क्षेत्र में प्रवेश करना एक उचित विकल्प हो सकता है। माना किसी विद्यार्थी की अभिरुचि परीक्षण के अंक अभियांत्रिकी के पैमाने में उच्च हैं और विधि के पैमाने में निम्न हैं किन्तु दोनों ही पैमानों में उसकी उपलब्धि एवं अभिक्षमता परीक्षण के अंक उच्च हैं तब उसे अभियांत्रिकी के क्षेत्र में जाने और साथ ही विधि को न लेने के संदर्भ में सावधानी पूर्वक विचार करना चाहिए।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि अभिरुचियों की माप तथा योग्यता की माप दो भिन्न भिन्न चीजें हैं। यदि किसी विद्यार्थी के सांख्यिकीय/गणितीय अभिरुचि पैमाने में या सामान्य लेखाशास्त्रीय अभिरुचि पैमाने में उच्च अंक हैं तो इसका यह तात्पर्य नहीं है कि वह लेखाशास्त्रीय तकनीकों को सीखने और उनमें प्रवीणता हासिल करने की आवश्यक बौद्धिक क्षमता भी रखेगा और एक अच्छा लेखाशास्त्री बनेगा। वह इस हेतु आवश्यक बौद्धिक योग्यता

रख भी सकता है और नहीं भी रख सकता है। ठीक इसी तरह इस कार्य हेतु उसकी अभिक्षमता के बारे में भी कुछ नहीं कहा जा सकता है। अभिरुचियों की माप एवं योग्यताओं की माप अलग-अलग तरह की सूचनाएं प्रदान करती हैं किन्तु ये दोनों एक दूसरे को परिपूरित करती हैं। किसी कार्य के लिये आवश्यक कौशलों को सीखने की योग्यता उस कार्य में सफलता या सन्तुष्टि प्राप्ति को परिलक्षित नहीं करती हैं। फिर भी अभिरुचि व योग्यता के मध्य एक संबंध होता है। किसी व्यक्ति की विभिन्न पेशों के चयन करने की उपयुक्तता का ठोस मूल्यांकन करने के लिये परामर्शदाता को दोनों तरह की सूचनाओं का अवश्य ही संकलन करना चाहिए।

आत्म निरीक्षण अभ्यास-3

बताइए कि निम्न कथन सही(सत्य) हैं या गलत (असत्य)।

1. जैसा कि अभिक्षमता किसी कैरियर के लिये आगे प्रशिक्षण प्रदान करने में मदद करती है, एक परामर्शदाता किसी विद्यार्थी की अभिरुचि व उपलब्धि के बजाय उसकी अभिक्षमता के बारे में जानकर उसके बारे में अधिक अच्छी समझ प्राप्त कर सकता है।
2. अभिरुचियों के बारे में जानकारी निश्चित रूप से शैक्षिक निर्णयों में मार्गदर्शन देती है।
3. एक ठोस निर्णय लिये जाने हेतु परामर्शदाता को विद्यार्थी के अभिरुचियों, अभिक्षमताओं एवं उपलब्धि परीक्षण के अंकों की जानकारी होनी चाहिए।

सारांश

अभिरुचियों से आशय उन क्रियाकलापों से है जिनमें एक व्यक्ति लगा रहना पसन्द करता है और आनंद लेता है। जैसा कि अभिरुचि खोज सूचियों की मदद भय प्रदान करने वाली नहीं होती हैं, इन खोज सूचियों या परीक्षणों के परिणाम परामर्शदाता के लिये उपयोगी होते हैं और इसलिए सेवार्थी के साथ उचित संबंध स्थापित करने, परीक्षण में भाग लेने हेतु सकारात्मक दृष्टिकोण का विकास करने में और वास्तविकता का परीक्षण करने में सहायता करते हैं। अभिरुचियों को इस प्रकार वर्गीकृत किया जा सकता है (i) व्यक्त अभिरुचियाँ, जो कि व्यक्ति की पसन्दों व नापसन्दों का अभिव्यक्तिकरण हैं (ii) प्रत्यक्ष या अवलोकित अभिरुचियाँ, जो कि किसी क्रियाकलाप या पेशे में सहभागिता से निर्णित की जाती हैं (iii) परीक्षण से ज्ञात या मापी गयी अभिरुचियाँ, ये वे अभिरुचियाँ हैं जो वस्तुनिष्ठ परीक्षणों द्वारा मापी जाती हैं।

उपलब्धि वह है जो कोई व्यक्ति किसी अध्ययन/क्रियाकलाप के क्षेत्र में निष्पादित/प्राप्त करता है। उपलब्धि परीक्षणों को विभिन्न तरीकों से वर्गीकृत किया जाता है। परामर्शदाता, उपलब्धि परीक्षणों का उपयोग सेवार्थी की स्व-समझ को बढ़ाने, उन्हें निर्णय लेने में मदद करने, स्वाध्याय हेतु प्रोत्साहित करने तथा उनके द्वारा सामान्य की जाने वाली समस्याओं के निदान में करते हैं। उपलब्धि परीक्षण आंकड़े बिल्कुल भी गारन्टी नहीं देते हैं कि मापा गया प्रदर्शन एक प्रतीकात्मक/आदर्श स्वरूप प्रदर्शन होता है। परामर्शदाताओं को चाहिए कि वे उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों को विद्यार्थी के अध्यापक प्रदत्त ग्रेडों या अंकों से परिपूरित करें और उपलब्धि परीक्षण से ज्ञात प्रदर्शन के पैटर्नों की खोज करें।

अभिक्षमता को किसी विशेष कार्य को सम्पादित करने के लिये आवश्यक विशेष योग्यता या विशेष योग्यताओं के पुंज के रूप में समझा जाता है। यह कार्य के किसी विशेष क्षेत्र में सफलता की संभावना को प्रदर्शित करता है और यह भी प्रदर्शित करता है कि प्रशिक्षण या अनुभव से कोई व्यक्ति किस सीमा तक लाभान्वित होगा, अभिक्षमता परीक्षण विभिन्न प्रकार के होते हैं। सेवार्थी की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए, परामर्शदाताओं के लिये यह महत्वपूर्ण है कि वे अभिक्षमता परीक्षण का चुनाव व प्रयोग सावधानीपूर्वक करें।

परीक्षण के आकड़े स्वयं में सम्पूर्ण सूचना प्रदान नहीं करते हैं। अभिक्षमता परीक्षण के आंकड़ों का प्रयोग अवश्य ही पूर्व उपलब्धि विभिन्न पेशागत सम्भावनाओं के साथ विद्यार्थियों का मार्गदर्शन करने के लिये परीक्षण के आकड़ों, वर्तमान अभिरुचियों, मनोरंजनात्मक गतिविधियों, आराम के समय की गतिविधियों व कार्य आदतों के साथ करना चाहिए।

अभिक्षमता परीक्षण व्यक्ति की कुछ विशिष्ट योग्यताओं का मापन करते हैं और इसलिए यह जानने में मदद करते हैं कि वह वर्तमान में क्या कर सकता है और भविष्य में वह इसे कितनी अच्छी तरह से कर सकता है। वर्तमान प्रदर्शन निष्पादन के आधार पर उसकी भविष्य की उपलब्धि के बारे में अनुमान लगाया जाता है जो कि केवल संभावना के संदर्भ में होता है। किसी कैरियर में व्यक्ति की सफलता में योगदान देने वाले घटक जैसे इच्छा शक्ति, कठिन परिश्रम आदि को अभिक्षमता परीक्षणों द्वारा नहीं मापा जाता है।

किसी क्रियाकलाप में अभिरुचि का होना उस क्षेत्र में अभिक्षमता या उपलब्धि का भी होना नहीं है। किसी व्यक्ति की अभिरुचियों, उपलब्धियों एवं अभिक्षमता परीक्षण के आंकड़ों को जानने, उनका आकलन करने व समेकन करने की सार्थकता परामर्शदाताओं को उस व्यक्ति के शैक्षिक एवं कैरियर संबंधी विकल्पों के क्षेत्र का चुनाव करने में मदद करने से है।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

1. प्रत्येक का एक उदाहरण देते हुए अभिरुचि, उपलब्धि तथा अभिक्षमता के सिद्धांत को दो से तीन वाक्यों में समझाइए।
2. परामर्श की प्रक्रिया में अभिरुचियों, उपलब्धि एवं अभिक्षमता की जानकारी की सार्थकता को सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
3. रेनू अभियांत्रिकी में अभिरुचि प्रदर्शित करती है, अभिक्षमता परीक्षण में उसके अंक औसत स्तर के हैं एवं गणित तथा विज्ञान में उसकी उपलब्धि के अंक निम्न हैं।

रेनू को कैरियर संबंधी निर्णय लेने में मदद करने हेतु एक परामर्शदाता के रूप में आप अभिरुचि, अभिक्षमता एवं उपलब्धि सूचनाओं का किस प्रकार उपयोग करेंगे ?

4. सामान्य अभिक्षमता एवं विशिष्ट अभिक्षमता के मध्य क्या अन्तर है ?
5. हाई स्कूल के विद्यार्थियों की कैरियर काउन्सिलिंग में अभिक्षमता परीक्षण के उपयोग की सोदाहरण व्याख्या कीजिए।

6. एक मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण, अनौपचारिक कक्षा परीक्षण से अधिक उपयोगी हो सकता है। व्याख्या कीजिए क्यों ?
7. जॉन 16 वर्ष का है और कक्षा 10 की परीक्षा दे चुका है। हाल ही में अनेकों कैरियर मेलों को देखने से वह पाता है कि उसकी अभिरुचि कामर्स के क्षेत्र में जाने की है और अन्ततः कार्पोरेट जॉब को चुनने की है। फिर भी उसके अभिभावक उसे विज्ञान वर्ग में प्रवेश दिलाते हैं। जॉन अपनी प्रथम टर्म की परीक्षाओं में गणित व जीव विज्ञान में फेल हो जाता है और शैक्षिक परामर्श के लिये भेजा जाता है। आपकी क्या सलाह होगी ?

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास के उत्तर बिंदु

1. निम्न बिन्दुओं को विस्तार से लिखिए—

- अभिरुचि से आशय उन क्रियाकलापों से है जिनमें लगे रहना कोई व्यक्ति पसन्द करता है और आनंदित भी होता है। उदाहरणार्थ, एक बच्चा पढ़ने से अधिक संगीत को पसन्द कर सकता है। यह भाषा एवं साहित्य के बजाय उसकी अभिरुचि को संगीत में परिलक्षित करता है।
- उपलब्धि से आशय है कि कोई व्यक्ति किसी अध्ययन, क्रिया कलाप या परिक्षेत्र में सफलतापूर्वक क्या प्राप्त करता है / निष्पादित करता है। उदाहरणार्थ— यदि एक विद्यार्थी गणित में 85%, विज्ञान में 95% तथा अंग्रेजी में 75% अंक प्राप्त करता है तो यह भाषा एवं गणित की तुलना में विज्ञान में उसकी उच्च उपलब्धि का संकेत करता है।
- अभिक्षमता से आशय उन योग्यताओं के पुंज से है जो किसी कार्य विशेष को निष्पादित करने के केन्द्र में होती हैं। उदाहरणार्थ— एक सफल स्थापत्यविद वास्तुशिल्पी होने के लिये व्यक्ति के पास अवलोकन की अच्छी समझ, सौन्दर्य शास्त्रीय दृष्टिगत समरणशक्ति की समझ, नियन्त्रण की अमूर्त तार्किक योग्यता, चित्रकारी की योग्यता जैसे गुणों का होना आवश्यक है।

2. परामर्श देने के लिये, विद्यार्थी की अभिरुचियों, अभिक्षमताओं एवं उपलब्धि के बारे में जानकारी परामर्शदाता को विद्यार्थियों को उचित शैक्षिक व कैरियर संबंधी निर्णय लेने में परामर्श देने हेतु मदद करती है। निम्न बिन्दुओं को विस्तार दीजिए —

- अभिरुचि सेवार्थी की पसन्द को प्रदर्शित करती है। अभिरुचि खोज सूचियों की मदें मूल्यांकन न करने वाली मदें होती हैं इसलिये इनसे सेवार्थी में भय का संचरण नहीं होता है। ये खोज सूचियाँ स्वयं की खोज/पहचान पर बल देती हैं।
- अभिक्षमता परीक्षण आंकड़े यह पता लगाने में मदद करते हैं कि सेवार्थी अभी क्या कर सकता है और भविष्य में वह इसे कितनी अच्छी तरह कर सकता है। अभिक्षमता परीक्षण आंकड़ों को सेवार्थी की उपलब्धि परीक्षण आंकड़ों एवं अभिरुचियों के साथ संयोजन करना चाहिए।
- उपलब्धि परीक्षण आंकड़े सेवार्थी को स्वयं की समझ विकसित करने, निर्णय लेने, स्वाध्याय को प्रोत्साहित करने तथा उसके द्वारा सामना की जाने वाली समस्याओं के निदान में मदद करते हैं।

3. एक परामर्शदाता रेनू को उसकी अन्य अभिरुचियों व अभिक्षमताओं को खोजने में मदद कर सकता है और वह अन्य क्षेत्रों में अपनी उपलब्धि का पता लगा सकती है। अभिक्षमता परीक्षण में रेनू के औसत अंकों, गणित व विज्ञान में निम्न उपलब्धि अंकों को दृष्टानुगत करते हुए उसे अन्य क्षेत्रों जैसे विज्ञान, मानवकी या कॉमर्स में जाने की सलाह दी जायेगी।
4. सामान्य अभिक्षमता सभी क्षेत्रों की सम्भावित सफलता के माध्य पर आधारित होती है जबकि विशिष्ट अभिक्षमता से आशय एक विशेष क्षेत्र से है जो कि प्रशिक्षण से काफी अधिक या औसत स्तर पर लाभान्वित हो सकती है।
5. अभिक्षमता परीक्षण, कैरियर परामर्श प्रक्रिया का एक मुख्य भाग है क्योंकि ये परीक्षण प्रदर्शित करते हैं कि क्या विद्यार्थी किसी विशेष पेशे में सफल होने के आवश्यक योग्यताओं के पुंज को धारण करता है या नहीं।
उदाहरणार्थ – एक विद्यार्थी जिसकी कि अभियान्त्रिकी में अभिरुचि है और वह अभिरुचि खोज सूची में भी इसमें उच्च अंक प्राप्त करता है किन्तु अभिक्षमता परीक्षण में उसके निम्न अंक प्राप्त होने पर उसे अभियांत्रिकी के क्षेत्र में जाने की सलाह नहीं दी जायेगी।
6. अनौपचारिक कक्षा-परीक्षणों के बजाए मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण अधिक उपयोगी होते हैं क्योंकि इनकी विश्वसनीयता व वैधता उच्च होती है, साथ ही इनके कुछ मानक भी होते हैं। ये किसी व्यक्ति की उसके समूह में तुलना की अनुमति देते हैं और अधिक अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षणों के बजाय, इन परीक्षणों को संचालित करने की प्रक्रिया एवं परीक्षण उपरान्त आंकना भी मानकीकृत होती है और परीक्षण मर्दों की गुणवत्ता भी अधिक अच्छी होती है। साथ ही, अनौपचारिक उपलब्धि परीक्षण स्थानीय पाठ्यचर्या पर मापन करते हैं, जबकि मानकीकृत उपलब्धि परीक्षण उन परिणामों व विषयों का मापन करते हैं जो अधिकतम विद्यालयों के लिये समान होते हैं।
7. गुणात्मक परीक्षण आकड़ों के आधार पर सर्वप्रथम आपको सापेक्ष रूप से सुनिश्चित होना होगा कि जॉन कॉमर्स में काफी अच्छा करेगा। तब आप उसे कॉमर्स में जाने की सलाह दे सकते हैं। जैसा कि जॉन के माता-पिता भी चाहते हैं कि उनका पुत्र एक प्रेरणादायी व सफल विद्यार्थी बने इसलिए आप उन्हें भी सलाह दे सकते हैं कि जॉन का कॉमर्स में जाना उसकी सर्वोत्तम रुचियों के अनुरूप ही है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास के उत्तरबिंदु

आत्म-निरीक्षण अभ्यास-1

1. द
2. क
3. अ
4. ब
5. स

आत्म-निरीक्षण अभ्यास-2

1. द
2. स
3. अ
4. ब

आत्म-निरीक्षण अभ्यास-3

1. असत्य
2. सत्य
3. सत्य

संदर्भ पुस्तकें

- Bennett, G.K., Seashore, H.G., & Wesman, A.G. 1984. Differential Aptitude Tests: Technical Supplement. Psychological Corp, San Antonio, TX.
- Super. 1990. A Life-span, life-space approach to career development. In D. Brown, L. Brooks, & Associates. Career Choice and Development (2nd ed: pp 197-261). Jossey-Bass, San Francisco, CA
- Holland, J. L., Powell, A. B., & Fritzsche, B. A. 1994a. The self-directed Search Professional User's Guide. Psychological Assessment Resources, Odessa, FL.
- Holland, J. L., Powell, A. B., & Fritzsche, B. A. 1994b. The Self-directed Search Technical Manual. Psychological Assessment Resources, Odessa, FL.
- Swaney, K. 1995. Technical Manual : Revised Unisex Edition of the Interest Inventory. American College Testing, Iowa City, IA,

पठनीय पुस्तकें

- Bennett, G. K., Seashore, H. G., & Wesman, A. G. 1984. Differential Aptitude Tests: Technical Supplement, Psychological Corporation, New York.
- Educational Testing Services (ETS), New Jersey.
- Kapes, J. T. & Mastie, M. M. 1994. A Counsellor's Guide to Career Assessment Instruments (3rd edition). American Counselling Association, Alexandria, VA.

- Kuder, G. F. 1953. Kuder Preference Record – Personal. Science Research Associates, Inc., Chicago.
- Kuder, G. F. 1956. Kuder Preference Record – Occupational. Science Research Associates, Inc., Chicago.
- Kuder, G. F. 1956 Kuder Preference Record – Vocational. Science Research Associates, Inc., Chicago.
- Strong, E. K. 1959. Strong Vocational Interest Blanks: Manual. Consulting Psychologists Press. Palo Alto, California.
- Shertzer, B. & Linden, J. D. 1979. Fundamentals of Individual Appraisal: Assessment techniques for counsellors. Houghton Mifflin Co., Boston.

परामर्श हेतु व्यक्तित्व का आकलन

- 2.0 परिचय**
- 2.1 उद्देश्य**
- 2.2 व्यक्तित्व का अर्थ**
- 2.3 व्यक्तित्व का आकलन और इसका महत्व**
 - 2.3.1 वैयक्तिक-सामाजिक, शैक्षिक एवं कैरियर परामर्श हेतु आकलन
- 2.4 व्यक्तित्व के आकलन के लिए उपागम**
 - 2.4.1 आत्म-प्रतिवेदन (रिपोर्ट) को आंकना
 - 2.4.2 प्रक्षेपीय विधियाँ
 - 2.4.3 व्यवहारात्मक आकलन
 - 2.4.4 आकलन की अन्य विधियाँ
 - 2.4.5 व्यक्तित्व आकलन का प्रयोग कब करना चाहिए
- 2.5 एक उपयुक्त व्यक्तित्व पैमाने के चयन में कुछ ध्यान देने योग्य तथ्य**
- 2.6 व्यक्तित्व पार्श्विका (Profiles) को समझना एवं प्रयोग करना**
- 2.7 सारांश**
 - आत्म – मूल्यांकन अभ्यास
 - आत्म – मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु
 - आत्म – निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु
 - संदर्भ पुस्तकें
 - पठनीय पुस्तकें

2.0 परिचय

आप एक परिवार में अचानक जाते हैं और देखते हैं कि परिवार के सदस्य जो एक ही प्रकार के शारीरिक, सामाजिक और सांवेगिक पर्यावरण में साथ-साथ रहते हैं वे एक दूसरे से भिन्न प्रकार से सोचते हैं, कार्य करते हैं एवं व्यवहार का प्रदर्शन करते हैं। परिवार में माता जी सामाजिक सेवा पसंद करती हैं, ऑफिस की नौकरी के साथ ही साथ लोगों से बात करती हैं तथा घुलमिल कर रहती हैं, घर पर काम करती हैं और किसी भी प्रकार के तनाव का प्रदर्शन नहीं करती हैं; पिता काम से वापस आने के बाद कहीं भी जाना पसंद नहीं करते हैं; भाई लंबे समय तक क्रिकेट खेलना पसंद करता है तथा बाहर घूमने के लिए मित्रों को बुलाता है और बहन विद्यालय से वापस आने के बाद अपने आप में ही प्रसन्न रहती है। आपने विद्यालय या कक्षा दोनों में जुड़वा बच्चों को स्वच्छ कपड़ों में तथा आकर्षक व्यक्तित्व में संभवतः देखा है। जबकि उनमें से एक समस्या के समाधान में, समूह कार्य करने में अत्यधिक आत्म-विश्वास का प्रदर्शन करता है तथा वाद-विवाद में हिस्सा लेता है वहीं पर दूसरा बच्चा कक्षा-कार्य को अच्छी तरह से करता है परन्तु किसी भी प्रकार की समूह गतिविधि में हिस्सा लेने से इनकार करता है। इसके अलावा कक्षा में करीब 15 वर्ष की उम्र की दो लड़कियाँ हैं जो विद्यालय में नर्सरी कक्षा से हैं तथा पढ़ने में होशियार हैं। उनमें से एक बहुत मित्रवत्, प्रसन्न एवं सबके साथ मिलकर रहती है तथा कक्षा के अन्य बच्चों के साथ अपने व्यक्तिगत सामानों की हिस्सेदारी को बुरा नहीं मानती है। परन्तु दूसरी लड़की बहुत आक्रामक, स्वत्वात्मक (अधिकार की भावना) तथा मुखर है। इस प्रकार की विभिन्नताओं को हम नजदीकी रूप से संबंधित व्यक्तियों के साथ ही साथ असंबद्ध व्यक्तियों में जीवन की अनेकों प्रकार की दिनचर्या के मामले के रूप में निरीक्षण करते हैं। इन विविधताओं के प्रति जितना अधिक आप सचेत होते हैं उतना अधिक आप विश्वास करते हैं कि लोगों के पास व्यक्तित्व निर्माण का असाधारण तरीका होता है। यह असाधारणता एक व्यक्ति के रूप में उन्हें अब भिन्न बनाती है और उनके भविष्य में एक दूसरे से भिन्न रहने की संभावना बनी रहती है। उनके सोचने के तरीके, संबंधों का निर्माण करना एवं कायम रखना तथा व्यवहार को उनके वैयक्तिक एवं सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ में विशिष्टता के रूप में स्वीकार करने एवं समझने की आवश्यकता है।

परामर्शदाता अपने विद्यार्थियों के व्यक्तित्व की विभिन्नताओं को पहचानते, समझते एवं आकलन करते हैं क्योंकि ये भविष्य में सफलता एवं समायोजन का पूर्वानुमान लगाने में प्रासंगिक होते हैं। आपको यह समझने की आवश्यकता है कि किस प्रकार से व्यक्तित्व में विभिन्नता व्यवहार को प्रभावित करती है, किस प्रकार से व्यक्तित्व विशेषताओं का आकलन करना है और परामर्श परिस्थितियों में किस प्रकार से व्यक्तित्व के आकलन का प्रयोग करना है।

इस यूनिट में आप व्यक्तित्व की विभिन्नताओं का आकलन करने के अर्थ एवं प्रासंगिकता तथा व्यक्तित्व के आकलन के विविध उपागमों को सीखेंगे। आपको कुछ ऐसी परिस्थितियों से भी परिचित कराया जाएगा जिसमें परामर्श में व्यक्तित्व आकलन का प्रयोग किया जा चुका है।

2.1 उद्देश्य

इस यूनिट के अध्ययन के पश्चात आप निम्नलिखित बिंदुओं को समझने में समर्थ होंगे –

- व्यक्तित्व और इसके आकलन के अर्थ एवं महत्व का विस्तार से वर्णन करना।

- व्यक्तित्व आकलन के उपागमों का वर्णन करना जिसका विद्यालयी परिस्थिति में प्रयोग किया जा सकता है तथा विभिन्न उपागमों की विशेषताओं एवं कमियों को पहचानना।
- एक विद्यार्थी/समूह के लिए उपयुक्त व्यक्तित्व आकलन उपागमों/मापकों का चयन एवं प्रयोग करना।
- व्यक्तित्व पार्श्विका (Profiles) तथा परामर्श में उनके प्रयोग की जानकारी विकसित करना।

2.2 व्यक्तित्व का अर्थ

सामान्य लोग प्रायः व्यक्तित्व शब्द का प्रयोग एक व्यक्ति की शारीरिक संरचना को सूचित करने के लिए करते हैं। तथापि "व्यक्तित्व" शब्द एक व्यक्ति की शारीरिक बनावट से कहीं अधिक महत्व प्रदर्शित करता है और इसका एक व्यापक अर्थ होता है। यह एक व्यक्ति के सांवेगिक, मनोवृत्तिक, अन्तः वैयक्तिक, अभिवृत्तिक और नैतिक पहलुओं को शामिल करता है। कुछ शोधकर्ताओं ने बुद्धि को भी व्यक्तित्व के एक भाग के रूप में शामिल किया है।

व्यक्तित्व एक व्यक्ति की विशेषताओं के असाधारण संयोजन से संबंधित है जो एक व्यक्ति में एक विशेष एवं नियमित तरीके से व्यवहार करने की आदत डालता है। विभिन्न परिस्थितियों में एक विशेष प्रकार का व्यवहार करने में व्यक्ति की नियमितता व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय के मूल में निहित होती है। उदाहरणार्थ – जब आप कहते हैं कि “मेरे मित्र का व्यक्तित्व आशावादी है” तब यह स्पष्ट करता है कि व्यक्ति में विविध प्रकार की परिस्थितियों में वस्तुओं के उज्ज्वल पक्ष की तरफ देखते हुए प्रसन्न, आशावान एवं उत्साहपूर्ण तरीके से व्यवहार करने की नियमित प्रवृत्ति है। यह भी स्वीकार्य है कि कोई भी अपने व्यवहार में समग्र रूप में नियमित नहीं है परन्तु विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में समय-समय पर व्यक्ति के व्यवहार में अधिकतर दिखाई जाने वाली नियमितता व्यक्तित्व को समझने में आधारभूत परिकल्पना है। एक अन्य विशेषता जो व्यक्तित्व के सम्प्रत्यय के केन्द्र में है वह विलक्षणता है। सभी में विशेषताएँ होती हैं जो प्रत्येक व्यक्ति में समान हैं परन्तु सभी व्यक्तियों में अपना स्वयं का व्यक्तित्व गुणों या विशेषकों का एक विलक्षण समूह होता है। इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति विशिष्ट है। एक व्यक्ति के व्यक्तित्व की विलक्षण विशेषताएँ व्याख्या करती हैं कि एक ही प्रकार की परिस्थिति में लोग एक समान कार्य क्यों नहीं करते हैं।

आप मॉड्यूल-3 के यूनिट-2, व्यक्तित्व की प्रकृति एवं विकास पर परिप्रेक्ष्य में व्यक्तित्व के कुछ सिद्धांतों के विषय में पहले ही अध्ययन कर चुके हैं। व्यक्तित्व के मुख्य उपागमों को (i) मनोगतिक (फ्रायड), (ii) व्यवहारवादी (स्कनर), (iii) मानवतावादी (कार्ल रोजर्स) तथा (iv) जैविक (आईसेंक) के रूप में वर्गीकृत किया गया है। व्यक्तित्व को समझने के लिए इतने परिप्रेक्ष्य क्यों हैं? इसका एक कारण है कि एक अकेला सिद्धांत उपयुक्त रूप से सभी चीजों की व्याख्या नहीं कर सकता है जो हम व्यक्तित्व के विषय में जानते हैं। कभी-कभी, विभिन्न सिद्धांत व्यक्तित्व के अलग-2 पहलुओं पर ध्यान केन्द्रित करते हैं। इसका यह अर्थ नहीं है कि एक विचार सही है जबकि दूसरे गलत हैं। विविध सैद्धांतिक रुझानों को एक दूसरे के विचारों के पूरक के रूप में इनकी विशेषताओं एवं सीमितताओं के साथ देखना अच्छा है।

2.3 व्यक्तित्व का आकलन और इसका महत्व

शिक्षकों के साथ ही साथ प्रायः परामर्शदाता भी सरसरी अवलोकन से थोड़ा अधिक के आधार पर झट से प्रतिक्रिया देते हैं। उदाहरणार्थ – जब आप अपने से सोचते हैं कि “यह व्यक्ति अविश्वसनीय है” या जब आप एक मित्र पर टिप्पणी करते हैं कि वह बहुत अधिक कायर एवं दबबू है तब आप झल्लाहट भरी प्रतिक्रिया व्यक्त करते हैं।

इस प्रकार के निर्णय हमारे दैनिक जीवन का हिस्सा हैं। तथापि एक प्रशिक्षित परामर्शदाता को ऐसी कार्यविधियों का प्रयोग करना चाहिए जो व्यवस्थित एवं मानकीकृत आकलनों को उपलब्ध कराती हैं। इस प्रकार के आकलन अधिक विश्वसनीय एवं वैध हैं।

आपके लिए यह भी समझना महत्वपूर्ण है कि व्यक्तित्व का आकलन विद्यार्थियों की सहायता करने तथा मार्ग निर्देशित करने के लिए आवश्यक होता है। व्यक्तित्व का आकलन वैयक्तिक और सामाजिक परामर्श के साथ ही साथ कैरियर एवं शैक्षिक परामर्श में विद्यार्थियों को उनकी संपूर्ण क्षमता को प्राप्त करने में सहायता प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण है।

2.3.1 वैयक्तिक-सामाजिक, शैक्षिक एवं कैरियर परामर्श हेतु आकलन

स्वयं एवं अन्य लोगों के साथ बेहतर समायोजन तथा स्वस्थ संबंधों के लिए विद्यार्थियों को सहायता देने पर ध्यान केन्द्रित करते हुए वैयक्तिक-सामाजिक परामर्श में व्यक्तित्व के आकलन की भूमिका को सर्वाधिक मान्यता प्राप्त हुई है। वैयक्तिक-सामाजिक परामर्श को विद्यार्थियों के लिए सहायता प्रदान करने वाली सेवा के रूप में देखा गया है जो उनके वैयक्तिक, सांवेगिक एवं सामाजिक आवश्यकताओं तथा समस्याओं को उनके दैनिक जीवन में हस्तक्षेप करने की प्रवृत्ति का प्रभावशाली ढंग से नियंत्रण करना सिखाते हैं।

विद्यालयी परिस्थिति में कुछ वैयक्तिक और सामाजिक समस्याएँ जिनके लिए विद्यार्थी सामान्य रूप से मदद की तलाश करते हैं, वे स्वयं किशोरावस्था के विकासात्मक कार्यों जैसे – शारीरिक परिवर्तन की स्वीकृति, वयःसंधि का प्रारम्भ, स्वतंत्रता की आवश्यकता, पहचान, मित्रों के साथ घनिष्ठता, आदि का सामना करने की आवश्यकता से संबंधित हैं। आप इन्हें परीक्षण की चिन्ता, क्रोध, निम्न स्तरीय स्वाभिमान, तनाव, संबंध एवं पारिवारिक समस्याएँ, संप्रेषण, लैंगिक व्यवहार, सांवेगिक एवं आचरण की समस्याओं, विद्यालय में समायोजन, समकक्षी समूह के तनाव को नियंत्रित करना, निराशा और इस प्रकार के अन्य रूपों में विद्यार्थी के व्यवहार में देख सकते हैं।

एक विद्यार्थी अपनी पढ़ाई में बहुत अच्छा एवं व्यक्तिगत जीवन में बहुत अनुशासित हो सकता है परन्तु एक समूह परिस्थिति में बहुत अधिक घबरा सकता है और इस प्रकार निम्न स्तरीय आत्म-विश्वास के कारण परीक्षण में अनुत्तीर्ण हो सकता है। एक विद्यार्थी कक्षा प्रदर्शन में औसत से ऊपर हो सकता है परन्तु जैसे ही परीक्षाएँ नजदीक आती हैं वह अशान्त होना प्रारम्भ कर देता है, पुस्तकों के साथ बैठा रहता है परन्तु कुछ भी याद करने में समर्थ नहीं होता है और जैसे ही वह प्रश्नपत्र को देखता है उसको कुछ भी याद नहीं रह जाता है। एक विद्यार्थी बहुत कम उत्तेजित करने पर भी लड़ाई की तरफ प्रवृत्त हो जाता है और एक बार क्रोधित होने पर अपने संवेग पर से नियंत्रण

खो देता है। कुछ विद्यार्थी बहुत कम बातचीत करते हैं इसलिए नहीं कि वे अपने विचारों को व्यक्त नहीं कर पाते हैं बल्कि इसलिए कि वे अपने आप में सीमित रहते हैं, यहाँ तक कि वे बहुत समय तक बिस्तर में पड़े रहते हैं और किसी संरचनात्मक गतिविधि में भाग नहीं लेते हैं। कुछ सहपाठियों के साथ सामंजस्य करने से इनकार कर देते हैं, कुछ अध्यापकों के प्रति गलत भावना रखते हैं तथा कुछ को घर पर समायोजन की समस्या हो सकती है। कुछ लोग विपरीत लिंग के व्यक्तियों के साथ संबंध स्थापित करने में परेशानी महसूस करते हैं। व्यक्तित्व आकलन का प्रयोग व्यवस्थित जानकारी को उपलब्ध कराने में सहायता कर सकता है जिसका परामर्श के लिए प्रयोग किया जा सकता है।

व्यक्तित्व आकलन कैरियर परामर्श के लिए भी महत्वपूर्ण है। कैरियर परामर्श विद्यार्थियों को उनकी पहचान की खोज करने, सर्वोत्तम कैरियर विकल्पों के विषय में सीखने तथा सर्वश्रेष्ठ संभावित भविष्य के लिए रूपरेखा तैयार करने में सहायता प्रदान करने पर ध्यान केन्द्रित करता है। कुछ निश्चित कैरियर हैं जो विशेष प्रकार के व्यक्तित्व प्रारूपों के लिए सर्वाधिक उपयुक्त हैं। उदाहरणार्थ – एक विक्रेता तभी सफल हो सकता है यदि वह बहिर्मुखी, सबसे घुलने-मिलने वाला तथा निडर व्यक्ति है। इसी तरह से एक अन्तर्मुखी व्यक्ति अनुसंधान तथा लेखन, आदि के व्यवसायों में अधिक सफल हो सकता है। तथापि व्यक्तित्व प्रारूपों तथा व्यवसायों का कोई सीधा एवं स्पष्ट सीमांकन नहीं हो सकता है। ये केवल संकेतकों के रूप में कार्य कर सकते हैं।

शैक्षिक मार्गदर्शन एवं परामर्श के संदर्भ में आप शायद देख चुके हैं कि ऐसे बहुत से विद्यार्थी हैं जो बहुत होशियार प्रतीत होते हैं परन्तु परीक्षा या अन्य क्षेत्रों में बहुत अच्छा प्रदर्शन नहीं कर पाते हैं। उसका कारण यह है कि मानसिक योग्यता के अलावा कुछ निश्चित व्यक्तित्व – मनोदशात्मक कारक शैक्षिक सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। वचनबद्धता की भावना, इच्छा, कठिन परिश्रम, उपयुक्त आदतें, आदि भी शैक्षिक सफलता में योगदान देते हैं जबकि निम्न स्तरीय स्वाभिमान/आत्म-सम्मान, सांवेगिक व्यवधान, आदि शैक्षिक प्रदर्शन में अवरोध के रूप में जाने जाते हैं। इसलिए यह देखना आश्चर्यजनक नहीं है कि इस प्रकार के कुछ गुणों की कमी के कारण निम्न स्तरीय उपलब्धि वाले या योग्यता से कम उपलब्धि प्राप्त करने वाले बच्चे अपनी क्षमता से कम स्तर का प्रदर्शन करते हैं।

इस प्रकार विद्यालयी स्तर पर मुद्दों का क्षेत्र काफी बड़ा हो सकता है जिसके लिए वैयक्तिक-सामाजिक तथा कैरियर परामर्श की आवश्यकता है, विशेष रूप से 11-18 वर्ष के आयु समूह के विद्यार्थियों के लिए। ये समस्याएँ विभिन्न सामाजिक समूहों तथा संस्कृतियों के साथ भी भिन्न हो सकती हैं क्योंकि सामाजिक मान्यताएँ व्यक्तियों के अवबोधन तथा समस्याओं का निर्धारण करती हैं और इसीलिए एक परामर्शदाता को व्यापक रूप से लिंग-संवेदनशील तथा सांस्कृतिक-संवेदनशील होना पड़ता है।

क्रियाकलाप – 1

दस विभिन्न व्यवसायों में नौकरी की आवश्यकताओं का अन्वेषण एवं विश्लेषण कीजिए तथा उस व्यवसाय में सफल होने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व विशिष्टताओं की सूची बनाइए। आप साहित्य के विभिन्न स्रोतों का सहारा ले सकते हैं, नियोजक या नियोक्ता से बातचीत कर सकते हैं। सूचना प्राप्त करने के लिए प्रयोग किए गए स्रोतों का भी उल्लेख कीजिए।

2.4 व्यक्तित्व के आकलन के लिए उपागम

व्यक्तित्व के आकलन के लिए बहुत से उपागम हैं। ये व्यक्तित्व के विभिन्न सिद्धांतों से विकसित हुए हैं। आप एक परामर्शदाता के रूप में अपने रुझान एवं अनुभव के आधार पर या तो एक अथवा कई उपागमों का चयन कर सकते हैं। ये व्यक्ति से आकड़ों को प्राप्त करने की विधि के संदर्भ में वर्गीकृत किए जा सकते हैं। यद्यपि कुछ व्यक्तित्व परीक्षण समूह उपकरण के रूप में प्रयोग किए जाते हैं परंतु इनमें से अधिकतर नैदानिक एवं परामर्श व्यवस्था में व्यक्तिगत रूप में भी प्रयोग किए जाते हैं। व्यक्तित्व के आकलन के उपागम अत्यधिक आधारभूत वर्णनात्मक से लेकर अत्यधिक तकनीकी एवं सुविज्ञ तक फैले होते हैं। इन्हें आत्म-रिपोर्ट मापकों, प्रक्षेपीय तकनीकों तथा व्यवहारात्मक आकलन के रूप में समूहित किया जा सकता है। विभिन्न प्रकार के वर्गीकरण हो सकते हैं। तथापि, महत्वपूर्ण बिंदु प्रत्येक के द्वारा उपलब्ध की जाने वाली जानकारी को समझना है। इस भाग में आप व्यक्तित्व आकलन के विभिन्न उपागमों के विषय में सीखेंगे तथा व्यक्तित्व आकलन के विविध उपकरणों से परिचित होंगे। इस प्रकार के उपकरणों की तार्किकता तथा सीमाओं को समझना महत्वपूर्ण है। व्यक्तित्व उपकरण विभिन्न पहलुओं जैसे – अभिवृत्ति, मूल्य, अभिरुचि, उद्देश्य, मनोदशागत गुणों, आदतों, आदि का आकलन करते हैं। बहुत से मनोवैज्ञानिक इन परीक्षणों को व्यक्तित्व मापकों के रूप में कहना पसंद करते हैं क्योंकि प्रश्नों में सही या गलत उत्तर नहीं होते हैं जैसे कि मानसिक योग्यता परीक्षणों के मामलों में है।

2.4.1 आत्म-प्रतिवेदन (रिपोर्ट) को आँकना

अधिकांश व्यक्तित्व परीक्षण आत्म-प्रतिवेदन तालिकाएँ हैं। ये व्यक्तित्व मापक हैं जो व्यक्तियों से उनके विशिष्ट व्यवहारों के विषय में बहुत से प्रश्नों/कथनों के उत्तर पूछते हैं। जब आप एक आत्म-प्रतिवेदन तालिका के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं तब अपने प्रयोग के आधार पर कथनों को सही या गलत के रूप में बताते हैं। आप संकेत देते हैं कि किस प्रकार से आप प्रायः एक विशेष तरीके से व्यवहार करते हैं या कुछ निश्चित गुणों के मापदण्ड पर आप स्वयं का आकलन करते हैं। इस उपागम में निहित तर्क बहुत साधारण है। आपको आपसे बेहतर कौन जान सकता है? आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं के द्वारा विविध व्यक्तित्व विशिष्टताओं को मापा जा सकता है। मायर्स-ब्रिग्स प्रारूप संकेतक (MBTI) व्यक्तित्व तालिका का व्यक्तित्व प्रारूप का निर्धारण करने के लिए व्यापक रूप में प्रयोग किया जाता है। यह लोगों के बीच आधारभूत भिन्नताओं को पकड़ता है और व्यक्तिगत विकास को बढ़ाने के लिए तथा विभिन्न प्रकार से चुनौतियों का सामना करने के लिए एक सकारात्मक एवं संरचनात्मक तरीका उपलब्ध कराता है। MBTI को व्यवसाय, शैक्षिक, कैरियर मार्गदर्शन एवं परामर्श के क्षेत्रों से लेकर व्यक्तित्व प्रारूप का निर्धारण करने के लिए व्यापक रूप से सर्वाधिक प्रयोग की जाने वाली प्रश्नावली तक में प्रयोग किया जाता है। कैटल एवं सहयोगियों के द्वारा विकसित की गई सोलह (16) व्यक्तित्व कारक प्रश्नावली आत्म-प्रतिवेदन तालिका का एक अन्य प्रतिनिधित्व उदाहरण है जिसका शोधकार्यों में व्यापक रूप से प्रयोग किया जाता है।

आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं का सशक्त पक्ष -

आत्म-प्रतिवेदन तालिकाएँ नैमित्तिक अवलोकन से बहुत अधिक सही हैं। उदाहरण के लिए, यदि आप आकलन करना चाहते हैं कि वस्तुनिष्ठ ढंग से आप कितने निश्चयात्मक हैं तो आपको दूसरे लोगों के सामान्य व्यवहार

के विषय में तुलनात्मक जानकारी रखने की अत्यन्त आवश्यकता है। एक आत्म-प्रतिवेदन तालिका विभिन्न प्रकार की परिस्थितियों में आपके प्रारूपिक व्यवहार के विषय में पूछताछ करती है जिसमें निश्चयात्मकता की आवश्यकता होती है तथा उसी प्रकार की परिस्थितियों के लिए बहुत से अन्य लोगों के द्वारा व्यक्त किए गए प्रारूपिक व्यवहारों के साथ बिल्कुल वैसी ही तुलना प्रस्तुत करती है। तथापि, आपको अवश्य स्मरण रखना चाहिए कि ये तालिकाएँ केवल उतनी ही सही हैं जितनी कि परीक्षण लेने वाले के द्वारा उपलब्ध कराई गई सूचनाएँ हैं।

आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं से संबंधित सूचनाएँ

जानबूझकर झूठी सूचनाएँ देना तालिकाओं के साथ एक समस्या हो सकती है क्योंकि कुछ लोग अचेतन रूप में सामाजिक रूप से वांछनीय कारकों के द्वारा प्रभावित होते हैं। बिना सोचे-समझे वे केवल उन बातों को बताते हैं जिनके बारे में वे सोचते हैं कि ये उनकी छवि को अच्छे रूप में प्रस्तुत करेंगे। इस कारण से व्यक्तित्व तालिकाओं को निर्णायक के बजाय विचारोत्तजक माना जाता है।

परीक्षण लेने की अभिवृत्ति तथा प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले का पूर्वाग्रह कुछ अन्य समस्याएँ हैं जो आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं से सम्बन्धित हैं। इस प्रकार की तालिकाओं में अधिकतर प्रश्नों के एक उत्तर होते हैं जो कि सामाजिक रूप से अधिक वांछनीय या अन्य की अपेक्षा अधिक स्वीकार्य होते हैं। प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाला झूठ की तरफ प्रेरित हो सकता है अर्थात् अपने पक्ष में प्रभाव उत्पन्न करने के लिए उत्तर का चयन करना। झूठ 'अच्छे के लिए झूठ' या 'खराब के लिए झूठ' के लिए हो सकता है। 'अच्छे के लिए झूठ' की तरफ प्रवृत्ति होती है जब व्यक्ति अपने प्रति अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करने के लिए उत्तरों का चयन करता है जबकि 'खराब के लिए झूठ' उस समय घटित होता है जब व्यक्ति अत्यधिक परेशान प्रतीत होना चाहता है, उससे कहीं अधिक जितना कि वह वास्तव में है। एक आत्म – प्रतिवेदन तालिका में सामाजिक रूप से वांछित प्रतिक्रिया का चयन करने की प्रवृत्ति जानबूझ कर धोखा करना नहीं हो सकता है परन्तु यह कभी-कभी व्यक्ति की अपनी विशेषता या अपनी सीमाओं का सामना करने की अनिच्छुकता को स्वीकारने में अन्तर्दृष्टि की कमी का संकेत हो सकती है। इस प्रकार यह आत्म – सुरक्षा, आलोचना से बचाव, सामाजिक सहमति एवं सामाजिक अनुमोदन की आवश्यकता से सम्बन्धित हो सकती है। वह व्यक्ति जो अप्रिय विषय में खराब के लिए धोखा देता है, वह वैयक्तिक समस्याओं के निवारण में सहायता हेतु ध्यान आकृष्ट करने की आवश्यकता के द्वारा प्रेरित हो सकता है और इसलिए एक आत्म-प्रतिवेदन तालिका में वास्तविक रूप की तुलना में अधिक दुरुनुकूलक प्रतीत होने के लिए धोका देता है।

हाँ या ना के रूप में नियमित रूप से प्रतिक्रिया व्यक्त करने की प्रवृत्ति मौन स्वीकृति है। मौन स्वीकृति या उत्तरों के समूह को गलती के स्रोत के रूप में बताया गया है।

आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं में 'झूठ' और एक ही प्रकार की 'प्रतिक्रिया' से सम्बन्धित समस्या को तटस्थ विषयों की संरचना के द्वारा कम किया जा सकता है। परीक्षण के आयोजन के समय सही तरीके से प्रतिक्रिया देने हेतु परीक्षण लेने वाले को प्रेरित करने के लिए अनुदेशन देने का तरीका तथा उनके साथ स्थापित आत्मीयता भी झूठे उत्तर की प्रवृत्ति को कम कर सकते हैं। कुछ व्यक्तित्व तालिकाओं में सामाजिक रूप से वांछनीय प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने के साथ ही साथ लापरवाही तथा इच्छानुसार प्रतिक्रिया की प्रवृत्ति का पता लगाने के लिए 'झूठ

पैमाना' भी है। उदाहरणार्थ – इस प्रकार के प्रश्न, "क्या आपका स्वभाव चिड़चिड़ा है ?" में एक चिड़चिड़े स्वभाव के व्यक्ति का उत्तर हो सकता है 'नहीं' जो कि उसके बारे में सही नहीं है। यदि एक व्यक्ति इस पैमाने पर अच्छा अंक प्राप्त करता है तो उसके द्वारा दी गई प्रतिक्रिया को प्रमाणिक नहीं माना जाता है। ऊपर उल्लिखित कारकों के परिणामस्वरूप व्यक्तित्व परीक्षणों के द्वारा मापा गया व्यवहार योग्यता के परीक्षण के द्वारा मापे गए व्यवहार जितना विश्वसनीय नहीं हो सकता है।

फिर भी, उपर्युक्त तरीका आपको व्यक्तित्व के विषय में मूल्यवान अंतर्दृष्टि उपलब्ध करा सकता है जब यह अन्य तरीकों जैसे- साक्षात्कार पर आधारित सूचना निर्धारण, अवलोकन, आदि के सहायक के रूप में प्रयोग किया जाता है। आप अपने दैनिक परामर्श में इस प्रकार के साधारण उपकरणों को अत्यन्त उपयोगी पा सकते हैं।

यदि इनका सावधानीपूर्वक एवं व्यवस्थित ढंग से प्रयोग किया जाता है तो इस प्रकार की जानकारी आपको विभिन्न क्षेत्रों में विद्यार्थियों की शैक्षिक सफलता के साथ ही साथ समायोजन की भविष्यवाणी करने में अति आवश्यक मूल्यवान सहयोग उपलब्ध करा सकती है।

2.4.2 प्रक्षेपीय विधियाँ

जैसा कि नाम से ही पता चलता है कि परीक्षण सामग्री एक दृश्य पटल का कार्य करती है जिस पर व्यक्ति अपनी भावनाओं, विचार-प्रक्रियाओं, चिन्ताओं तथा द्वन्द्वों को प्रक्षेपित करता है। आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं की तुलना में प्रक्षेपीय विधियाँ व्यक्तित्व के व्यापक मूल्य निरूपण का लक्ष्य बनाती हैं। आत्म-प्रतिवेदन तालिकाएँ जो अलग-अलग विशेषकों या गुणों के आकलन पर ध्यान केन्द्रित करती हैं, उनके विपरीत प्रक्षेपीय विधियाँ एक समग्र रूप में व्यक्तित्व के एक संयुक्त चित्रण पर ध्यान केन्द्रित करती हैं। फिर भी, आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं की तुलना में विश्वसनीयता एवं वैधता के अनुपयुक्त प्रमाण के कारण प्रक्षेपीय परीक्षणों की आलोचना की गई है।

प्रक्षेपीय विधियों का सामान्य तौर से उपचारीय व्यवस्था में प्रयोग किया जाता है। इन विधियों को व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं को प्रकट करने में प्रभावी समझा जाता है। एनाटसी(1990) ने प्रक्षेपीय विधियों के विविध प्रकारों का विस्तृत वर्णन प्रस्तुत किया है। इनमें सर्वाधिक लोकप्रिय विधियाँ रोशार्क इन्कब्लॉट्स परीक्षण तथा आत्मबोध विषयक परीक्षण के नाम से प्रचलित हैं।

रोशार्क के मसिलक्ष्य (Inkblots) परीक्षण में स्याही से बने धब्बों की एक श्रृंखला होती है। प्रतिक्रिया व्यक्त करने वाले से पूछा जाता है कि वे इन धब्बों में क्या देखते हैं। प्रत्येक कार्ड में चित्र 2.1 में दिखाए गए चित्र के समान सममित स्याही के धब्बे छपे होते हैं। उत्तर देने वाले व्यक्ति को एक समय में स्याही के धब्बों से बना एक कार्ड दिखाया जाता है और पूछा जाता है कि ये धब्बे किसका प्रतिनिधित्व करते हैं। यह श्रृंखला एक समग्र रूप में व्यक्तित्व का आकलन करने के उपचारात्मक उद्देश्य के लिए प्रयोग की जाती है।

आत्म-बोध विषयक परीक्षण में एक दृश्य के चित्रों की श्रृंखला निहित होती है जो व्यक्ति के सामने प्रस्तुत किए जाते हैं और उनसे पूछा जाता है कि इस दृश्य में क्या घटित हो रहा है और इस दृश्य के पात्र क्या महसूस कर रहे हैं। उदाहरणार्थ – एक आत्म-बोध विषयक परीक्षण कार्ड में एक लड़का अपने सामने मेज पर पड़ी हुई

वायलिन को देख रहा है। एक प्रतियोगी व्यक्ति शायद एक कहानी बना सकता है कि लड़का कैसे अपनी होने वाली संगीत प्रतियोगिता के बारे में सोच रहा है जिसमें उसे अच्छा प्रदर्शन करने की उम्मीद है। उसी कार्ड को एक अति आवेगी व्यक्ति को दिखाने पर वह शायद ऐसी कहानी के प्रति प्रेरित हो सकता है कि लड़का अपने मित्रों के साथ बाहर घूमने जाने के लिए दरवाजे से बाहर निकलने की योजना बना रहा है।

स्वतंत्र संबंध परीक्षण (Free Association Tests) तथा वाक्य सम्पूर्ण परीक्षण (Sentence Completion Tests) प्रक्षेपीय विधियों के अन्य प्रकार हैं। 'शब्द संबंध परीक्षण' असंबन्धित शब्दों की एक श्रृंखला है जिसमें व्यक्ति को उसके दिमाग में आने वाले पहले शब्द के आधार पर प्रत्येक शब्द पर प्रतिक्रिया व्यक्त करने के लिए कहा जाता है। यह परीक्षण द्वन्द्व के क्षेत्रों का अन्वेषण करने में सहायता करता है। सांवेगिक द्वन्द्व के क्षेत्र का अनावरण करने के विचार से शब्द संबंध परीक्षण (Word Association Test) का झूठ का पता लगाने के रूप में भी प्रयोग किया जाता है। केन्ट-रोजनॉफ का स्वतंत्र सम्बन्ध परीक्षण मानकीकृत शब्द संबंध परीक्षण का एक उदाहरण है। प्रक्षेपीय तकनीक के रूप में वाक्य सम्पूर्ण का शोध एवं उपचारात्मक विधाओं में भी प्रयोग किया गया है। इस प्रकार के अपूर्ण वाक्य जैसे 'मेरी महत्वाकांक्षा ----- है', 'महिलाएँ ----- हैं' 'मुझे सबसे अधिक क्या चिन्तित करता है -----', 'मेरी माता जी ----- हैं' दिए जाते हैं ताकि वाक्य में जाँच के अन्तर्गत व्यक्तित्व के क्षेत्र से सम्बन्धित उचित प्रतिक्रिया उत्पन्न हो सके। एक व्यापक रूप से प्रयोग किया जाने वाला उदाहरण Rotter Incomplete Sentence Blank (1950) है जिसमें 40 वाक्य प्रातिपदिकों को एक सात बिंदु वाले पैमाने पर समायोजन एवं कुसमायोजन के स्तर पर मापा जाता है।

चित्रकारी तकनीक एवं खेल तकनीक प्रक्षेपीय तकनीकों के अन्य समूह हैं। इन प्रदर्शन तकनीकों को सांवेगिक कठिनाइयों के आत्म-अभिव्यक्ति के साधन के रूप में समझा जाता है। प्रायः ये कठिनाइयाँ बच्चों के आकलन के लिए उपयोगी हैं। एक प्रचलित उदाहरण 'व्यक्ति का रेखाचित्र बनाना' परीक्षण है। इसमें विद्यार्थियों से एक सादे कागज पर एक व्यक्ति का चित्र बनाने के लिए कहा जाता है। जब चित्र बनाने का कार्य पूरा हो जाता है तब बच्चे से सामान्य रूप से उस चित्र के विपरीत लिंग के व्यक्ति का चित्र बनाने के लिए कहा जाता है। अन्त में विद्यार्थी को एक व्यक्ति के बारे में कहानी की रचना करने की आवश्यकता होती है और स्वयं को उस उपन्यास या नाटक में एक पात्र के रूप में समझना होता है। शरीर के भागों के संदर्भ में चित्र को समझाना पड़ता है।

प्रक्षेपीय परीक्षणों की दो मुख्य विशेषताएँ हैं। पहली, व्यक्ति को यह पता नहीं लग पाता है कि परीक्षण परीक्षक को सूचना उपलब्ध कराता है। इस प्रकार धोखे की संभावना कम हो जाती है। दूसरी, अप्रत्यक्ष उपागम अचेतन उद्देश्यों तथा इच्छाओं को बाहर निकालने में सहायता करता है जिसे वह दूसरी तरह व्यक्त नहीं कर सकता/ती है। इस प्रकार इन परीक्षणों का उपचारात्मक व्यवस्था में व्यापक रूप में सतत प्रयोग किया जाता है।

2.4.3 व्यवहारात्मक आकलन

जिस तरह से एक विद्यार्थी/सेवार्थी विभिन्न परिस्थितियों में व्यवहार करता है वह उसके व्यक्तित्व के विषय में आपको सार्थक जानकारी उपलब्ध कराता है। व्यवहार का अवलोकन व्यवहारात्मक विश्लेषण के आधार के रूप में कार्य करता है। एक पर्यवेक्षक के रूप में एक परामर्शदाता अवलोकन, पैमाना, साक्षात्कार तथा आवश्यकतानुरूप परीक्षणों के द्वारा आंकड़ों को प्राप्त कर सकता है।

आप इनके विषय में यूनिट-आकलन एवं मूल्य निर्धारण में गुणात्मक तकनीकें पढ़ चुके हैं।

- अवलोकन एवं परिचर्चा (सांवेगिक, सामाजिक, शारीरिक विकास तथा विविध गतिविधियों में सहभागिता के विषय में शिक्षक/परामर्शदाता का स्वयं का अवबोधन तथा प्रतिवेदन (रिपोर्ट)। अवलोकन में निजी जीवन से संबंधित आंकड़ों का प्रयोग विद्यार्थी के जीवन की अतीत की महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रलेखन में सहायता करता है (विद्यार्थी का विकासात्मक इतिहास, पारिवारिक सदस्यों के साथ संबंध, कोई अभिघातज/दुःखद घटना जिसका एक बच्चे के रूप में किसी को उसका सामना करना पड़ा है और जिससे उसके अभिवृत्ति एवं व्यवहार में परिवर्तन आया है)। इसे विद्यार्थी के परिवार के प्रतिवेदन (संबंध एवं व्यवहार के विषय में पारिवारिक सदस्यों का वृत्तान्त/वर्णन) तथा विद्यार्थी के व्यक्तिगत आंकड़ों (कीर्तिमानों, बीमारी तथा दुर्घटना के साथ ही साथ उपलब्धियों) से पूरा किया जा सकता है।
- शिक्षकों के द्वारा आकलन एवं अवलोकन (कक्षा कार्य एवं उपलब्धि पर प्रतिवेदन, वैयक्तिक एवं समूह व्यवहार जैसे- प्रयास, अनुशासन, टीम – भावना, सहायक होना तथा सामाजिकता आदि के विभिन्न पहलुओं पर मूल्य निर्धारण) : प्रत्यक्ष अवलोकन बहुत उपयोगी हो सकता है क्योंकि ये स्वाभाविक व्यवस्था में व्यापक प्रतिदर्श का लाभ उपलब्ध कराते हैं।
- साक्षात्कार (शिक्षक के द्वारा वैयक्तिक, परिवार, मित्रों एवं शैक्षिक कार्य, भाषा एवं व्यवहार वैचित्र्य को सम्मिलित करने से संबंधित पूछे गए प्रश्नों की प्रतिक्रियाएँ) : यह संरचित, असंरचित या दोनों का मिश्रण हो सकता है। साक्षात्कार दो प्रकार की सूचना उपलब्ध कराता है -1- साक्षात्कार के दौरान सुस्पष्ट होने वाले व्यवहार के प्रत्यक्ष अवलोकन के लिए अवसर, 2- जीवन वृत्तान्त आंकड़ों को प्रकट करना। साक्षात्कारकर्ता को आंकड़ों के एकत्रीकरण एवं स्पष्ट रूप से समझाने के लिए अच्छे कौशल की आवश्यकता होती है।

2.4.4 आकलन की अन्य विधियाँ

आवश्यकतानुरूप परीक्षण

- आवश्यकतानुरूप परीक्षणों में परीक्षण किए जाने वाले व्यक्ति को ऐसी परिस्थिति में रखा जाता है जो वास्तविक जीवन परिस्थिति के अत्यधिक सदृश होती है। व्यक्तित्व के आकलन में आवश्यकतानुरूप परीक्षणों का प्रयोग सामान्य रूप से योग्यता एवं ज्ञान की अपेक्षा सांवेगिक, अन्तःवैयक्तिक और अभिवृत्तीय पहलुओं के आकलन के संबंध में किया जाता है। आवश्यकतानुरूप परीक्षणों का श्रेष्ठ उदाहरण हार्टशोर्न में और उनके सहयोगियों (1928-30) का है जिसे व्यक्तित्व की विविध विशेषताओं का आकलन करने के लिए अपनाया जा सकता है। एक परीक्षण जिसे चरित्र शिक्षा जाँच के अंतर्गत 'ईमानदारी' का आकलन करने के लिए विकसित किया गया था वह वृत्त पहेली परीक्षण है। बच्चे से अपनी आँखें बंद करके दस छोटे-छोटे अनियमित रूप से बनाए गए वृत्तों में प्रत्येक में निशान लगाने के लिए कहा जाता था। तेरह से अधिक अंक प्राप्त करने को देखने के गवाह के रूप में माना जाता था। संयुक्त राज्य अमेरिका की सामरिक सेवा के द्वारा विकसित किए गए आवश्यकतानुरूप दबाव परीक्षण में परीक्षार्थी को दो ऐसे सहायकों के साथ कार्य को पूरा करना होता था जो सहयोग नहीं करते हैं।

आवश्यकतानुरूप परीक्षणों का एक अन्य प्रकार एक यंत्र के रूप में नेतृत्वविहीन समूह है जो सामूहिक कार्य, उपायकुशलता, पहल करना, नेतृत्व आदि के अनुमान के लिए है। रोल प्ले का भी आवश्यकतानुरूप परीक्षण के रूप में प्रयोग किया जाता है। शिक्षक एवं परामर्शदाता परिस्थिति एवं सेवार्थी/विद्यार्थी की आवश्यकताओं के संदर्भ में व्यवहार के पहलुओं का आकलन करने के लिए आवश्यकतानुरूप परीक्षणों का निर्माण कर सकते हैं जिन व्यवहारों का वे आकलन करना चाहते हैं।

आप व्यक्तित्व के आकलन के विभिन्न उपागमों के विषय में पढ़ चुके हैं। इनमें से प्रत्येक उपागमों के कुछ निश्चित गुण एवं अवगुण हैं जिन्हें अगले भाग में समझाया गया है।

विभिन्न उपागमों के लाभ एवं हानि

व्यक्तित्व आकलन के विभिन्न उपागमों से प्रत्येक के कुछ लाभ एवं हानि हैं। एक परामर्शदाता के रूप में आपको परिस्थिति एवं विद्यार्थियों की आवश्यकताओं के अनुसार सोच समझकर विवेकपूर्ण निर्णय लेना होता है।

व्यक्तित्व परीक्षणों के व्यापक एवं विविध प्रतिदर्शों में मानकीकरण की ताकत है इसलिए ये अधिक वस्तुनिष्ठ हैं। ये विश्वसनीय एवं वैध प्राप्तांकों को उत्पन्न करते हैं। व्यक्तित्व परीक्षणों विशेष रूप से प्रक्षेपीय प्रकार में आवश्यकता होती है कि शिक्षक/परामर्शदाता के पास इनके उपयोग में तकनीकी शैक्षिक योग्यता एवं अनुभव दोनों हों। आंकड़ों को सारगर्भित बनाने के लिए परीक्षणों हेतु सांख्यिकीय तकनीकों में अत्यधिक विशेषज्ञता तथा अन्तर्निहित मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों की जानकारी की आवश्यकता होती है। बहुत से परामर्शदाता के पास इनका उपयुक्त ज्ञान नहीं हो सकता है। आवश्यकतानुरूप परीक्षणों में आवश्यकता होती है कि परामर्शदाता एक उपयुक्त एवं प्रासंगिक रूप से सार्थक परिस्थिति की संरचना करने में समर्थ हों और पक्षपातरहित ढंग से सेवार्थी के सामने इसे प्रस्तुत करें। उसे ध्यानपूर्वक सेवार्थी के प्रति क्रियात्मक तरीके से अवलोकन करना चाहिए, इसे लिखना चाहिए और तब व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्धारण के संबंध में जैसे परिपक्वता का आवश्यक स्तर, वचनबद्धता आदि को ध्यानपूर्वक सुस्पष्ट तरीके से समझाना चाहिए। अन्य उपागम प्रयोग करने में आसान हैं लेकिन नियंत्रण, मानकीकरण, विश्वसनीयता एवं वैधता की सीमा से प्रभावित होते हैं।

2.4.5 व्यक्तित्व आकलन का प्रयोग कब करना चाहिए

एक व्यक्तित्व आकलन परीक्षण का आयोजन करते समय आपको दो कारकों पर विचार करना होगा : (1) इसका प्रयोग कब करें और (2) आप इसका प्रयोग क्यों कर रहे हैं। विद्यार्थियों के लिए व्यक्तित्व का आकलन क्यों के मुद्दे को व्यक्तित्व का आकलन कब से भी सम्बन्धित किया जाता है। विद्यार्थी विविध पारिवारिक पृष्ठभूमि से आते हैं और विद्यालय के विभिन्न स्तरों पर होते हैं। उनकी आवश्यकताएँ एक दूसरे से अलग हो सकती हैं और इस तरह आकलन की आवश्यकताओं को विभिन्न प्रकार से करना होता है।

एक व्यक्तित्व आकलन को आयोजित करते समय निम्नलिखित कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए –

- 1- जब कुछ विद्यार्थियों/समूहों के लिए आवश्यकता हो या इसे विद्यालय के कैलेंडर में एक आवर्ती गतिविधि के रूप में बनाया जा सकता है। उदाहरणार्थ – प्राथमिक विद्यालय से उच्चतर माध्यमिक वर्षों की यात्रा में नियमित रूप से व्यक्तित्व आकलन परीक्षण बनाना आपके लिए उपयोगी हो सकता है क्योंकि इस

अवस्था में विद्यार्थियों को सामान्य रूप में किशोरावस्था के विविध प्रकार के दबावों का सामना करना पड़ता है (विकासात्मक, संबंधात्मक, विद्यालयी उपलब्धि) तथा सहायता की आवश्यकता होती है।

- 2- प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने वाले विद्यार्थियों को विद्यालयी प्रदर्शन को कायम रखने के अलावा घर एवं विद्यालय में समायोजन की समस्या का सामना करना होता है।
- 3- व्यक्तित्व का आकलन आपको विद्यार्थियों के कक्षा-कार्य (शैक्षिक), साथियों /समकक्षी (सामाजिक, सांवेगिक) एवं पारिवारिक सदस्यों के साथ समायोजन हेतु कठिनाइयों/ अनुकूलन तथा वृद्धि से संबंधित आवश्यकताओं (शारीरिक / स्वास्थ्य) का सामना करने में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करने में सहायता कर सकता है।
- 4- आप कक्षा -X के उन विद्यार्थियों के नियमित आकलन के बारे में भी विचार कर सकते हैं जिन्हें अपने व्यक्तिगत गुणों के समानान्तर विषयों का चयन करने में निर्णय लेने की आवश्यकता होती है। वे व्यक्तित्व आकलन से लाभ उठा सकते हैं। यह कक्षा XII की पढ़ाई पूरी कर रहे विद्यार्थियों के लिए सहायक हो सकता है क्योंकि विद्यालय की अन्तिम कक्षा में बेहतर प्रदर्शन करने के लिए तथा एक उपयुक्त भावी कैरियर पथ का चयन करने के लिए उनके ऊपर अत्यधिक दबाव होता है। जैसा कि आप जानते हैं कि उनके द्वारा किया गया चयन उनके व्यक्तित्व विशेषकों तथा इनकी अन्योन्यक्रिया उनकी बुद्धि एवं अभिभावकों/समकक्षी साथियों /शिक्षकों से दबाव के द्वारा प्रभावित होता है जो हमेशा उनके व्यक्तित्व के स्वभाव के समनुरूप नहीं होता है।

व्यक्तित्व आकलन निरोधक नहीं हैं, वे बेहतर निर्णय लेने में अवश्य सहायता करते हैं। जैसा कि ऊपर उल्लेख किया जा चुका है कि बहुत से मामले में आकलन पहचाने गए समायोजन समस्याओं के प्रति प्रतिक्रियाशील होते हैं और पुनर्समायोजन में सहायता के लिए प्रयोग किए जाते हैं।

व्यक्तित्व का आकलन वैयक्तिक-सामाजिक एवं कैरियर के विकास के लिए मार्गदर्शन हेतु एक नियमित सतत प्रक्रिया के रूप में हो सकता है जो समस्याओं को रोकने में सहायता कर सकता है। यह उपागम अधिक पूर्व सक्रिय एवं विकासात्मक है। अन्य साधारण उपागम समस्यात्मक परिस्थितियों में आकलन करना है।

आत्म निरीक्षण अभ्यास – 1

नीचे दिए गए विकल्पों से खाली स्थान भरिए –

अ- झूठ पैमाना, ब- शैक्षिक स – आवश्यकतानुरूप, द- मौन स्वीकृति, क- प्रक्षेपीय

- 1- व्यक्तित्व आकलन विद्यार्थियों की -----वैयक्तिक – सामाजिक एवं कैरियर आवश्यकताओं को समझने में सहायक हो सकता है।
- 2- आत्म-प्रतिवेदन तालिकाओं में धोखा देने एवं ----- समस्या होती है।
- 3- ----- सामाजिक रूप से वांछनीय प्रतिक्रिया को व्यक्त करने की आदत का पता लगाने में सहायता करता है।

4- ----- तकनीक व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं को प्रकट करता है।

5- ----- परीक्षण में सेवार्थी को वास्तविक जीवन के सदृश्य समान परिस्थिति में डाला जाता है।

2.5 एक उपयुक्त व्यक्तित्व पैमाने के चयन में कुछ ध्यान देने योग्य तथ्य

अब तक आप समझ गए होंगे कि एक परामर्शदाता के लिए विद्यार्थी के व्यवहार को समझना जटिल है। विद्यार्थियों की व्यक्तिगत ताकत एवं कमजोरी को अच्छी तरह से समझने के लिए सभी संभव स्रोतों से आंकड़ों को प्राप्त करने की आवश्यकता होती है। आपको स्मरण करने की आवश्यकता है कि गुणात्मक आँकड़ा परीक्षण आंकड़े की तरह ही सुस्पष्ट एवं सहायक हो सकता है जो आपके द्वारा परीक्षण के लिए भाग-दौड़ को अनावश्यक बनाता है जब तक कि आपकी परीक्षण परिस्थिति में इस प्रकार के परीक्षण की आवश्यकता न हो। गुणात्मक आंकड़ों के लिए आपके स्रोतों में विद्यालयी रिकार्ड्स, शिक्षकों के प्रतिवेदन एवं आकलन, शिक्षक एवं परिवार का प्रतिवेदन तथा अवलोकन हो सकता है। आप शिक्षकों, समकक्षी साथियों तथा पारिवारिक सदस्यों के साथ परिचर्चा कर सकते हैं जो संबंधित विद्यार्थी को जानते हैं।

क्रियाकलाप – 2

व्यवहारात्मक एवं समायोजन समस्या वाले कम से कम दो विद्यार्थियों (कक्षा के या बाहर के विद्यार्थी) की पहचान कीजिए जिन्हें परामर्श की आवश्यकता है। अवलोकन / परिचर्चा / साक्षात्कार आदि के आधार पर व्यक्तित्व आकलन एवं उपकरणों के क्षेत्र की पहचान कीजिए। (उदाहरण –निम्न स्तरीय आत्म-सम्मान, अध्ययन एवं शिक्षकों के प्रति नकारात्मक अभिवृत्ति, समकक्षी साथियों के साथ संबंध में समस्या और इसी प्रकार की अन्य समस्याएँ)। 300 शब्दों में अपनी योजना के समर्थन में स्पष्टीकरण दीजिए।

आपको यह दिमाग में रखने की आवश्यकता है कि एक व्यक्तित्व परीक्षण का आयोजन करना और उसमें प्राप्त अंकों का सुस्पष्ट तरीके से व्याख्या करना एक उच्च स्तरीय तकनीकी कार्य है जिसमें व्यक्तित्व सिद्धान्तों की मूलभूत जानकारी के अलावा परीक्षण सिद्धान्तों में भी अच्छी तरह से प्रशिक्षित होना आवश्यक होता है। विभिन्न आयु समूहों, लिंग, सेवार्थी की आचार संहिता एवं सांस्कृतिक विभिन्नता के लिए प्रयोग किए जाने वाले परीक्षणों, तकनीकी नियमावली, मापदण्डों को देखिए क्योंकि ये सब परीक्षण की सुस्पष्ट व्याख्या से सम्बन्धित होते हैं। यदि परीक्षण केवल अंग्रेजी में उपलब्ध है तो आपको सेवार्थी की अंग्रेजी भाषा में प्रवीणता को सुनिश्चित करना चाहिए। आपको नियमावली के मुख्य बिंदुओं पर प्रकाश डालते हुए ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए (समय, प्रतिक्रिया का प्रकार, पद्धति, प्राप्तांक, अपरिष्कृत अंको को मानक अंको में बदलना, आदि)। आप जानते हैं कि परिस्थिति विज्ञान संस्कृति को स्वरूप प्रदान करता है जो बदले में व्यक्तित्व के विकास में असंगति की तरफ अग्रसर सामाजीकरण तरीकों को स्वरूप प्रदान करता है। विभिन्न संस्कृतियों से लोग चाहे वे सभी अंग्रेजी बोलते हैं, वह उनके प्रयोग करने के तरीके के अनुसार शब्दों के विभिन्न अर्थों को प्रकट करते हैं। यह भी सत्य है कि कुछ व्यक्तित्व विशेषक विश्वव्यापी हैं जबकि कुछ संस्कृति विशेष होते हैं और पूर्णतया संस्कृति से जुड़े हुए या संस्कृति से मुक्त व्यक्तित्व परीक्षण करना तकरीबन असंभव है।

एक विशिष्ट व्यक्तित्व परीक्षण का चयन करना कठिन है परन्तु यह अत्यधिक प्रासंगिक है क्योंकि विभिन्न परीक्षण कुछ न कुछ अलग उत्पन्न करते हैं और इस प्रकार सूचनाएँ अतिव्यापी होती हैं। कुछ सीमित जानकारी

उपलब्ध कराते हैं (जैसे –आईसेक व्यक्तित्व तालिका 1991) जबकि सोलह व्यक्तित्व कारक (कैटेल, 1993) के समान कुछ परीक्षण अत्यधिक जानकारी उपलब्ध कराते हैं और कुछ को समझना बहुत तकनीकी है। वास्तव में जितनी अधिक सूचनाएँ उपलब्ध होती हैं आप उतने अधिक क्षेत्रों में सहायता प्रदान करने में सफल हो सकते हैं। आपको इस प्रकार के परीक्षण का चयन करना चाहिए जो सेवार्थी की आयु, लिंग से संबंधित हो और संस्कृति के प्रति आपत्तिजनक न हो। परीक्षण ऐसी भाषा में होना चाहिए। परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता उपयुक्त रूप से उच्च स्तरीय होनी चाहिए और इसे अच्छी तरह से मानकीकृत होना चाहिए जिसे व्यक्ति अच्छी तरह से समझ सकें और उनमें मापदण्ड निहित हों। आपको परीक्षण की सीमितता के विषय में भी जानकारी होनी चाहिए, विशेष रूप से वह अवस्था जिसमें यह आपको या परीक्षण किए जाने वाले व्यक्ति को भ्रम में डाल सकती है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -2

निम्नलिखित कथनों में सही/गलत का निशान लगाइए :

- 1- व्यक्तित्व परीक्षण प्राप्तियों की सुस्पष्ट व्याख्या करने में व्यक्ति की संस्कृति को समझना आवश्यक होता है।
सही/गलत
- 2- व्यक्तित्व आकलन स्वयं में विरोधक नहीं हैं।
सही/गलत
- 3- गुणात्मक आंकड़ा व्यक्तित्व के आकलन के लिए कोई भी जानकारी उपलब्ध नहीं कराता है।
सही/गलत
- 4- व्यक्तित्व पार्श्विका (**Profiles**) में सेवार्थी/विद्यार्थियों के व्यवहार को बदलने के लिए निदान के साथ ही साथ उपचारात्मक तरीके भी शामिल हैं।
सही/गलत

2.6 व्यक्तित्व पार्श्विका (**Profiles**) को समझना एवं प्रयोग करना

एक व्यक्तित्व पार्श्विका की तैयारी चुनौती भरा कार्य है। इसमें आपको परीक्षण सिद्धांत की कुछ जानकारी, आकलन के विभिन्न प्रकारों का ज्ञान, प्रायोगिक अनुभव और उपलब्ध आंकड़े से उपयुक्त तथ्य निकालने के लिए समझ का होना आवश्यक होता है।

सामान्य तौर से एक अच्छी व्यक्तित्व पार्श्विका की तैयारी में व्यक्तित्व के अनेकों आयामों को समाहित करते हुए विभिन्न प्रकार की सूचना के एकीकरण की आवश्यकता होती है (आप इसके बारे में प्रायोगिक कार्य में विस्तार से पढ़ेंगे)। एक विद्यार्थी की व्यक्तित्व पार्श्विका को उसकी ताकत एवं कमजोरी को सूचीबद्ध करते हुए सम्पूर्ण नैदानिक प्रतिवेदन तथा उसके व्यवहार में परिवर्तन लाने के लिए सुझाव दिए गए संभावित उपचारी तरीकों के रूप में देखा जाना चाहिए। यह समग्र रूप में तथा उद्देश्यपूर्ण होना चाहिए। इसे विद्यार्थी की विशिष्टता को बाहर निकालना चाहिए और इसका प्रयोग करने के लिए उन लोगों के पास संप्रेषित करना चाहिए जहाँ वह अपनी योग्यता का अधिकतम रूप में उपयोग कर सकता है और अत्यधिक प्रभावी ढंग से कार्य कर सकता है। इसमें व्यक्ति के पृष्ठभूमि की जानकारी, प्रतिभा/शैक्षिक उपलब्धि, शौक एवं अभिरुचि, शानदार पुरस्कारों का विशेष

उल्लेख या विद्यालयी रिकार्ड के अनुसार दुर्व्यवहार, परीक्षण के अंक (यदि कोई मनोवैज्ञानिक परीक्षण किया गया है), प्रदर्शन की अपेक्षाएँ (पारिवारिक, वैयक्तिक), इनको प्राप्त करने के लिए बनाई गई योजनाएँ और इसको तैयार करने वाले व्यक्ति का एक संक्षिप्त अवलोकन/टिप्पणी शामिल होना चाहिए।

आपके लिए यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि सभी आँकड़ों को विश्वसनीयता की आवश्यकता होती है। आपको साधारण, समझने योग्य भाषा, किसी व्यक्तिगत एवं सामाजिक पक्षपात से रहित तरीके से विद्यार्थी को यह रिपोर्ट बतानी चाहिए। आपको अपने व्यवहार वैचित्र्य एवं शारीरिक भाषा के प्रति सावधान रहना है। व्यक्तिगत परामर्श में ये बहुत महत्वपूर्ण हैं। वही आचार संहिता निर्देशन जिसका पहले उल्लेख किया जा चुका है उसका विश्वसनीय एवं संभवतः हानिकारक सूचना प्रदान करते समय सदैव पालन किया जाना चाहिए। केवल सकारात्मक शब्दावली का प्रयोग करना चाहिए ताकि विद्यार्थी के आत्म-सम्मान को कोई हानि न हो। केवल सहायक सकारात्मक तरीकों से सलाह प्रदान करना स्मरण रखिए।

आपको एक पर्यवेक्षक की देखरेख में या प्रायोगिक प्रशिक्षण के समय एक समूह में कुछ पार्श्विकाओं तथा प्रतिवेदनों को तैयार करने का अभ्यास करना चाहिए जहाँ आप अपने अवलोकन की सहभागिता कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में आप अपनी भूमिका की केंद्रीयता का अन्वेषण भी कर सकते हैं।

2.7 सारांश

व्यक्तित्व में व्यक्ति के सांवेगिक, मनोवृत्तिक, अन्तःवैयक्तिक, अभिवृत्तीय और यहाँ तक की नैतिक पहलू भी शामिल होते हैं। कुछ शोधकर्ताओं ने बुद्धि को भी व्यक्तित्व के एक भाग के रूप में शामिल किया है। व्यक्तित्व एक व्यक्ति की विशेषताओं के विशिष्ट संयोजन से संबंधित है जो व्यक्ति को एक विशेष प्रकार से व्यवहार करने की तरफ प्रवृत्त करते हैं। व्यक्तित्व आकलन शैक्षिक, करियर, व्यक्तिगत तथा सामाजिक परामर्श हेतु महत्वपूर्ण है।

व्यक्तित्व बहुत से आकलन के उपागम हैं। ये व्यक्तित्व विभिन्न सिद्धांतों से विकसित हुए हैं। आकलन को एक व्यक्ति से आंकड़े प्राप्त करने के ढंग के संदर्भ में वर्गीकृत किया जा सकता है। आत्म-प्रतिवेदन मापक, प्रक्षेपीय तकनीक और व्यवहारात्मक आकलन व्यक्तित्व पैमाने हैं जो व्यक्तियों से उनके विशिष्ट व्यवहार के विषय में प्रश्नों/कथनों की एक श्रृंखला का उत्तर पूछते हैं। प्रक्षेपीय तकनीकों को व्यक्तित्व के अचेतन पहलुओं को प्रकट करने में प्रभावी समझा जाता है। रोशार्क मसिलक्ष्य परीक्षण तथा आत्म-बोध विषयक परीक्षण सर्वाधिक प्रचलित हैं। व्यवहार का अवलोकन, शिक्षकों का प्रतिवेदन, साक्षात्कार तथा आवश्यकतानुकूल परीक्षण व्यवहारात्मक विश्लेषण के आधार पर कार्य करते हैं।

विविध आकलन उपागमों के गुण एवं अवगुण एक उपयुक्त तकनीक के चयन तथा विशेष रूप से एक व्यक्तित्व परीक्षण के प्रयोग करने में जल्दबाजी में न लेने वाले निर्णय हेतु बल देते हैं। यहाँ तक कि जब परीक्षण किया जाता है तब परामर्शदाता सेवार्थी की आयु, लिंग, सामाजिक समूह, संस्कृति, भाषा को ध्यान में रखते हुए इसकी सुस्पष्ट व्याख्या कर सकता है तथा गैर-परीक्षण सूचना के साथ-साथ परीक्षण के अंको का प्रयोग कर सकता है।

आँकड़ों की विश्वसनीयता को कायम रखने के लिए सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। परीक्षण के परिणाम का प्रतिवेदन एवं संप्रेषण एक कुशल कार्य है और सावधानीपूर्वक किया जाना चाहिए जिससे कि सेवार्थी के आत्म-सम्मान को किसी भी प्रकार से चोट न पहुँचे।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

- 1- विद्यालयी परिस्थिति में परामर्श हेतु व्यक्तित्व आकलन की आवश्यकता एवं महत्त्व के विषय में लिखिए।
- 2- व्यक्तित्व के आकलन के तीन प्रमुख उपागमों की सूची बनाइए।
- 3- व्यक्तित्व के आकलन के लिए आत्म - प्रतिवेदन एवं प्रक्षेपीय तकनीकों के लाभ और हानि की सूची बनाइए।
- 4- एक उपयुक्त व्यक्तित्व परीक्षण में तीन विचारों का विवरण दीजिए।
- 5- व्यक्तित्व आकलन आकंड़ों के प्रयोग एवं यंप्रेषण में सावधानियों पर चर्चा कीजिए।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु

- 1- आपके उत्तर में निम्नलिखित बिंदु शामिल होने चाहिए –
 - व्यक्तित्व आकलन और शैक्षिक कैरियर तथा वैयक्तिक – सामाजिक परामर्श हेतु इसका महत्त्व।
 - विद्यार्थी की कठिनाइयों / समायोजन/समायोजी-शैली आदि में अंतर्दृष्टि रखना।
 - समस्या को रोकने के लिए पूर्व-प्रवृत्त एवं विकासात्मक उपागम।
- 2- व्यक्तित्व का आकलन करने के मुख्य उपागम हैं -
 - आत्म - प्रतिवेदन पैमाना
 - प्रक्षेपीय तकनीक
 - व्यवहारात्मक आकलन
- 3- निम्नलिखित की व्याख्या कीजिए –
 - आत्म —प्रतिवेदन पैमाना आकस्मिक अवलोकन की तुलना में अधिक सुस्पष्ट है। जानबूझकर धोखा देना(अच्छे और खराब रूप में धोखा देना) तथा मौन स्वीकृति आत्म-प्रतिवेदन पैमाने से सम्बन्धित मुख्य समस्याएँ हैं।
 - प्रक्षेपीय तकनीक व्यक्तित्व के एक समग्र चित्र पर ध्यान केन्द्रित करती है। तथापि, वे नियंत्रण, मानकीकरण, विश्वसनीयता एवं वैधता की सीमा से प्रभावित होते हैं।
- 4- निम्नलिखित विचारों की व्याख्या कीजिए -
 - सेवार्थी की आयु, लिंग एवं सांस्कृतिक उपयुक्तता के साथ परीक्षण की प्रासंगिकता।
 - उपयुक्त होने के लिए परीक्षण की विश्वसनीयता एवं वैधता।

5- कुछ सावधानियाँ हैं –

- आंकड़ों को विश्वसनीय रखना ।
- संप्रेषण के पहले अच्छे आत्मीय संबंध बनाना ।
- सकारात्मक शब्दावली का प्रयोग करते हुए बिना किसी पक्षपात (व्यक्तिगत या सामाजिक) के संप्रेषित करना ।
- आप स्वयं की शारीरिक भाषा और व्यवहार वैचित्र्य के प्रति सावधान रहिए ।
- संबंधित विद्यार्थी की भावनाओं एवं संवेगों के प्रति संवेदनशील रहिए जिससे उसके सम्मान एवं स्वाभिमान को कायम रखा जा सके ।

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिंदु

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -1

1- ब, 2- द, 3. अ, 4- क, 5. स

आत्म-निरीक्षण अभ्यास – 2

1- सही, 2- सही, 3- गलत, 4. सही

संदर्भ पुस्तकें –

- Anastasi, A. 1990. Psychological Testing. McMillan, New York.
- Cattell, R.B., Cattell, A. K., & Cattell, H.E. 1993. Sixteen Personality Factor Questionnaire, Fifth Edition, Institute for Personality and Ability Testing, Champaign.
- Kent, G.H. & Rosanoff, A.J. 1910. A study of association in insanity. American Journal of Insanity. 67,37-96,317-390.
- Rotter, J.B. & Rafferty, J.E. 1950. Manual: The Rotter Incomplete Sentences Blank, Psychological Corporation., San Antonio, TX.
- Hartshorne, H., & May, M.A. 1928. Studies in deceit. Macmillan, New York

पठनीय पुस्तकें

- Baron, R.A. 2001. Psychology. Pearson Education (Singapore) Ltd., Delhi.
- Cervone, D. and Shoda, Y. 1999. The Coherence of Personality. Guilford, New York.

- Cunn, C. R. and Rieke, M. L. 1994. The 16 PF Fifth Edition Technical Manual. Institute for Personality and Ability Testing Inc., Champaign, Illinois.
- Edwards, A.L. 1959. Edwards Personal Preference Schedule Manual. The Psychological Corporation, San Antonio.
- Eysenck, H. J. 1991. Dimensions of Personality: The Bio-social Approach to Personality . In Strelau, J. and Angleitner, A. (eds.). Explorations in Temperament: International perspectives on Theory and Measurement. Plenum, London.
- Holland, J.L. 1985. Making Vocational Choices: A Theory of Vocational Personalities and Work Environment. Prentice-Hall, Englewood Cliffs, N.J.
- Kreitler, S. and Kreitler, H. 1990. The Cognitive Foundations of Personality Traits. Plenum Press, New York.
- McCrae, R.R. and Costa, P.T. Jr. 1997. Personality trait structure as a human universal. *American Psychologist*. 52. 509-516.
- Myers, I. B. and MaCaulley, M. H. 1985. Manual: A Guide to the Development and Use of the Myers Briggs Type Indicator. Consulting Psychologists Press. Palo alto, CA.

सर्जनात्मकता की प्रकृति एवं आकलन

- 3.0 परिचय**
- 3.1 उद्देश्य**
- 3.2 सर्जनात्मकता की प्रकृति**
 - 3.2.1 उत्पाद
 - 3.2.2 प्रक्रिया
 - 3.2.3 व्यक्ति
- 3.3 सर्जनात्मकता सम्बन्धी भ्रांतियाँ**
- 3.4 सर्जनात्मकता का आकलन**
 - 3.4.1 आकलन हेतु सुविधापूर्ण वातावरण की पूर्व आवश्यकता
- 3.5 सर्जनात्मक संभावनाओं के कुछ संकेतक – सर्जनात्मक बच्चों हेतु चेक लिस्ट**
- 3.6 आकलन तकनीकें**
 - 3.6.1 आकलन की परीक्षण रहित तकनीकें
 - 3.6.2 सर्जनात्मकता के आकलन के मानक परीक्षण
 - 3.6.2.1 सर्जनात्मक परीक्षणों की आलोचना
 - 3.6.2.2 सर्जनात्मक परीक्षणों के उपयोग में सावधानियाँ
- 3.7 अन्य तरीकें तथा उपकरण**
- 3.8 आकलन आंकड़ों का उपयोग**
- 3.9 सारांश**
 - आत्म-मूल्यांकन अभ्यास
 - आत्म-मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिंदु
 - संदर्भ पुस्तकें
 - पठनीय पुस्तकें

3.0 परिचय

आइए हम उस व्यक्ति के बारे में सोचें जिसने पहली बार, बीज बोने या पहिए के अविष्कार के बारे में सोचा होगा। वे ऐसे व्यक्ति थे जो प्रतिदिन की गतिविधियों को करने के सामान्य तरीकों से सन्तुष्ट नहीं थे, जिन्होंने कुछ नया करने का सोचा। वे वास्तव में सर्जनाशील व्यक्ति थे। उन्हीं के समान बहुत से व्यक्तियों ने अविष्कार किए जिसने मानव जीवन की विभिन्न क्षेत्रों, चाहे विज्ञान, तकनीकी, चित्रकारी, काव्य के क्षेत्र या कला के सभी प्रकार जिनका आज हम आनंद लेते हैं, में प्रगति को अग्रसर किया।

बच्चों में सर्जनात्मकता का विकास लंबे समय से शिक्षा का आवश्यक लक्ष्य था। परन्तु इसमें नवीनतम क्या है, यह अनुभूति कि सर्जनात्मकता कुछ चुने हुए लोगों द्वारा अभिव्यक्त नहीं होती वरन् सभी बच्चों में अन्तर्निहित है और इसकी अभिव्यक्तियाँ भिन्न हैं। सर्जनात्मक संभावनाओं को विद्यालय अवस्था और उपयुक्त अवसर में पहचाना तथा प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए जिससे यह सुसुप्त ना रह जाए।

इस यूनिट में, आप सर्जनात्मक की प्रकृति तथा हमारे संसार में सर्जनात्मकता की भूमिका के बारे में जानेंगे। लोग सर्जनात्मकता के साथ विभिन्न अर्थ जोड़ देते हैं। सर्जनात्मकता के साथ अनेक भ्रान्तियां जुड़ी हैं। इसीलिए सर्जनात्मकता को पहचानने हेतु किसी भी प्रयास के लिए सर्वप्रथम शैक्षिक सन्दर्भ में सर्जनात्मकता के सिद्धांत को समझने की आवश्यकता है। सर्जनात्मक संभावनाओं को पहचानने तथा आकलन हेतु अक्सर उपयोग की जाने वाली आधारभूत पूर्वधारणाओं तथा तकनीकों के बारे में सीखेंगे और यह भी कि किस प्रकार आकलन आंकड़ों का उपयोग सर्जनात्मकता के पोषण हेतु उपयोगी अन्तर्दृष्टि प्रदान कर सकता है। अतः आकलन का उद्देश्य सभी बच्चों की सर्जनात्मक संभावनाओं के निर्देशन की सम्पूर्ण भूमिका के संदर्भ में समझा जाना चाहिए।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के पश्चात आप—

- सर्जनात्मकता की प्रकृति, अर्थ तथा महत्त्व को समझने में सक्षम होंगे।
- सर्जनात्मकता के आकलन की अन्तर्निहित संभावनाओं की सराहना में समर्थ होंगे।
- कक्षाकक्ष स्थितियों में सर्जनात्मकता की विभिन्न अभिव्यक्तियों को पहचानने में समर्थ होंगे।
- सर्जनात्मकता की संभावनाओं के आकलन के परीक्षण एवं अपरीक्षण के तरीकों को समझने में सक्षम होंगे।
- सर्जनात्मकता के पोषण हेतु आकलन आंकड़ों के उपयोग की अन्तर्दृष्टि के विकास में समर्थ हो सकेंगे।

3.2 सर्जनात्मकता की प्रकृति

पिछले 40 वर्षों से भी अधिक समय से शोधार्थी सर्जनात्मकता की प्रकृति एवं इसके स्रोतों पर गहराई से विमर्श कर रहे हैं कि यह एक प्रक्रिया है या व्यक्ति अथवा वातावरण है। कुछ अनुसन्धानकर्त्ताओं द्वारा सर्जनात्मकता को एक मानसिक प्रक्रिया के रूप में वर्णित किया गया है जबकि अन्य लोगों के द्वारा व्यक्तिगत गुणों के समूहों के रूप

में जिसका परिणाम सर्जनात्मक व्यवहार या विलक्षण, नवीन उत्पाद होता है। कुछ अन्य लोगों ने सर्जनात्मकता का श्रेय सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हेतु महत्वपूर्ण एक विशेष वातावरण को दिया है।

सर्जनात्मकता की समझ की इन भिन्नताओं के बावजूद इन सभी का सामान्य तत्व किसी नवीन एवं विलक्षण वस्तु का विकास है। कुछ नयी एवं विलक्षण वस्तु सामान्यतः एक उत्पाद है जो किसी व्यक्ति की विचार प्रक्रिया से आरंभ होने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। उत्पाद को प्रक्रिया या व्यक्ति से विभाजित करने वाली कोई स्पष्ट रेखा नहीं है। मात्र अध्ययन हेतु इनको अलग-अलग विमर्श किया गया है। आइए हम सर्जनात्मकता को उत्पाद, प्रक्रिया एवं व्यक्ति के परिपेक्ष्य से समझने का प्रयास करें।

3.2.1 उत्पाद

हम अक्सर सर्जनात्मकता को वास्तविक उत्पाद के रूप में सोचते हैं चाहे ये एक पेंटिंग, एक कविता, एक सिद्धांत, एक कहानी या कला का एक नमूना, आदि हो। उत्पाद सर्जनात्मक कहलाता है, यदि यह नया एवं उपयोगी हो। प्रत्येक वर्ष उपकरणों, कारों तथा स्कूटरों के नये मॉडलों का कुछ परिवर्तनों के साथ उद्भव होता है परन्तु क्या हम इन्हें सर्जनात्मक कहते हैं? उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति जिसने प्रथम बार टेप रिकार्डर तथा ट्रांजिस्टर का मेलकर टू इन वन बनाया, उसने सर्जनात्मक कार्य किया। फैक्स मशीन एक दूसरा उदाहरण है जो फोटोकॉपियर तथा टेलीफोन का मेल है जहाँ फोटो सिगनलों को टेलीफोन द्वारा भेजा जाता है। अतः किसी वस्तु या विचार की नवीनता और उपयोगिता या मूलभूत परिवर्तन जो सामान्य विचारों से परे हो, अंतिम उत्पाद को जाँचने की महत्वपूर्ण कसौटी है।

छोटी उम्र में बच्चे से किसी साकार वस्तु के निर्माण की आशा नहीं की जा सकती। अतः हम उत्पादित विचारों या समाधानों को सर्जनात्मक उत्पाद मान सकते हैं। इस अर्थ में एक बच्चा जो कुछ भी करता या कहता है, को सर्जनात्मक माना जा सकता है, यदि वह दो कसौटियों पर खरा उतरे। पहला, वह उसी आयु वर्ग के अन्य बच्चों से या उस बच्चे ने पहले जो किया हो या बच्चे ने जो कुछ भी सुना या देखा हो, उससे पूरी तरह से वास्तविक रूप में भिन्न हो। हालांकि मात्र भिन्न होना ही महत्वपूर्ण नहीं है। इसे लक्ष्य प्राप्ति हेतु उपयोगी भी होना चाहिए, जो किन्हीं तरीकों में अर्थपूर्ण या आकर्षक हो, 'सर्जनात्मक' शब्द का सकारात्मक अर्थ है। अवैध या अनैतिक व्यवहार भी असामान्य होता है परन्तु सर्जनात्मकता का अध्ययन करने वाले अधिकतर मनोवैज्ञानिकों द्वारा उपयुक्तता तथा सामाजिक मूल्यों का महत्वपूर्ण कसौटी के रूप में विचार किया गया। उपयुक्तता के मापदण्ड को ऐसे व्यवहार तथा कार्यों को अस्वीकार करने हेतु उपयोग किया जाता है जो मात्र अनोखे तथा विषम हों। विद्यालयी परिस्थितियों में यदि हम गणित, विज्ञान तथा व्याकरण में नवीन विचारों तथा हलों को इंगित करें तो हम उपयुक्तता के बारे में बात कर सकते हैं। परन्तु कला, संगीत, कहानी सुनाना और दिवास्वप्निल नाटकों के विषय में तथा कुछ विशेष क्षेत्रों जैसे संगीत या दिवास्वप्न नाटकों में इसी तरीके से उपयुक्तता की बात करना संभव नहीं है। यदि कोई बच्चा नूतन व्यवहार का प्रदर्शन करता है और उसकी गतिविधियाँ किसी रूप में सुरुचिपूर्ण रूप से प्रसन्ता प्रदान करे तो कह सकते हैं कि यह उपयुक्त है।

सर्जनात्मक कार्य को परखने हेतु अनुभवों तथा संदर्भों पर भी विचार करना चाहिए। यदि 'अ' ऐसी प्रतिक्रिया देता है जो उसकी उम्र के अन्य लोगों में पहला हो तो इसे सर्जनात्मक कहा जा सकता है। परन्तु यदि उसने इस

प्रकार का उत्पाद पहले देखा हो तो उसकी प्रतिक्रिया या विचार को अनुकरण का परिणाम माना जाएगा चाहे वह कितना भी नवीन क्यों ना प्रतीत हो।

निर्णय लेने की दूसरी कसौटी है कि क्या उत्पाद इतना अलग है कि इसे देखने पर तत्काल आश्चर्य की प्रतिक्रिया हो। इस प्रतिक्रिया पर कोई निर्णय नहीं दिया जा सकता क्योंकि यह उत्पाद की मौलिकता पर स्वाभाविक रूप से चौंकना या साँस रुक जाना है। यह तत्काल आश्चर्य अधिकतर 'आहा!' के रूप में प्रदर्शित होता है। अतः उत्पाद या विचार के सर्जनात्मक होने का निर्णय करने का कोई एक तरीका नहीं है।

3.2.2 प्रक्रिया

सर्जनात्मकता को समझने का एक अन्य तरीका इस बात पर जोर देता है कि कुछ सर्जनात्मक उत्पादन में वास्तव में क्या होता है या किसी सर्जनात्मक विचार के निर्माण में क्या विचार प्रक्रियाएँ सम्मिलित होती हैं।

सर्जनात्मक प्रक्रिया का आरम्भ बिंदु कुछ नया सर्जन करने की आवश्यकता है, चाहे वह विचार सिद्धांत या उत्पाद हो। प्रत्येक को सर्जन करने की आवश्यकता का अनुभव नहीं होता।

सर्जनात्मक प्रक्रिया की गति में संवेदी खाली स्थान स्थित होते हैं जिनमें व्यक्ति खाली स्थानों को भरने व छोटे तत्वों को परिपूरित करने का प्रयास करता है। सर्जनात्मक उत्पादन हेतु ध्यान देने तथा आसामान्य एवं कर्मियों के प्रति संवेदनशीलता की क्षमता महत्वपूर्ण है। एक बार व्यक्ति नयी गतिविधि या आन्दोलन को आरंभ करता है, समस्या या परिस्थिति के विभिन्न आयामों को समझने का प्रयास करता है, वह छिपे आयामों के प्रति उत्सुक हो जाता है और इसे प्रकट कर देता है। इस प्रक्रिया में उत्तेजना तथा तनाव सम्मिलित है जो समस्या या रहस्य को जानने से या और अधिक जानने की चाह से उत्पन्न होते हैं। व्यक्ति इसे विभिन्न लोगों या दृष्टिकोणों से देखने का प्रयास करता है, और वैकल्पिक दृष्टि, समाधान या स्पष्टीकरण प्राप्त करता है। विकल्पों की खोज हेतु प्रयास की आवश्यकता होती है। ऐसे प्रयास में विचारों का लचीलापन, नवीनता में रुचि तथा अनुसंधान मदद करते हैं।

सर्जनात्मक चिंतन प्रक्रिया में अपसारी सोच अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि यह विभिन्न दिशाओं में सोचने में मदद करती है। गिलफर्ड (1950) ने अपने स्ट्रक्चर ऑफ इंटलेक्ट मॉडल द्वारा अपसारी सोच का विचार दिया था। उनके अनुसार सोचना दो प्रकार का होता है - अपसारी तथा अभिसारी। अभिसारी सोच ऐसी सोच है जो समस्या के समाधान हेतु केवल एक सही समाधान देती है। बुद्धि परीक्षण के अधिकतर परीक्षण प्रश्न अभिसारी सोच के प्रकार के होते हैं।

रात्रि का दिन से वही सम्बन्ध है जो शाम का ----- से, इस प्रश्न का उत्तर सुबह है।

अपसारी सोच में एक से अधिक उत्तर हो सकते हैं। विचार अनेक दिशाओं में जाते हैं। अपसारी सोच की आवश्यकता वाले प्रश्न कुछ प्रश्न नीचे दिये गये हैं।

1- कपड़े के विभिन्न उपयोग क्या क्या हैं ?

2- क्या होगा यदि विद्यालयों में परीक्षाएँ समाप्त कर दी जाएँ ?

क्योंकि अपसारी सोच अनेक विकल्पों वाली सोच है जो व्यक्ति को किसी विचार या समाधान उत्पन्न करने के अनेकों वैकल्पिक तरीकों के उपयोग में सहायता करती है जो असामान्य, अप्रत्याशित तथा नूतन हों। यह प्रक्रिया एक व्यक्ति को विचारों, वस्तुओं तथा घटनाओं के मध्य नये मेल व सम्बन्धों को देखने में मदद करती है। उदाहरण के लिए पेन्सिलिन की खोज को देखें। फ्लेमिंग कुछ बैक्टीरिया के लिए कल्चर तैयार करने का प्रयास कर रहा थे। एक दिन उसने देखा कि सारे बैक्टीरिया नष्ट हो गये हैं। उसने डिश में एक फफूँद पर भी ध्यान दिया। उनके स्थान पर अन्य कोई व्यक्ति शायद प्रयोग को पुनः आरंभ करता और भविष्य में फफूँद की अनदेखी करने का प्रयास करता। परन्तु फ्लेमिंग ने फफूँद को एक ऐसे पदार्थ के रूप में देखा जिसे बीमारियों के कीटाणुओं के विनाश के लिए उपयोग करने हेतु विचारा जाए।

इसका आशय यह नहीं है कि मात्र अपसारी सोच ही महत्वपूर्ण है, अभिसारी सोच भी भूमिका निभाती है। तथ्यों तथा ज्ञान से परिपूर्ण होना महत्वपूर्ण है जिसके लिए अभिसारी सोच चाहिए। इस अर्थ में सर्जनात्मकता में पहले से ज्ञात से कुछ नया पाना शामिल है, पहले से अज्ञात से भी कुछ अपसारी विचार की क्षमताएँ सर्जनात्मक विचार प्रक्रिया में कुछ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

धाराप्रवाहिता

वह क्षमता है जो अनेक विचारों के साथ आती है। जितने अधिक विचार व्यक्ति प्रस्तुत करेगा उतनी ही धाराप्रवाहित क्षमता अधिक होगी।

लचीलापन

यह विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता है जो किसी व्यक्ति के सोचने के एक स्तर से दूसरे स्तर में गति या किसी दिये गये कार्य सम्बन्धी विचारों में बदलाव को प्रदर्शित करता है। विचारों का लचीलापन चीजों को अलग दृष्टिकोण के साथ देखने में मदद करता है। उदाहरण के लिए, ईंट के दो उपयोग : इसका पेपरवेट के रूप में इस्तेमाल, कपड़ों के ढेर को दबाने हेतु उपयोग। इन दोनों मामलों में ईंट भार के रूप में कार्य करती है अतः विचार में कोई भी परिवर्तन नहीं है। ईंट को तकिए के रूप में प्रयोग करना, विचार में परिवर्तन दर्शाता है।

मौलिकता

यह अप्रत्याशित और समय से आगे के विचारों को प्रस्तुत करने की क्षमता है। यह सर्जनात्मक सोच की सबसे महत्वपूर्ण क्षमता है। उदाहरण के लिए ईंट के दो अप्रत्याशित उपयोग, यदि किसी बच्चे की प्रतिक्रिया है – कमीज प्रेस करने हेतु आग में गरम करना, यह प्रतिक्रिया इस पर दी गई, अन्य प्रतिक्रिया के मुकाबले मौलिक कही जा सकती है।

विस्तारीकरण

यह प्रस्तुत किए गए आधारभूत विचार में तथ्यों का योग करने की क्षमता है। माना किसी व्यक्ति को कुछ चतुर्भुज (square) ऐसे विचारों को सोचने हेतु दिये जाए जो अन्य कोई ना सोच सके। एक व्यक्ति एक दरवाजे का चित्र बनाता है और कब्जे, सजावट, नेम प्लेट व झरोखा आदि ब्यौरे भी दिखाता है। वह दरवाजे के आधारभूत विचारों को विस्तृत कर रहा है।

अनुमान की क्षमता

यह समस्या की समझ हेतु पर्याप्त नहीं है परन्तु यह उसके कारणों व परिणामों के सम्बन्ध में अच्छे अनुमान लगाने हेतु उसी के समान महत्वपूर्ण है।

कल्पना तथा मन में चित्र निर्माण

सर्जनात्मक क्षमता में कल्पना करने तथा मानसिक चित्र निर्माण को सम्मिलित करने की क्षमता है और मानसिक रूप में मानसिक चित्रों तथा विचारों को व्यवहार कौशल में लाना है।

विश्लेषण और संश्लेषण में विस्तारपूर्वक विश्लेषण की क्षमता, सम्पूर्ण को भागों में विभाजित कर विश्लेषण करना, सम्बन्धों को देख सकने की क्षमता, भागों को जोड़कर व्यावहारिक संयोग में बदलना, सम्मिलित है।

रूपान्तरण किसी चीज के नये प्रयोग, नये अर्थ, प्रभाव तथा उपयोग को देखने एवं एक वस्तु या विचार को अन्य में परिवर्तित करने की क्षमता है।

सीमाओं का विस्तार सर्जनात्मक क्षमता में सामान्य तथा संभावित से आगे जाने की प्रक्रिया है। उदाहरण के लिए, वस्तुओं का नये तरीकों से उपयोग करना।

इस सब से स्पष्ट है कि कुछ अपसारी चिंतन, क्षमता, कौशल और प्रक्रियाएँ सर्जनात्मक चिंतन हेतु आवश्यक है। अधिकतर सर्जनात्मक परीक्षण अपसारी चिंतन क्षमता का आकलन करते हैं। इनके बारे में आप अगले भाग में पढ़ेंगे।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास -1

निम्न विकल्पों द्वारा रिक्त स्थान पूर्ण करें -

- | | |
|----------------|--------------|
| (i) धाराप्रवाह | (ii) विस्तृत |
| (iii) मौलिक | (iv) लचीला |

- 1- एक व्यक्ति जो एक कहानी के तीन वैकल्पिक अंत, एक दुखद, एक हास्यपूर्ण और एक नैतिक, देता है अधिक----- है।
- 2- एक विद्यार्थी जो किसी वस्तु, माना खिलौने, को सुधारने के एक से अधिक तरीके सुझाता है, अधिक ----- है।
- 3- एक व्यक्ति जो किसी वस्तु के चित्रण या कहानी सुनाने में विस्तृत जानकारियों को जोड़ता जाता है, --- -- है।
- 4- कपड़े के भिन्न उपयोगों की सूची बनाने में वह विद्यार्थी ----- है जो विस्मयकारी तथा विलक्षण विचार देता है।

3.2.3 व्यक्ति

सर्जनात्मक व्यक्ति कौन हैं ? सर्जनात्मक व्यक्तियों के क्या गुण हैं ? शोधों द्वारा सिद्ध हुआ है कि उच्च सर्जनात्मक क्षमता वाले व्यक्ति निम्न सर्जनात्मक क्षमता वाले व्यक्तियों से कुछ क्षमताओं तथा गुणों में भिन्न होते हैं । विभिन्न क्षेत्रों में सर्जनात्मक व्यक्तियों में कुछ गुण समान होते हैं ।

व्यक्तित्व या अभिप्रेरणा का कोई ऐसा गुण नहीं है जो किसी विशिष्ट व्यक्ति का सर्जनात्मक के रूप में वर्गीकरण कर दे । बल्कि, सर्जनात्मक व्यक्तियों द्वारा अनेकों गुण प्रदर्शित किये जाते हैं जिनमें से कुछ एक सर्जनात्मक व्यक्ति में पाये जा सकते हैं अन्य में नहीं । सर्वाधिक उल्लेखित गुणों में विचार तथा निर्णय की स्वतन्त्रता, आत्मविश्वास, जिज्ञासु, प्रश्न करने वाले, नये अनुभवों को लेने वाले, सहज, अपने कार्य हेतु प्रतिबद्ध, दृढ़ निश्चयी, कार्य अधूरा ना छोड़ने वाले, उच्च आंतरिक अभिप्रेरणा, खतरा उठाने की प्रवृत्ति, साहसी, चिंतनशीलता, ऊर्जावान, जटिल तथा रहस्यमय वस्तुओं के प्रति आकर्षण आदि सम्मिलित हैं । सर्जनात्मक व्यक्तियों द्वारा निश्चित स्वतन्त्रता की आवश्यकता महसूस की जाती है जो दूसरों द्वारा निर्धारित सीमाओं को अस्वीकार कर देते हैं, और नियमों का अन्धानुकरण पसंद नहीं करते, नियमित दिनचर्या से चिड़चिड़े हो जाते हैं । इनकी रुचियों की विस्तृत श्रेणियाँ होती हैं । यह विनोदपूर्ण और मनोरंजक होते हैं और अपने व्यवहार में परम्परा से हट कर व्यवहार करते हैं ।

सर्जनात्मक व्यक्ति समस्याओं के समाधान के अपने तरीके (शैली) से भी पहचाने जाते हैं, जैसे- ज्ञान की नवीनता और गुंजाइशों के प्रति सतर्क रहना, अपने पूर्व ज्ञान को आधार बनाकर नये विचारों हेतु प्रयोग करना, प्रचलित मानकों एवं मान्यताओं पर प्रश्न करना, विद्यमान विचारों को उसी रूप में स्वीकार करने के बजाय नये विचारों का निर्माण करना आदि ।

ऊपर विमर्श की गई क्षमताएँ तथा व्यक्तित्व के लक्षण शिक्षक को सामान्य कक्षा वातावरण में उच्च सर्जनात्मक क्षमता वाले विद्यार्थियों को पहचानने में सहायता करते हैं । ध्यान रखने वाली बात यह है कि सर्जनात्मकता में कुछ संज्ञानात्मक क्षमताओं से कहीं आगे विस्तार वाले व्यक्तित्व, स्वभाव, अभिप्रेरक कारक और कार्य की व्यक्तित्व शैली भी अनिवार्य पहलू हैं । इनके अलावा अपसारी चिंतन क्षमताओं जैसे धाराप्रवाहिता, लचीलापन, मौलिकता, विस्तारीकरण, कल्पना, नये संबंधों को देख पाना, आदि कुछ अन्य व्यक्तिगत गुण जैसे- जिज्ञासा, शंकालुता, विचार एवं चिंतन में स्वतन्त्रता, संसाधनपूर्ण साहस, निर्भीकता, आत्मविश्वास, दृढ़ता, जटिलता एवं दोहरे अर्थ हेतु सहनशीलता, आदि सभी सर्जनात्मकता से जुड़े हैं । प्रत्येक व्यक्ति में इन क्षमताओं तथा गुणों का विलक्षण संयोग होता है । लोग संज्ञानात्मक व्यक्तित्व तथा अभिप्रेरक विशेषताओं के संयोग के अच्छे गुणों से सर्जनात्मक होते हैं जिसका परिणाम वातावरण पर निर्भर करता है ।

एक व्यक्ति उच्च सर्जनात्मकता परन्तु निम्न अभिप्रेरणा वाला हो सकता है । जब तक ऐसे व्यक्ति को किसी का निर्देशन नहीं मिलता वह अपनी विलक्षण योग्यताओं का उपयोग नहीं कर पाता । अन्य व्यक्ति उच्च अभिप्रेरणा परन्तु निम्न सर्जनात्मकता के हो सकते हैं । ऐसे व्यक्ति में अच्छी समझ हो सकती है परन्तु शायद ही कोई विलक्षण सहयोग कर सकें । ऐसे व्यक्ति को पहचानना महत्वपूर्ण है जिसमें सर्जनात्मक संभावना है परन्तु उपेक्षित है । एक विद्यार्थी की सर्जनात्मकता बाद में पूर्ण विकसित हो सकती है परन्तु इसके संकेत विद्यालयी अवस्था में ही दिखने लगते हैं । यदि सर्जनात्मकता को विद्यालय की प्राथमिक अवस्था से ही पहचाना और पोषित किया जाए तो इसके प्रतिफल महानतम हो सकते हैं ।

3.3 सर्जनात्मकता संबंधी भ्रातियाँ

एक समय था जब सृजनात्मकता को मात्र कुछ भाग्यशाली व्यक्तियों का एक रहस्यमय उपहार माना जाता था। वर्तमान समय में सर्जनात्मकता की समझ को विस्तार मिला है।

भ्रान्ति 1 : सर्जनात्मकता मात्र कुछ ही कलाकारों, शोधार्थियों, वैज्ञानिकों, कवियों या आविष्कारकों तक ही सीमित नहीं है। सामान्य व्यवसायों में संलग्न एक साधारण व्यक्ति जैसे मिट्टी के बर्तन बनाना, बढईगीरी, आदि भी सर्जनात्मक हो सकते हैं। फिर भी यह स्वीकार करना चाहिए कि कुम्हार, सुनार, रसोइया, सर्जनात्मकता के उस स्तर पर कार्य नहीं करते जिस पर प्रतिष्ठित वैज्ञानिक या दार्शनिक। आइन्सटीन का सापेक्षता का सिद्धांत सर्जनात्मकता के उच्चतम स्तर का एक उदाहरण है जिस पर पूर्व में कार्य किया जा चुका हो उसके संशोधन द्वारा, नये परिप्रेक्ष्यों को जोड़ने से, या नये उपयोगों से, विचारों के मेल से नवीन वस्तुओं का सृजन भी सर्जनात्मकता का अन्य स्तर है। अतः अनुमान है कि सर्जनात्मकता प्रत्येक में उपस्थित है परन्तु विविध श्रेणियों में है। बच्चे उच्चतम स्तर पर नहीं वरन अभिव्यक्ति एवं अनुभवजन्य स्तर पर कार्य करते हैं। वे सभी सर्जनात्मक हो सकते हैं परन्तु सर्जनात्मकता के समान स्तर पर नहीं हो सकते हैं। इसी प्रकार सर्जनात्मकता के भी अनेक प्रकार होते हैं। यहाँ पर साहित्य में उपलब्ध विभिन्न परिभाषाओं को जानना उचित नहीं है परन्तु उनका उल्लेख सिद्धांतों को स्पष्ट करने हेतु दिया गया है। मेस्लो द्वारा दो प्रकार की सर्जनात्मकता का विभेद प्रकारों के असमंजस का समाधान करता है। उनके अनुसार स्व-अनुभूत सर्जनात्मक व्यक्ति वे हैं जो अपने जीवन के सभी पहलुओं में लचीले तथा सर्जनात्मकता तरीके से अग्रसर होते हैं। उनके लिए सर्जनात्मकता एक जीवन शैली, बोध का एक तरीका, संसार में जीने और वृद्धि करने, नये विचारों की खोज, समस्याओं हेतु संवेदनशीलता का विकास है। उन्हें सर्जनात्मक होने के लिए महान कला, साहित्य या विज्ञान की प्रतिभा होना आवश्यक नहीं है। कोई किसी विशेषज्ञ के क्षेत्र में विलक्षण या सर्जनात्मक हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। दूसरी ओर विशेष प्रतिभा वाले सर्जनात्मक व्यक्तियों में कला, साहित्य, संगीत, विज्ञान, वाणिज्य या किसी अन्य क्षेत्र में स्पष्टतया विलक्षण प्रतिभा होती है।

भ्रान्ति 2: सर्जनात्मकता मात्र प्रतिभाशाली व्यक्तियों द्वारा प्रदर्शित की जाती है।

अक्सर लोग भूलवश प्रतिभाशाली, सामान्यतः योग्य या उच्च बुद्धिजीवी व्यक्ति के लिए सर्जनात्मक शब्द का उपयोग करते हैं। एक बच्चा जो छोटी आयु से ही संगीत उपकरणों में निष्णात हो वास्तव में प्रतिभाशाली है और इसी प्रकार वह बच्चा जो आई क्यू परीक्षण में उच्च प्राप्तांक प्राप्त करता है, परन्तु सर्जनात्मकता प्रतिभा या बुद्धिमत्ता में समान नहीं है। शोधों ने दर्शाया है कि जिन्हें प्रतिभाशाली के रूप में चिह्नित किया गया और व्यस्क जीवन तक उन्हें देखा गया उनमें से एक भी किसी क्षेत्र में सर्जनात्मकता के लिए नहीं जाना गया। इसके अलावा, सर्जनात्मकता के शोधार्थियों द्वारा पाया गया कि उच्च और निम्न दोनों प्रकार की सर्जनात्मकता अत्यन्त बुद्धिमत्ता वाले बच्चों में पाई जा सकती है। इसका अर्थ है कि एक छात्र जिसने उदाहरणस्वरूप, पहाड़े याद किये हों और इतना अभ्यास किया हो कि यांत्रिक रूप से दोहरा सके, उसके पास स्मरण क्षमता है परन्तु जब तक वह कुछ नयी गणितीय पहेलियाँ या व्यवस्था का आविष्कार ना करे, वह सर्जनात्मकता के उच्च स्तर को प्रदर्शित नहीं करता।

भ्रान्ति 3: सर्जनात्मकता पूर्णतया जन्मजात होती है।

अधिकतर लोग यह सोचते हैं कि प्रतिभा जन्मजात होती है। यह केवल विशिष्ट लोगों जैसे- आइन्सटीन,

पिकासो, एडिसन आदि में ही होती है। इसमें कोई विवाद नहीं है कि सर्जनात्मकता क्षमताओं, अभिप्रेरणाओं एवं व्यक्तिगत गुणों का परिणाम है, वह आनुवंशिक तथा वातावरण दोनों का ही उत्पाद है। अन्य मानसिक तथा शारीरिक गुणों के मामलों में, सर्जनात्मक संभावनाओं की सीमा आनुवंशिकता से तय की जाती है। आनुवंशिक कारक सर्जनात्मकता के विकास को प्रेरित करते हैं। वास्तविकता में कोई भी प्रशिक्षण सामान्य व्यक्ति को टैगोर, शेक्सपीयर आदि में रूपान्तरित नहीं कर सकता। हालांकि यह भी सत्य है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने वर्तमान स्तर से अपनी सर्जनात्मक क्षमता को और ऊपर उठा सकता है।

भ्रान्ति 4: सनक तथा असामान्यता सर्जनात्मकता के भाग हैं।

सनक तथा असामान्यता को अक्सर भूलवश सर्जनात्मकता का संकेत मान लिया जाता है। उन लोगों को सर्जनात्मक मान लिया जाता है जो असामान्य व्यवहार करते हैं तथा समाज के सदृश्य होना अस्वीकार कर देते हैं। परन्तु क्या यह सर्जनात्मकता को बताता है? उत्तर थोड़ा जटिल है क्योंकि हम सब आसानी से कुछ प्रसिद्ध सर्जनात्मक व्यक्तियों के उदाहरण दे सकते हैं जो मानसिक रूप से असामान्य या पागल थे। विन्सेट वॉन गॉग ने स्वयं अपना कान काट डाला तथा बाद में आत्महत्या कर ली थी। परन्तु कोई उदाहरण यह नहीं बताता कि अनजाना, असामान्य या असन्तुलित व्यवहार सर्जनात्मकता हेतु आवश्यक या सहायक है। बहुत से मनोवैज्ञानिकों का विश्वास इसके विपरीत है कि लोग अपनी सर्जनात्मकता का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन तब कर पाते हैं जब वे चिन्ताओं तथा मानसिक समस्याओं से दूर होते हैं। लक्ष्य के रूप में सिर्फ अपने लिए भिन्न होना, सर्जनात्मकता हेतु पर्याप्त नहीं है।

3.4 सर्जनात्मकता का आकलन

पूर्व भाग में आपने सर्जनात्मकता की प्रकृति के बारे में जाना। इस भाग में, आप जानेंगे कि कैसे शिक्षकों तथा परामर्शदाताओं द्वारा बच्चों में सर्जनात्मकता की पहचान और आकलन कर सकते हैं।

यदि कोई आपसे किसी बच्चे की तीव्र बुद्धि के आकलन के बारे में जानना चाहता है तो एक शिक्षक/शिक्षिका के रूप में आप उपलब्धता परीक्षण प्राप्तांक बताने के लिए सोचेंगे। परन्तु यदि कोई आपसे एक बच्चे की सर्जनात्मकता का आकलन बताने के लिए कहे तो आप उसकी कला, क्राफ्ट, लेखन या कविता आदि के कार्य आदि को देखेंगे। पूर्व भाग में आप जान चुके हैं कि जब आप 'सर्जनात्मक व्यक्ति' या 'सर्जनात्मक बच्चे' का कथन सुनते हैं तो आप कुछ अपराम्परागत या विलक्षण उपलब्धि को देखना चाहेंगे। इस अर्थ में आप असाधारण उत्पाद को देख रहे हैं। यहाँ आप बच्चों में सर्जनात्मकता की संभावनाओं को और कल्पना, मौलिक विचार, स्वतन्त्र चिंतन की विविधता की श्रेणियों को, बच्चे की संभावनाओं के अधिकतम पोषण की दृष्टि से खोजने के लिए चिंतित हैं।

शैक्षणिक व्यवस्था में सर्जनात्मकता के आकलन का उद्देश्य सर्जनात्मकता की विभिन्न संभावनाओं वाले बच्चे की पहचान है। एक बार खोज लिए जाने पर आप इन संभावनाओं का पोषण तथा निर्देशन करना चाहेंगे। आपको यह ध्यान रखना है कि सर्जनात्मक संभावनाओं की पहचान को खोजना नहीं है बल्कि सब की सर्जनात्मकता के विकास में सहायता करना है। जो विलक्षण सर्जनात्मकता का प्रदर्शन करते हैं उनकी पहचान के विशेष प्रयास करने की आवश्यकता नहीं है। छिपी तथा अवरूद्ध सर्जनात्मक संभावनाओं की पहचान ज्यादा महत्वपूर्ण

है। सर्जनात्मक संभावना वाले बच्चों द्वारा अपनी सर्जनात्मकता का प्रदर्शन ना कर पाने के परिणामस्वरूप, उनकी सर्जनात्मकता हमेशा के लिए सुसुप्त हो जाती है और यह सामंजस्य की समस्या पैदा कर सकती है।

एक परामर्शदाता के रूप में, बच्चों में सर्जनात्मकता की पहचान तथा पोषण महत्वपूर्ण है। पहचान या आकलन का लक्ष्य सर्जनात्मकता के पोषण तथा निर्देशन के सन्दर्भ में देखा जाना चाहिए जिससे बच्चों को उनकी संभावनाओं को साकार करने में सक्षम किया जा सके।

सर्जनात्मकता के आकलन के दो पहलू हैं। एक, सामान्य सर्जनात्मक चिंतन क्षमता, कौशल और गुण हैं जो किसी भी प्रकार के सर्जनात्मक प्रयासों हेतु महत्वपूर्ण हैं। इन्हें अपसारी चिंतन क्षमता के अन्तर्गत 'व्यक्ति वाले' भाग में लिया गया है। दूसरा, सर्जनात्मकता के विभिन्न प्रकारों का आकलन जिन्हें बच्चों में देखा जाता है, उदाहरण के लिए कला, लेखन, विज्ञान, आदि में। युवा अवस्था में सर्जनात्मकता का प्रकार, कला या साहित्य, महत्वपूर्ण नहीं है बल्कि किसी भी मौलिक या काल्पनिक विचार की अभिव्यक्ति का किसी भी माध्यम द्वारा प्रदर्शन महत्वपूर्ण है।

प्राथमिक स्तर पर नृत्य, नाटक, गतियाँ, चित्रण रंगकारी, क्ले मॉडलिंग, आदि सभी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। परन्तु, जैसे- जैसे बच्चे प्राथमिक से उच्च प्राथमिक कक्षा में प्रगति करते हैं वे अपने विशिष्ट प्रतिभाओं का प्रदर्शन करने लगते हैं। इस समय कला, संगीत, गति, लेखन आदि के विभिन्न क्षेत्रों में सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के अनेकों विकास के अवसर दिए जाने चाहिए जिससे उन्हें जिस भी क्षेत्र में वे अच्छे हैं उनमें अपनी सर्जनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति में मदद मिलेगी। अतः आकलन को बहुआयामी होना चाहिए।

कोई एक सर्जनात्मकता आकलन उपकरण ऐसा नहीं है जिसे श्रेष्ठ कहा जा सके क्योंकि सर्जनात्मकता विकास की विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्न तरीकों से प्रदर्शित होती हैं। परन्तु शिक्षक परामर्शदाताओं को स्पष्ट होना चाहिए कि सर्जनात्मकता के कौन से आयाम का आकलन किया जाना है। प्राथमिक अवस्था में, बच्चों द्वारा कुछ साकार उत्पादन करना कठिन होता है। अतः आकलन इस पर केन्द्रित रहेगा कि बच्चा सर्जनात्मक विचार देने के लिए क्या करता है या उनके द्वारा प्रदर्शित चिंतन प्रक्रिया कैसी है। इस पर पुनः जोर देना आवश्यक है कि मात्र भिन्न होने, शंका करने, नियमों तथा कानून न करने, अलग तरीके से कार्य करना सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति नहीं है। मौलिकता, विलक्षणता और काल्पनिकता सर्जनात्मकता की उचित अभिव्यक्तियाँ हैं।

सर्जनात्मकता के आकलन हेतु ध्यान में रखने योग्य दूसरा बिन्दु यह है कि जब तक बच्चों को सर्जनात्मक तरीके से सोचने हेतु उचित अभिप्रेरणा ना दी जाए, उनके द्वारा सर्जनात्मकता को अभिव्यक्त करना संभव नहीं है। सर्जनात्मकता के आकलन की कुंजी अवसर है। सर्जनात्मक अभिव्यक्ति हेतु अवसर होने चाहिए। कक्षा वातावरण शिक्षक को सर्जनात्मक चिंतन की संभावना की पहचान हेतु पर्याप्त अवसर प्रदान करता है। अतः सर्जनात्मक क्षमताओं की पहचान के अवसर प्रदान करना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। जब तक बच्चों को सर्जनात्मक तरीके से सोचने या अभिव्यक्त करने की स्वतन्त्रता नहीं होगी, प्रयासों के परिणाम नहीं मिलेंगे। जैसा कि टॉरेन्स (1966) द्वारा कहा गया है, टॉरेन्स के अवलोकन के द्वारा कि कैसे लोग अचानक कूदते हैं से किसी ने कूदने की क्षमता का खोजने के प्रयास के बारे में नहीं सोचा होगा। ना ही किसी ने कूदने वालों को पूर्व अभ्यास का अवसर प्रदान किए बिना कूदने की क्षमता को पहचानने का प्रयास किया होगा। समान सिद्धांत सर्जनात्मक चिंतन क्षमता के साथ साथ बौद्धिक क्षमता की पहचान में भी लागू होता है।

3.4.1 सुविधाजनक वातावरण आकलन की पूर्व आवश्यकता के रूप में

पिछले 50 वर्षों के शोधों ने कक्षा में सर्जनात्मकता की अभिवृद्धि को सुलभ करने वाले वातावरण के गुणों का स्पष्ट चित्र दिया है। कोई एक वातावरण सभी सर्जनात्मक व्यक्तियों हेतु उपयुक्त नहीं होता। उदाहरण के लिए कुछ लोग प्रतिस्पर्धात्मक परिस्थितियों में बेहतर होते हैं जबकि अन्य सहयोगपूर्ण एवं सहकारी वातावरण में अधिक सर्जनात्मकता के साथ कार्य करते हैं। सर्जनात्मकता कभी-कभी प्रतिकूल परिस्थितियों में भी उदित होती है। हालांकि, शोध इंगित करते हैं कि अच्छा वातावरण सामान्यतः सहायक होता है और सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के अवसरों में वृद्धि करता है।

विभिन्न अन्तर-सांस्कृतिक अध्ययन बताते हैं कि सर्जनात्मक अभिव्यक्ति इस पर निर्भर करती है कि किसे पुरस्कृत तथा प्रोत्साहित किया जाता है। विभिन्न संस्कृतियाँ विभिन्न प्रकार के व्यवहार तथा व्यक्तिगत गुणों का भिन्न प्रकार से बोध तथा आकलन करती हैं। कुछ संस्कृतियों जैसे यू.एस., जर्मनी, भारत, ग्रीस और फिलीपीन्स में सर्जनात्मकता से जुड़े व्यवहारों जैसे- शंका करना, संवेदनशीलता, अन्तर्ज्ञान, साहस तथा दोषारोपण को अनुचित रूप से सजा दी जाती है और पुष्टीकरण एवं सर्जनात्मकता रहित अभिव्यक्तियों से जुड़े गुणों आज्ञाकारिता, विनम्रता, बिना प्रश्न किए अन्य लोगों के निर्णयों को स्वीकारना, आदि को अनुचित प्रतिदान दिया जाता है।

सर्वेक्षण में भी दर्शाते हैं कि शिक्षकों द्वारा सामान्यतः सर्जनात्मक विद्यार्थियों को कोई महत्त्व नहीं दिया जाता। यहाँ तक कि वे शिक्षक जो सोचते हैं कि वे सर्जनात्मकता को इस रूप में महत्त्व देते हैं कि इसे कक्षा में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, वे अक्सर सर्जनात्मकता से जुड़े लक्षणों पर त्रुटियाँ चढ़ाते हैं। अधिकतर शिक्षक सर्जनात्मकता से जुड़े गुणों जैसे निर्भीकता, नवीनता की इच्छा और मौलिकता आदि को नापसंद करते हैं या सहन नहीं करते हैं। शिक्षक विनम्रता, नियमितता, आज्ञाकारिता तथा शिक्षक के अपने विचारों को स्वीकारने तथा गुणों को प्रमुखता देते हैं। स्मरण करने के कौशल और पुनः स्मरण में सटीकता को आलोचनात्मक चिंतन और स्वतन्त्र निर्णय लेने के अपेक्षा अधिक पसंद करते हैं। ये सत्य है कि इन सभी गुणों को सर्जनात्मकता के नाम पर खारिज नहीं किया जा सकता है। ये विद्यालय के लिए आवश्यक हैं। हालांकि इस पर अधिक जोर दिया जाना सर्जनात्मकता में कमी लाता है। विद्यार्थियों को सुनिश्चित तरीके से काम करने हेतु सहमति की आदत हो जाती है। वे इसे मूल्य निर्णय के रूप में स्वीकारने लगते हैं और स्वयं सर्जनात्मकता को अस्वीकार कर देते हैं। अतः सर्जनात्मकता को समाज द्वारा मूल्य दिया जाना महत्वपूर्ण प्रश्न है जो सर्जनात्मकोदय वातावरण उपलब्ध करायेगा। कक्षा परिस्थिति आदि में शिक्षक की मनोवृत्ति, व्यवहार, बच्चों के साथ संवाद सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति में सहयोग करता है। शिक्षक तथा परामर्शदाताओं को सर्जनात्मकता के उदयीकरण हेतु सहायक वातावरण उपलब्ध कराने के आधारभूत सिद्धांतों को अवश्य जानना चाहिए।

कक्षा में सर्जनात्मकता के अनुकूल वातावरण के निर्माण के दो तरीके हैं : एक सर्जनात्मकता के अवरोधों को दूर करना, और दूसरा सर्जनात्मकता हेतु अभिवृत्ति में वृद्धि को पोषित करना।

अवरोध आन्तरिक या बाह्य रूकावटें हैं जो सर्जनात्मक चिंतन को बाधित करती हैं और सर्जनात्मक विचारों को मानने या साकार करने से रोकती हैं। अधिकतर अवरोध अधिगम का परिणाम हैं।

सर्जनात्मक चिंतन का सर्वाधिक प्रत्यक्ष अवरोध चिंतन एवं प्रतिक्रिया की अच्छे प्रकार से सीखी या रटन्त विधि है। नयी संभावनाओं को सोचना एवं निर्मित करना कठिन हो जाता है जब कोई व्यक्ति सोचता है कि उसे उसी प्रकार से कार्य करने हैं जिस प्रकार से हमेशा ही किये जाते हैं। दूसरा अवरोध नियमों तथा परम्पराओं पर अत्यधिक जोर देना है जो सर्जनात्मकता को रोकता है। चीजों को जाने पहचाने ढंग से लेने के हम इतने आदी हो जाते हैं कि नये अर्थों, सम्बन्धों तथा विचारों को देखना कठिन हो जाता है। बजाय विभिन्न विकल्पों को देखने के बोधात्मक ढाँचा त्वरित निर्णय लेने तथा निष्कर्ष पर आने की प्रवृत्ति से बंध जाता है। नये अर्थों, पुनर्ग्रहण एवं सम्बन्धों का बोध बोधात्मक अवरोधों के पार करने पर निर्भर करता है। सांस्कृतिक अवरोध जैसे अनुकूलता, दबाव, समानता एवं मानकीकरण, आदि सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के विकास में अवरोध प्रस्तुत करते हैं। भावात्मक अवरोध भी सर्जनात्मक चिंतन में हस्तक्षेप करते हैं जिनमें असुरक्षा, चिन्ताएँ जैसे असफलता का भय, भिन्न होने का डर, आलोचना, अस्वीकार किये जाने का भय, जोखिम उठाने का भय आदि सम्मिलित हैं। इसके अलावा आवश्यकताओं तथा मूल्यों में अन्तर सर्जनात्मक विचारों की स्वीकार्यता में संघर्ष तथा विरोध उत्पन्न करते हैं।

सर्जनात्मकता के पोषण के आधारीय सिद्धांतों को मनोवैज्ञानिक रूप में सुरक्षित वातावरण प्रदान करना है जहाँ विद्यार्थी शिक्षकों के साथ खुले रूप में विचारों एवं भावनाओं पर चर्चा करने में स्वतन्त्र महसूस करें और मजाक उड़ाये जाने, आलोचना या अधिकारियों के दबावों से ना डराए जाएँ।

रचनात्मक आलोचना करना, सकारात्मक फीडबैक, गलतियों को स्वीकारना, आवेशात्मक निर्णयों से दूरी, या कथनों का आकलन, आदि निर्माणकारी वातावरण का सृजन करने के कुछ तरीके हैं। शिक्षक कक्षा में सर्जनात्मकोन्मुख वातावरण की रचना कर सकते हैं और उनकी सर्जनात्मक संभावनाओं की अभिव्यक्ति हेतु अवसर प्रदान कर सकते हैं। 'तुम बिल्कुल गलत हो', 'तुम विषय से हट रहे हो', 'हमारे पास समय की कमी है', 'तुम हमेशा बेवकूफी की बातें करते हो', जैसे कथन प्राकृतिक जिज्ञासा, अभिप्रेरणा, स्व-प्रतिष्ठा का दमन करते हैं और सर्जनात्मकता का दम घोट देते हैं। सर्जनात्मकता की संभावनाओं के आकलन में रुचि रखने वाले शिक्षकों तथा परामर्शदाताओं को इसकी अभिव्यक्ति हेतु सहायक वातावरण की रचना करनी चाहिए।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास -2

दिए गए विकल्पों की सहायता से रिक्त स्थान पूर्ण करें-

(i) सर्जनात्मकता का पोषण (ii) उच्च सर्जनात्मक कार्यक्रम

(iii) अभिसारी विचारक (iv) बहु आयामी

- 1- एक विद्यार्थी जो हमेशा सही समाधान सोचता है ----- है।
- 2- सर्जनात्मकता के स्तर तथा अभिव्यक्ति की व्यक्तिगत भिन्नताएँ हैं। अतः सर्जनात्मकता का आकलन ----- होना चाहिए।
- 3- छिपी हुई सर्जनात्मक संभावनाओं की पहचान उतनी ही महत्वपूर्ण है जितना ----- ।
- 4- सर्जनात्मकता की पहचान तथा आकलन का उद्देश्य ----- है।

3.5 सर्जनात्मक संभावनाओं के कुछ संकेतक - सजर्नात्मक बच्चे की चेक लिस्ट

दिए गए कुछ तरीके हैं जिनसे बच्चे कक्षा में सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति करते हैं। यह ध्यान में रखना है कि इन व्यवहारों का प्रदर्शन मात्र ही इस बात की गारंटी नहीं है कि बच्चा अवश्य ही सर्जनात्मक है। नीचे दिए गए कुछ व्यवहारों के सर्जनात्मक क्षमताओं तथा गुणों के अलावा अन्य कारण भी हो सकते हैं।

- अपनी आयु वर्ग की कक्षा के अन्य विद्यार्थियों की अपेक्षा किसी विषय पर अधिक विचार प्रस्तुत करते हैं।
- ऐसी बातों को देख पाते हैं जिसको कक्षा के अन्य बच्चे नहीं देख पाते।
- साथियों के विचारों को अधूरा एवं अपूर्ण मानते हैं।
- दूसरे के उत्तरों या विचारों के संशोधन या बेहतरी में उत्सुकता दिखाते हैं।
- ऐसे प्रश्न पूछते हैं जो सामान्यतः अप्रत्याशित तथा कक्षा के अन्य बच्चों से अलग होते हैं।
- किसी वस्तु को बेहतर बनाने के लिए पूछे जाने पर अप्रत्याशित विचार देते हैं।
- वाद-विवाद, विचार-विमर्श कक्षा में प्रश्नोत्तर आदि में सशक्त एवं अभिनव तर्क प्रस्तुत करते हैं।
- साथियों के उत्तरों की कमियों को पूर्ण करने में उत्सुकता दिखाते हैं।
- अपने अध्ययन के विषय के संबंध में परम्परागत विचारों एवं अभ्यासों को नये अर्थ देने की आदत होती है।
- अपने कार्य में पूर्ण तल्लीन होने की क्षमता होती है।
- कार्य को करना पसन्द करते हैं और हाथ में लिए गए कार्य को पूर्ण किए बिना आराम नहीं करते।
- जब किसी समस्या से घिरते हैं तो उसके समाधान के लिए बहुत से तरीकों को अपनाने का प्रयास करते हैं।
- विचारों को उत्तेजित करने वाले प्रश्नों (जिनमें 'क्यों और कैसे' सम्मिलित हों) को तथ्य आधारित तथा स्मृति आधारित (क्या, कहाँ, कब) प्रश्नों के बजाय अधिक पसंद करते हैं।
- वस्तुओं को जैसी वे हैं वैसा वर्णन करने के बजाय विश्लेषण करने व आगे ले जाने में रुचि लेते हैं।
- विचारों या परिस्थितियों को एक से अधिक अर्थ देने की आदत होती है।
- कठिन कार्यों तथा समस्याओं को सुलझाने में रुचि लेते हैं।
- अपनी रुचि के दिये गए कार्य में कठिन परिश्रम करते व अधिक समय देते हैं।
- विचार एवं निर्णय में स्वतन्त्रता प्रदर्शित करते हैं और स्वतन्त्र रूप से कार्य करना पसंद करते हैं।

- साथियों के दृष्टिकोण से असहमति जताने में पूर्ण निर्भीक होते हैं।
- कठिनाइयों के बावजूद कार्य जारी रखने पर अड़े रहते हैं।
- मूर्खता, अजीब या शैतानी वाले विचारों के लिए प्रसिद्ध होते हैं।
- रंगों, ध्वनियों के नये मेल, नयी सूचनाओं तथा डिजाइनों के निर्माण का प्रयास करते हैं।
- वस्तुओं के उपयोग हेतु तत्काल प्रबन्ध करते हैं, जैसे पेंटिंग हेतु ब्रुश।
- भंगिमाओं एवं नृत्य द्वारा अभिव्यक्ति के विभिन्न तरीके प्रयोग करते हैं।
- नाटक व बिना तैयारी के गाने, संवाद व रोल प्ले का प्रदर्शन करते हैं।
- अप्रत्याशित तरीकों से समस्याओं का समाधान करते हैं और अन्तर्वैयक्तिक संघर्षों का हल पा लेते हैं।
- चीजों को समझाने के लिए अन्य सदस्यों के साथ मिलकर नये खेलों, भूमिकाओं व रोल प्ले का आविष्कार करते हैं।

ये सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के मात्र कुछ ही संभव तरीके हैं जिनकी आकलन के संदर्भ बिन्दुओं के रूप में सेवाएँ ली जा सकती हैं। आगे का भाग आपको सर्जनात्मक संभावनाओं के आकलन की कुछ तकनीकों के उपयोग से परिचित करेगा।

3.6 आकलन तकनीकें

विद्यार्थियों में सर्जनात्मक संभावनाओं की पहचान एवं आकलन की अनेक व्यवस्थित विधियाँ एवं तकनीकें हैं। इन्हें विस्तार से दो तरीकों में वर्गीकृत किया गया है : अपरीक्षण तथा परीक्षण तकनीकें। आप माड्यूल VI की यूनिट 2 व 3 में मनोवैज्ञानिक परीक्षणों तथा आकलन के अपरीक्षण तरीकों के बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं। इस भाग में, आप सर्जनात्मकता की प्रकृति तथा इसके आकलन हेतु प्रयोग की जाने वाली इन तकनीकों की अच्छाइयों एवं बुराइयों के बारे में जानेंगे। सर्वप्रथम, आप सर्जनात्मकता के आकलन की अपरीक्षणीय तकनीकों के बारे में जानेंगे।

3.6.1 आकलन की परीक्षण रहित तकनीकें

परीक्षण रहित तकनीकों के इस भाग में आप सर्जनात्मकता की आकलन के लिए छह परीक्षण रहित विधियों को देखेंगे। ये अवलोकन, रेटिंग तथा नॉमिनेशन का उपयोग चेकलिस्ट, दैनिक घटनाओं तथा जीवनियों के रिकार्ड, सामान्य विद्यालय गतिविधियाँ एवं विशेष हैं। आपने पहले भी 'निर्देशन एवं परामर्श के गुणात्मक आकलन की यूनिट में इनमें से कुछ के विषय में पढ़ा हुआ है।

(i) अवलोकन

अवलोकन को, विभिन्न स्थितियों चाहे कक्षा या खेल के मैदान में उच्च या निम्न सर्जनात्मक प्रतिभा वाले बच्चों की पहचान के महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में माना जाता है। हालांकि एक बच्चे के कुछ अवलोकन तथ्य तक पहुँचने हेतु पर्याप्त नहीं है अतः बच्चे की वास्तविक तस्वीर प्रदान नहीं करते। अवलोकन प्राकृतिक वातावरण में

कक्षा या बाहर किया जा सकता है। कभी कभी कक्षा में जानबूझ कर स्थितियों को बनाया जाना भी आवश्यक है जहाँ बच्चों को अवसर दिए जाएं और सर्जनात्मकता से जुड़ी क्षमताओं व गुणों के प्रदर्शन हेतु अभिप्रेरित किया जाए। ये अवसर उदाहरण के तौर पर बच्चों को अधूरी सूचनाओं को पूर्ण करने के विचारों की गहराइयों में जाने और कुछ नया खोजने, नये बोध के साथ विचारों तथा वस्तुओं की पुनर्व्यस्था एवं पुनः नियोजन, वस्तुओं की बेहतरी के सुझाव माँगना, आदि के लिए प्रेरित करना हो सकते हैं।

बच्चे की सर्जनात्मक संभावनाओं का अंदाजा उत्पादों – चाहे वह विचार हो, कला या शिल्प का नमूना, एक कविता, एक कार्टून, खिलौने के साथ सर्जनात्मक खेल या समस्या के समाधान आदि के अवलोकन से भी लगाया जा सकता है। इनके अलावा दिन प्रतिदिन और नियमित विद्यालयी गतिविधियों में बच्चे की प्रतिभागिता, उत्साह, पहल करना, मौलिकता और कल्पना का स्तर भी सर्जनात्मक संभावनाओं को बताता है। एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्मरणीय बिन्दु है कि सर्जनात्मकता का प्रमाण-चिह्न विलक्षणता है।

(ii) रेटिंग एवं नॉमिनेशन

सर्जनात्मकता की जाँच हेतु रेटिंग स्केल भी अत्यन्त लोकप्रिय है। साथियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा स्वयं द्वारा नॉमिनेशन और रेटिंग का उपयोग किया जाता है। मूल्य निर्धारणकर्ता से बच्चों या विद्यार्थियों को सर्जनात्मकता के विशेष गुणों क्षमताओं और लक्षणों की न्यूनता या अधिकता की श्रेणियों में निर्धारित करने को कहा जाता है। यह तीन या पाँच बिंदुओं वाला हो सकता है। शिक्षक के नॉमिनेशन का उदाहरण उन बच्चों के नाम लिखना है जिनके पास हमेशा ऐसे अनेकों विचार होते हैं जो कोई अन्य नहीं सोच सकता। अभिभावकों द्वारा रेटिंग का उदाहरण सर्जनात्मकता से जुड़े लक्षणों पर अपने बच्चे के मूल्य निर्धारण के लिए कहना है। इसी प्रकार विद्यार्थियों के उत्पादों तथा प्रदर्शन की विलक्षणता के बारे में रेटिंग प्राप्त की जाती है।

व्यक्तियों के उत्पादों, उदाहरण के लिए लेखन की एक रचना, कोई संगीत रचना, एक कविता, कला या शिल्प का नमूना आदि, के आधार पर सर्जनात्मकता का आकलन निर्माणकर्ताओं जो कि सर्जनात्मकता के विशिष्ट क्षेत्रों के विशेषज्ञ होते हैं, उनके द्वारा एक प्रकार की सर्वसम्मति के कारण सीमित होता है। सामान्यतः रेटिंग स्केल का विकास विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों के उत्पादों या फाइलों की परख से किया जाता है।

व्यक्तियों के उत्पाद के रूप में रचनात्मकता का आकलन उदाहरण के लिए एक लेख, संगीत की रचना, कला एवं शिल्प की कृति, निर्णायककर्ता की कुछ विशेष प्रकार की सहमतियों पर निर्भर करता है जो रचनात्मकता के किसी विशिष्ट क्षेत्र के विशेषज्ञ हों। अक्सर विभिन्न क्षेत्रों में किये गये कार्यों के उत्पाद या पोर्टफोलियों पर निर्णय हेतु रेटिंग स्केल विकसित किये जाते हैं। इसका निहितार्थ यह है कि किसी विशेष उत्पाद या प्रदर्शन के क्षेत्र का विशेषज्ञ रेटिंग देगा और अन्य निर्णायककर्ताओं के द्वारा सहमति का उपयोग किया जाएगा। दृश्यकला, चित्रण आदि के क्षेत्र में कुछ मानक रेटिंग स्केलों का विकास किया गया है।

(iii) चेक लिस्ट

रचनात्मक संभावनाओं की पहचान का एक अन्य अत्यन्त महत्वपूर्ण अपरीक्षण तरीका विभिन्न प्रकार के चेकलिस्टों का उपयोग है। एक ऐसा ही उपकरण टॉरेंट द्वारा अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'गाइडिंग क्रिएटिव टैलेंट' में दिया गया है। यह 100 गतिविधियों की एक सूची है जिन्हें बच्चे विभिन्न क्षेत्रों में स्वयं कर सकते हैं।

गतिविधियाँ भाषा, कला, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और अन्य क्षेत्रों के अनुकूल होती हैं। इस चेक लिस्ट के कुछ उदाहरण हैं— एक कविता लिखो, कठपुतली प्रदर्शन आयोजित करो, नाटक में अभिनय करो, एक गीत लिखो तथा संयोजित करो, एक नया खेल बनाओ, एक नये उपकरण का मॉडल बनाओ, अभिभावकों तथा अन्य लोगों के साथ आत्मीयपूर्ण संबंध कायम करने के लिए एक समस्या का समाधान करो। ये गतिविधियाँ बच्चों में छिपी सभावनाओं को बता सकती हैं।

(iv) किस्से तथा जीवनियाँ

सर्जनात्मकता को पहचानने का महत्वपूर्ण स्रोत किस्सों एवं जीवनियों के रिकार्डों का उपयोग करना है। उन उपकथाओं, प्रसंगों, उदाहरणों तथा घटनाओं का रिकार्ड रखना है जो विद्यार्थी की कल्पना, जिज्ञासा, हास्य-प्रवृत्ति, स्वतन्त्र चिंतन, निर्णय एवं चीजों को करने की मौलिक शैली पर प्रकाश डालने वाला महत्वपूर्ण स्रोत हो सकता है। आप किसी विशेष बच्चे के बीते जीवन के सर्जनात्मकता के उदाहरणों को दीर्घकालीन केन्द्रित कार्यों, कठिन कार्यों की सफलता में विश्वास रखने की उसकी क्षमता, आदि में देख सकते हैं। आधारीय विचार यह है कि जिन बच्चों ने सर्जनात्मकता से संबंधित कुछ गुणों का पूर्व में प्रदर्शन किया है, वे ऐसा जारी रखेंगे।

(v) सामान्य विद्यालयी गतिविधियाँ

सर्जनात्मक कला, नाटक तथा लेखन स्वयं तथा सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। विद्यालय में ऐसी गतिविधियों की सामान्यतः उच्च स्तरीय संरचना व्यवस्था होती है जिसमें बच्चे को अपनी कल्पना की अभिव्यक्ति हेतु बहुत कम या ना के बराबर स्थान दिया जाता है। अक्सर ऐसी गतिविधियाँ जो आमोद-प्रमोद उत्पन्न करती हैं रुचिकर तथा नित्यचर्या से अलग होती हैं वे सर्जनात्मक कहलाती हैं। हालांकि गतिविधियों को तभी सर्जनात्मक कहा जा सकता है जब उनमें करने को बहुत कुछ हो और वे बच्चे की कल्पना तथा मौलिक चिंतन को उत्तेजित करती हों। अधिकतर कला गतिविधियाँ जैसे आलेखन और चित्रकारी हेतु बच्चों को अच्छे आलेख या रंगचित्रों से नकल करनी होती है। बच्चों की कल्पना को पूर्ण स्वतन्त्रता देने के लिए आरंभ में तकनीकी पहलुओं पर ज्यादा जोर न देते हुए बच्चों की नकल या अन्य लोगों के विचार न लेते हुए अपने विचारों और बिम्बों के व्यक्तिगत प्रदर्शन की स्वतन्त्रता हेतु प्रोत्साहित करना चाहिए। सर्जनात्मक लेखन भी बच्चों को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के अवसर प्रदान करता है। सर्जनात्मक लेखन किसी के विचारों, प्रभावों, भावना, भय, आशाओं की पूर्ण अभिव्यक्ति से संबद्ध है और विद्यार्थियों को कल्पना से लिखने, गद्य, पद्य, ड्रामा, फिक्शन, निबन्ध, जीवनियाँ और इस प्रकार लेखन में सर्जनात्मक सभावनाएँ ला सकते हैं। सर्जनात्मक गतियाँ, नृत्य, ड्रामा आदि बच्चे को सोचने, करने और अभिनय की पूर्ण स्वतन्त्रता देते हैं। विद्यार्थियों को मात्र कहानी की रूपरेखा दी जाती है और अपनी इच्छानुसार जो उनका मन करे, उन संवादों के साथ अभिनय करने हेतु छोड़ दिया जाता है।

(vi) विशेष योजना

इन योजनाओं को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा और पहचान हेतु विशिष्ट विषय क्षेत्रों के अध्यापन के दौरान प्रयोग में लाया जा सकता है। शिक्षक अपने विषयों के अध्यापन में सर्जनात्मक अभिव्यक्ति की प्रेरणा हेतु उचित स्थान खोज सकते हैं। इनमें से कुछ वस्तुओं या परिस्थितियों के बीच समानता ढूँढना, या विचारों को नये तरीके से नियोजित करना, आदि है। नीचे कुछ विशेष योजनाएँ दी गई हैं जिन्हें अपने विशिष्ट विषयों के अध्यापन के साथ समाविष्ट किया जा सकता है।

- ज्ञान में विरोधाभास या अन्तराल देखना (विरोधाभास दिखाना, जहाँ दो तत्वों को एक दूसरे के विपरीत तत्वों के साथ लाया जाता है, उदाहरण के लिए स्वास्थ्यकारी विष) ।
- दैनिक संवादों और विद्यार्थियों को पढ़ाते समय प्रश्नों को भी सर्जनात्मक संभावनाओं की पहचान का उपकरण बनाया जा सकता है । उदाहरण के लिए, विद्यार्थियों को किसी दिए गए विषय पर अधिक से अधिक विभिन्न प्रकार के प्रश्न बनाने के लिए कहा जा सकता है । आप उन विद्यार्थियों को देख सकते हैं जो कठिन, उलझे हुए और असामान्य प्रश्न पूछते हैं । एक अन्य उदाहरण है जहाँ विद्यार्थी सूचना की जाँच हेतु अलग या नवीन तरीकों से उत्तेजक प्रश्न पूछते हैं । प्रश्न पूछना – दिये गये विषय या विचार पर अधिकाधिक विविध प्रश्नों को बनाना (उदाहरण के लिए, प्रश्नों की सूची तैयार करना जिनके उत्तर पाठ्यपुस्तक में न दिए गए हों परन्तु वे जानना पसन्द करें) ।
- संशोधन या परिवर्तन करना (पुराने गैजेट्स या वस्तुओं, जैसे- डस्टर, छाता, पेन आदि के द्वारा नये डिजायनों के विचार) ।
- वस्तुओं या विचारों को नये अर्थ देना (कुछ शब्दों को नये दृष्टिकोणों के साथ वर्णित करना या किसी प्रकार से जानी पहचानी वस्तुओं जैसे कुर्सी, चॉक, डस्टर या पेन को सुधारना जिससे वह बेहतर, अलग और अधिक उपयोगी हो सके । उदाहरण के लिए, कुर्सी को बैठने के अलावा, पेन को लिखने के अलावा अन्य कार्य में प्रयोग करना) ।
- अपूर्ण को विविध तरीकों से पूर्ण करना (जैसे अधूरी कहानियों या कविताओं को पूर्ण करना)
- विद्यार्थियों को बारीकी से निरीक्षण करने के लिए कहना या विस्तार हेतु संवेदनशील बनाना (जैसे- विद्यार्थियों से संबंधित विविध आधारभूत ज्यामितीय आकृतियों वाली वस्तुओं को उनके वातावरण में देखना या वातावरण में विभिन्न ध्वनियों को सुनना) ।
- मुख्य तत्व पर जोर देना (उचित शीर्षक खोजना, लेखों को संक्षिप्त करना, कहानी या नाटक की आधारभूत विषय वस्तु को पहचानना) ।
- कल्पनाशीलता (विचारों और भावनाओं को दृश्य रूप में वर्णित करना, उदाहरण के लिए विद्यार्थियों को कल्पना करने दीजिए कि वे पतंग पर बैठे छोटे-छोटे कीड़े हैं और उन्हें वर्णन करने को कहें कि उन्हें वस्तुएँ कैसी दिख रही हैं) ।
- बिना अधिक स्रोतों के बेहतर करना (उदाहरण के रूप में, बिना उपकरण या व्यवस्था के मापन) ।

यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि आपको सर्जनात्मक संभावनाओं को पहचानने के लिए एक से अधिक तरीकों का उपयोग करना होगा । कोई भी एक तरीका अपने में सम्पूर्ण नहीं होता । शिक्षक परामर्शदाता को बच्चों में सर्जनात्मक संभावनाओं को पहचानने तथा जाँचने हेतु ऐसे बहुत से तरीकों के बारे में सोचने के लिए अपनी कल्पनात्मकता तथा प्रवीणता का उपयोग करना होगा । यह न केवल पहचान के वरन् सर्जनात्मकता के पोषण के भी अवसर उपलब्ध करता है ।

गतिविधि -1

जो विभिन्न तरीके आपने सीखे हैं, उनके आधार पर अपनी कक्षा या पड़ोस के सर्जनात्मक विद्यार्थियों की पहचान करें। बताइए कि उन्हें कैसे पहचाना ? इन विद्यार्थियों में देखे गए लक्षणों / गुणों / क्षमताओं के समूहों की सूची बनाएँ।

3.6.2 सर्जनात्मकता के आकलन के मानक परीक्षण

सर्जनात्मकता चिंतन की संभावनाओं के आकलन हेतु अनेक मानक परीक्षणों का विकास किया गया है। ये परीक्षण अन्य मनावैज्ञानिक परीक्षणों की भांति व्यक्तिगत विभिन्नताओं पर आधारित हैं। ये परीक्षण के लिए कम और सर्जनात्मक व्यक्तियों की पहचान के लिए अधिक प्रयुक्त होते हैं जिसमें उनकी संभावनाओं का अधिकतम पोषण करने का विचार होता है।

अधिकतर सर्जनात्मक परीक्षणों का सामान्य लक्षण उनका खुलापन है। ये व्यक्ति को प्रश्नों या कठिनाइयों के भिन्न उत्तरों पर चिंतन करने की अनुमति देते हैं। इनमें कोई विशिष्ट उत्तर नहीं होते, अतः किसी को भी अपनी कल्पनाशीलता के प्रयोग तथा मौलिक तरीकों से अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता होती है। सर्जनात्मक परीक्षणों में अपसारी चिंतन सम्मिलित होता है अर्थात् नये संबंधों को खोजना, कारणों व परिणामों के अनुमान करने की क्षमता या नये संदर्भों में वस्तुओं को रखने की क्षमता। यह बुद्धिमत्ता परीक्षण के विपरीत होता है, जिसमें अभिसारी चिंतन सम्मिलित होता है। बुद्धिमत्ता परीक्षण में व्यक्ति को समस्या का सही हल सोचना होता है। इसमें सहजता, मौलिकता और कल्पनाशीलता के लिए कोई स्थान नहीं होता है। बुद्धिमत्ता परीक्षण स्मृति, तार्किक क्षमता, सटीक और स्पष्ट चिंतन जैसी क्षमताओं व कौशलों जैसे धाराप्रवाहिता, लचीलापन, मौलिकता तथा विस्तारीकरण का मापन करता है, जिन्हें किसी भी प्रकार के सर्जनात्मक प्रयत्नों के लिए महत्वपूर्ण माना जाता है चाहे वह किसी भी क्षेत्र या विद्या में हो। ये क्षमताएँ उत्पाद के बजाय सर्जनात्मक चिंतन प्रक्रिया पर आधारित हैं।

बच्चे सर्जनात्मकता को विभिन्न तरीकों से अभिव्यक्त कर सकते हैं, अतः परीक्षणों को विभिन्न प्रकार के तत्वों जैसे- शब्द चित्र (अ-शाब्दिक), क्रियाओं व ध्वनि आदि के द्वारा विकसित किया जाता है। कुछ अत्यन्त सर्जनात्मक बच्चे शाब्दिक विकास में पीछे हो सकते हैं, अतः शाब्दिक मापन के पूरक के रूप में अ-शाब्दिक परीक्षणों का प्रयोग किया जाता है। सभी परीक्षणों को समूह या व्यक्तिगत रूप से किया जा सकता है। कुछ परीक्षण मिडिल या हाईस्कूल विद्यार्थियों के लिए अधिक उपयोगी हैं, अन्य को प्राइमरी या ग्रेजुएट स्तर पर उपयोग किया जा सकता है। प्रत्येक टेस्ट की एक मानक प्रक्रिया, नियमावली का एक सम्पूर्ण सेट और अंक तथा व्याख्या सहायक पुस्तिका होती है। कुछ परीक्षण वाणिज्य हेतु उपलब्ध हैं।

यहाँ विभिन्न प्रकार की टेस्ट गतिविधियों और क्षमता, जिनका वे मापन करती हैं, उदाहरण के रूप में देने का प्रयास किया गया है। इसका उद्देश्य आपके इन परीक्षणों द्वारा पता लगाये जाने वाली सर्जनात्मक चिंतन प्रक्रिया तथा क्षमताओं से भिन्न कराना है जिससे आप कक्षा के दैनिक संदर्भों में इस प्रकार की गतिविधियों का निर्माण कर सकें। सर्जनात्मक चिंतन के टेरेन्स परीक्षणों को सर्जनात्मकता से सामान्य संभावनाओं के आकलन हेतु सर्वधिक उपयोग किया जाता है।

टौरेन्स का सर्जनात्मक चिन्तन परीक्षण

टौरेन्स द्वारा 15 वर्षों के शोध और विकास के पश्चात् अपने परीक्षणों को विकसित किया गया था। टौरेन्स के अनुसार परीक्षण के कार्य पहचानी गई सर्जनात्मक उपलब्धियों में उपयोग किये जाने वाले सर्जनात्मक चिंतन प्रक्रिया पर आधारित हैं। ये लेखक के वैज्ञानिकों, कलाकारों, लेखकों तथा अन्य प्रसिद्ध सर्जनात्मक व्यक्तियों के द्वारा प्रदर्शित चिंतन तथा व्यवहार के विश्लेषण पर आधारित हैं।

शाब्दिक परीक्षण में 45 मिनट में सात कार्य किए जाते हैं। चित्र परीक्षण में 30 मिनट में तीन कार्य करने होते हैं। दोनों परीक्षणों को किंडरगार्टन से ग्रेजुएट स्तर तक उपयोग किया जा सकता है। चित्र परीक्षणों को विद्यालयी-पूर्व बच्चों से लेकर कक्षा-XII के बच्चों के साथ-साथ व्यस्कों के लिए भी प्रयोग किया जाता है। शाब्दिक परीक्षण का प्रयोग कक्षा-XII के बच्चों से लेकर व्यस्कों के लिए भी किया जाता है।

शाब्दिक तथा चित्र परीक्षण बैटरी, दोनों में व्यक्तिगत तथा सामूहिक वैकल्पिक रूप हैं। शाब्दिक परीक्षण के लिए छोटे बच्चे बड़ों को अपनी प्रतिक्रिया बता सकते हैं और बड़े बच्चे अपने जवाब दे सकते हैं। इन कार्यों के वर्णन नीचे दिये गए हैं।

शब्दों के साथ सर्जनात्मक चिंतन - शाब्दिक कार्य

- (i) पूछना तथा अनुमान लगाना ये कार्य सात कार्यों में से पहले तीन हैं जो जिज्ञासा की अभिव्यक्ति की अनुमति देते हैं और सिद्धांत की क्षमता तथा बहुत सी संभावनाओं के चिंतन का आकलन करते हैं। व्यक्ति को एक चित्र दिया जाता है और चित्र की घटनाओं के समबन्ध में प्रश्न पूछने, कारणों का अनुमान लगाने या जो घट रहा है उसका कारण देने या परिणामों या कार्यों के परिणामों का अनुमान लगाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है जिन सबका उत्तर मात्र चित्र को देखने से नहीं दिया जा सकता है।
- (ii) उत्पाद परिवर्धन का कार्य व्यक्ति को ऐसे विचारों से खेलने की अनुमति देता है जिसे वह अधिक गंभीर परिस्थितियों में अभिव्यक्त नहीं कर सकता। यह कार्य व्यक्ति को किसी रूई से भरे खिलौने को खेलने के लिए और मनोरंजक बनाने के लिए अधिक रुचिकर असामान्य तथा कल्पनाशीलता पूर्ण विचारों के चिंतन के लिए प्रोत्साहित करता है।
- (iii) असामान्य उपयोग वाले कार्यों में सामान्य वस्तुओं जैसे कार्डबोर्ड डिब्बों आदि के असामान्य, रुचिकर तथा दुर्लभ उपयोगों के विचारों को सोचने के लिए कहा जाता है। इस कार्य में व्यक्ति को वस्तुओं के सामान्य उपयोगों से हटकर सोचने या करने की आवश्यकता होती है।
- (iv) असामान्य प्रश्न वाले कार्य अपसारी शक्ति के मापन हेतु उपयोग वाली विधि पर आधारित है जो सर्जनात्मक उपलब्धि हेतु आवश्यक मानी जाती हैं और कक्षा में सर्जनात्मकता के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह कार्य व्यक्ति को नवीन तथा असामान्य प्रश्न पूछने हेतु प्रेरित करता है।
- (v) मान लिया जाए वाले कार्य इस परीक्षण को कहते हैं। इस कार्य को कल्पनाशीलता के उच्च स्तर को जानने के लिए बनाया गया है और बच्चों के मध्य अच्छी प्रकार से क्रियान्वयन की प्रत्याशा रखता है।

किसी व्यक्ति से उन सब सभावित बातों पर सोचने के लिए कहा जाता है जो तब घटित हो सकती है जब कुछ जैसा होना चाहिए वैसा ना हो पाया हो। उदाहरण के लिए माना कि बादलों में रस्सियाँ थी जो पृथ्वी तक लटक रही थी तो क्या होगा ? 'अनुमान लगाइए' कार्यों में रुचिपूर्ण चित्र असंभव परिस्थितियों को दर्शाने हेतु किये जाते हैं।

चित्र कार्य

- (i) चित्र निर्माण कोई आकृति माना आंसू की बूंदें, रंगीन कागज की बनी और जिसके पीछे गोंद लगा हो, बच्चे को दी जाती हैं। उससे कहा जाता है कि वह जो चित्र बनाने जा रहा है उसका यह एक अभिन्न हिस्सा है और जिसको और अर्थपूर्ण बनाने के लिए और विस्तार देने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। इस कार्य को किसी वस्तु के उद्देश्य को पाने के लिए किस प्रकार से विस्तार देना है, इस को गति देने हेतु बनाया है।
- (ii) चित्र पूर्णता यह कार्य इस सिद्धांत पर आधारित है कि किसी चित्र का अधूरापन एक व्यक्ति में इसे सरल तथा संभव तरीके से पूर्ण करने हेतु तनाव उत्पन्न करता है। अतः यदि एक मौलिक चित्र दिया जाता है तो व्यक्ति को सामान्यतः अपने तनाव को नियंत्रित करना होता है और चित्र पूर्ण करने की खुशी में देर करनी होती है। इस कार्य में 10 अधूरे चित्र होते हैं जो टेस्ट बैटरी में दिये गये हैं। निर्देश इस प्रकार हैं 'चित्र में कुछ रेखाएँ खींचने से आप कुछ मनोरंजक वस्तुएँ या चित्र बना सकते हैं। पुनः ऐसी वस्तुओं या चित्रों के बारे में सोचिए जिन्हें किसी ने ना सोचा हो। इसे बनाने का प्रयास करें, एक सम्पूर्ण व रुचिकर कहानी कहें जैसा आप कह सकते हैं, अपने प्रथम विचार में जोड़ कर या बनाकर। अपने चित्र हेतु शीर्षक दें व प्रत्येक ब्लॉक के नीचे चित्र के नम्बर के बाद इसे लिखें।
- (iii) चित्र बारम्बारिता - अधूरे चित्र कार्य की भांति, चित्र बारम्बारिता कार्य में व्यक्ति को बंद चित्र वाले जैसे त्रिभुज व रेखाओं के, दो या तीन पेज दिये जाते हैं और उसे अपनी कल्पनाशीलता के उपयोग द्वारा उन त्रिभुजों या रेखाओं को महत्वपूर्ण भाग मानकर चित्र बनाने हेतु प्रोत्साहित किया जाता है। सिद्धांतानुसार रेखाएँ, जो अधूरी हैं, उसे पूर्ण करने व संरचना करने की सर्जनात्मक प्रवृत्ति को जगाने का कार्य करती हैं जबकि त्रिभुजों की आवश्यकता पहले से पूर्ण रचना को रोकने या नष्ट करने में होती हैं। प्रत्येक उप परीक्षण की विशेष समय सीमा है। ये धाराप्रवाहिता, लचीलापन और मौलिकता का मापन उपलब्ध कराते हैं। चित्र परीक्षण विस्तारीकरण का मापन भी करते हैं। मानक अमेरिकन सैम्पल पर आधारित हैं क्योंकि मौलिकता सदैव किसी विशेष समूह के सदस्यों में मापी जाती है। मौलिकता के लिए पृथक अंक दिए जाते हैं चाहे परीक्षण का उपयोग उदाहरण के रूप में, भारतीय परिस्थित में किया हो।

कुछ कल्पनाशील तथा संसाधनपूर्ण शिक्षक परीक्षण गतिविधियों के आधार पर जैसे : अनुमानित कारण, नये संबंध खोजना, क्या होगा यदि ----- अनुमान लगाइये, संभावनाओं पर विचार बेहतरी के विचार, असामान्य प्रश्न पूछना, आदि से गतिविधियों, अभ्यासों व प्रश्नों द्वारा परिस्थिति मापन कर सकते हैं। गतिविधियों का विकास वास्तविक जीवन की परिस्थितियों या पाठ्यचर्या क्षेत्रों से सम्बद्ध करते हुए बच्चे में सर्जनात्मक संभावनाओं के विकास को सहायता हेतु किया जा सकता है।

परीक्षण स्थितियों का प्रभाव

अन्य मनोवैज्ञानिक परीक्षणों की भांति सर्जनात्मक परीक्षण को सम्पन्न करने व व्याख्या करने हेतु अन्तर्दृष्टि तथा कौशल की आवश्यकता है। विभिन्न शोध अध्ययन दर्शाते हैं कि सर्जनात्मक परीक्षणों को सम्पन्न करने या जिन परिस्थितियों में इन्हें कराया जाता है इनमें भिन्नता आने पर परीक्षण प्रदर्शन पर प्रभाव पड़ता है। ये भिन्नता परीक्षण के शब्दों, कक्षा स्थिति, आदि में हो सकती है। परीक्षणों में से एक में टैरेन्स ने पाया कि 'ऐसा सोचने का प्रयास करें जो किसी और ने ना सोचा हो' जैसे शब्दों के जोड़ देने पर नकल की मात्रा कम तथा प्रतिक्रियाओं की मौलिकता अधिक हो गई। अतः विद्यार्थियों को परीक्षण के कुछ कारण देने महत्वपूर्ण हैं। कुछ सर्जनात्मक परीक्षण ऐसा नहीं करते, अभ्यर्थियों को बताया नहीं जाता कि उनको किस विषय में परीक्षण देना है।

वॉलाच तथा कोगन ने विभिन्न परिस्थितियों में सर्जनात्मक परीक्षणों के उपयोग पर सघन कार्य किया है। उन्होंने समयबद्धता रहित तथा खेल के समान वातावरण की वकालत की। शोधार्थियों के मध्य एक सामान्य भावना है, वह यह है कि विशेष रूप से छोटे बच्चों के लिए सर्जनात्मक परीक्षण बिना समय सीमा के प्रयोग हों।

अवस्था, जिसे उद्देश्यपूर्ण शिथिलता की अवस्था भी कहते हैं, सर्जनात्मक प्रक्रिया का महत्वपूर्ण भाग है। इस अवस्था में कुछ मिनट या कुछ घण्टे सम्मिलित हो सकते हैं जो दिए गए कार्य पर निर्भर करता है। अतः मौलिक विचारों के उत्पादन हेतु पर्याप्त समय दिया जाना चाहिए। इसके अलावा परीक्षण हेतु वातावरण आरामदायक हो। बच्चों को गतिविधियों का आनंद लेने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। परीक्षण से पूर्व तथा बाद का मनोवैज्ञानिक वातावरण प्रेरणादायी तथा हानिरहित होना चाहिए। परीक्षण प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रुचि, जिज्ञासा तथा कल्पना जगाना है।

सर्जनात्मक परीक्षण में अंक पाना

सामान्यतः सर्जनात्मक परीक्षणों की प्रतिक्रियाओं को दो तरीके से आकलित करते हैं। या तो खुले विकल्प वाले प्रश्नों के उत्तरों के संख्याओं का योग करते हैं या इन दिये गये उत्तरों की गुणवत्ता का आकलन करते हैं। साधारण तरीके से उत्तरों की संख्या देखना, जैसे 'टिन कैन के अधिक से अधिक मनोरंजक व अलग उपयोगों को सोचकर लिखें', धाराप्रवाहिता को मापता है। इसके अनुसार इस प्रकार के कथनों 'केतली के रूप में प्रयोग', 'इसमें पानी उबालना' को दो अंक मिलेंगे, क्योंकि वे दो अलग उत्तर हैं। हालांकि, कथनों की गुणवत्ता के अंकों में यह देखना आवश्यक है कि उत्तरों की सूची में श्रेणियों में कितने बदलाव या विभिन्नताएँ हैं। इसे लचीलापन के अंकों हेतु देखते हैं। इस मानक के अनुसार, ऊपर दिये गए उत्तर लचीलेपन हेतु केवल एक अंक प्राप्त करेंगे क्योंकि वे एक मुख्य विचार से सम्बद्ध हैं। कथनों जैसे 'केतली के रूप में प्रयोग करना' और 'शत्रुओं पर फेंकना' को लचीलेपन के लिए दो अंक मिलेंगे क्योंकि उत्तर में दो विभिन्न श्रेणियाँ थीं। गुणवत्तापूर्ण अंकों के लिए दूसरा तरीका इस आधार पर कथनों को अंक देना कि जिस समूह से वह बच्चा सम्बन्धित हो, उनसे उसके उत्तर कितने अलग हैं। समूह के कुछ ही बच्चों द्वारा दिये गये कथनों को मौलिक माना जाएगा और मौलिकता के लिए अंक देय होंगे। अंको को दिये जाने की प्रक्रिया निर्देश पुस्तिका में होती है।

मौलिकता हेतु अंक दिये जाने में अधिक समय लगता है। किसी पूरे समूह में खास कथन की पुनरावृत्ति/बारम्बारिता को रिकार्ड करना महत्वपूर्ण है। यह बारम्बारिता तब विशेष कथन कहने वाले प्रतिभागियों के

प्रतिशत में परिवर्तित की जाती है और उनके प्रतिशत के आधार पर अंक दिए जाते हैं। जो कथन कम दिए गए या भिन्न हों उन्हें ज्यादा अंक दिये जाते हैं क्योंकि इन्हें मौलिक माना जाता है।

हालांकि प्रत्येक परीक्षण की अंक प्रक्रिया मानकीकृत होती है और मौलिकता हेतु मूल्य निर्धारण पर कार्य किया जाना भी निर्देश पुस्तिका में वर्णित होता है, तब भी पूर्ण मानकीकृत व तथ्यपूर्ण उत्तरकुंजिका होना अत्यन्त कठिन है। क्योंकि सर्जनात्मक परीक्षणों में एक मुख्य विचार यह भी निहित होता है कि इनका कोई विशेष उत्तर नहीं होता है। उच्चस्तरीय मौलिक उत्तरों, जिन्हें पहले कभी नहीं दिया गया हो, की सूची बनाना असंभव है।

एक तकनीकी समस्या भी कभी-कभी नजर आती है जब निर्णय करना होता है कि कथन उच्चस्तरीय मौलिक है या पूर्णतः अनोखा। अतः एक प्रशिक्षित मूल्य निर्धारणकर्ता द्वारा सर्जनात्मक परीक्षण में मूल्य निर्धारण का कार्य किया जाना चाहिए।

3.6.2.1 सर्जनात्मक परीक्षणों की आलोचना

अनेक तर्कों के आधार पर सर्जनात्मक परीक्षणों की आलोचना की जाती है। कुछ आलोचनाएँ व्यावहारिक समस्याओं के संदर्भ में की जाती हैं। जो परीक्षण उपयोग में उठती हैं, जैसे- परीक्षण के अंक निर्धारण में समय लगाना और कुछ अन्य तकनीकी मुद्दों, जैसे- सर्जनात्मक परीक्षणों की विश्वसनीयता तथा वैधता के कारण होती हैं। सर्जनात्मकता के परीक्षणों की मुख्य आलोचनाएँ निम्न हैं –

- सर्जनात्मक परीक्षण सामान्यतः सीमित समयावधि के होते हैं। समय के दबाव की प्रतिकूल प्रतिक्रियाएँ हो सकती हैं जो कुछ उच्च सर्जनात्मक बच्चों को उनकी संभावनाएँ प्रदर्शित करने से रोक सकती हैं क्योंकि सर्जनात्मकता समय लेती है। सर्जनात्मक प्रक्रिया अन्तर्दृष्टि के प्रकाश में नहीं होती।
- सर्जनात्मक परीक्षण सर्जनात्मक होने के भावात्मक पक्ष में संबंध नहीं रखते। ये केवल बौद्धिक क्षमताओं जैसे धाराप्रवाहिता, लचीलापन, आदि मापते हैं। इसीलिए कुछ अनुसन्धानकर्ता इन परीक्षणों के बजाय सर्जनात्मकता परीक्षण के अपसारी चिंतन परीक्षण होने के कारण आलोचना करते हैं।
- सर्जनात्मक परीक्षण कुछ भी ऐसा अलग नहीं मापते जो बुद्धिलब्धि परीक्षण में ना मापा जाता हो। इन आलोचनाओं के प्रत्युत्तर हेतु बहुत अधिक अनुसन्धान हुए हैं। परिणामों में भिन्नता है परन्तु प्राप्त तथ्य संकेत देते हैं कि सर्जनात्मक परीक्षण मापन बुद्धिलब्धि परीक्षण मापन के समरूप नहीं हैं। दोनों प्रकार के परीक्षणों में सम्मिलित चिंतन प्रक्रिया भिन्न है।
- सर्जनात्मक परीक्षण वास्तविक जीवन की परिस्थितियों में सर्जनात्मकता की भविष्यवाणी नहीं करते। इसलिए, सर्जनात्मकता परीक्षण के प्रदर्शन का व्यस्क के रूप में भविष्य की सर्जनात्मक उपलब्धियों से कोई संबंध नहीं है। जैसा कि बताया गया है परीक्षण अत्यंत सरल हैं, जब इस बात से तुलना की जाती है कि लोगों के मस्तिष्क में क्या होता है जब वे सर्जनात्मकता की बात करते हैं। क्या वृत्त सम्मिलित करते हुए चित्र बनाना और उनके लिए नये नाम सोचना वास्तव में चिंतन प्रक्रिया से जुड़ा है जिससे डा विंसी या आइन्सटीन सर्जनात्मक बने। यह सिद्ध करना कठिन है हालांकि, परीक्षणों को विकसित करने वाले कुछ लोगों ने सर्जनात्मक परीक्षण की निम्न पूर्वानुमानिता का उत्तर देने का प्रयास किया है। उन्होंने बताया

कि सामान्यतः परीक्षण की सम्पूर्ण बैटरी का प्रयोग करने के बजाय, एकल परीक्षण का उपयोग होता है और परीक्षण का समय भी कम किया जाता है। ऐसी परिस्थिति में कोई कैसे सुनियोजित कार्यों तथा वास्तविक जीवन से जुड़े सर्जनात्मक उपलब्धियों के मध्य उच्च अन्तर्सम्बन्ध की आशा कर सकता है ?

हाई स्कूल तथा प्राथमिक विद्यालय के सर्जनात्मक चिंतन के टौरेन्स परीक्षण में सम्मिलित विद्यार्थियों के कुछ समानांतर अध्ययन इन परीक्षणों की कई वर्षों के बाद सर्जनात्मक संभावनाओं को बताने की माध्यम क्षमता का संकेत देते हैं। ऐसे ही एक अध्ययन में, 1959 में हाई स्कूल के विद्यार्थियों का परीक्षण किया गया और 12 वर्ष पश्चात युवा व्यस्कों के रूप में फॉलो किया गया। परिणामों से पता चला कि हाई स्कूल परीक्षण में पहचाने गये सर्जनात्मक विद्यार्थी सर्जनात्मक व्यस्क बने। विभिन्न देशों के शोधों ने सर्जनात्मक परीक्षण प्रदर्शन और भविष्य की सर्जनात्मक उपलब्धि के मध्य इसी प्रकार के समान अन्तर्सम्बन्धों के बारे में बताया है।

3.6.2.2 सर्जनात्मक परीक्षण के उपयोग में सावधानियाँ

परामर्शदाताओं और शिक्षकों को सर्जनात्मक परीक्षण में अत्यन्त सावधानी की आवश्यकता है और प्रोफेशनल ट्रेनिंग के पश्चात ही इनका उपयोग करना चाहिए।

उन्हें बच्चों की सर्जनात्मक संभावनाओं को खोजने हेतु एकल परीक्षण की खोज की प्रवृत्ति से बचना चाहिए। सर्जनात्मकता किसी एक परीक्षण के सामान्य अंकों से प्रदर्शित करने हेतु अत्यधिक जटिल है। कुछ आधारभूत क्षमताओं जैसे धाराप्रवाहिता, लचीलापन और मौलिकता को आकलित करने के अलावा अन्य गुणों के आकलन की भी आवश्यकता है। इस क्षेत्र के विशेषज्ञों के द्वारा सर्जनात्मकता की क्रियाविधियों हेतु सशक्त अनुशंसा की गई है। आदर्श रूप में बच्चे के सर्जनात्मक कार्य, शिक्षक की रेटिंग, बच्चे के गतिविधियों के सम्बन्ध में अभिभावकों तथा साथियों की सूचनाएँ और यदि संभव हो तो बच्चे की सर्जनात्मकता संबंधी परीक्षण अंक, आदि का विवरण रखना अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

यह भी स्पष्ट हो कि चाहे शिक्षक किसी विशेष बच्चे की सर्जनात्मक संभावनाओं के प्रति स्वयं को विश्वस्त करने हेतु वस्तुगत डाटा प्राप्त करने के लिए परीक्षण पर निर्भर होना चाहे परन्तु इस प्रकार क्षमताएँ, कार्य एवं खेल में बच्चों के संवेदनशील अवलोकन से हमेशा सुस्पष्ट हो जाती हैं। एक विद्यार्थी जो लगातार कहानियाँ पढ़ते हुए वैकल्पिक अंत सुझाता है, निश्चय ही सर्जनात्मक संभावना अभिव्यक्त कर रहा है, जिसे स्वीकार किया जाना चाहिए। हालांकि इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इन क्षमताओं की उपस्थिति सर्जनात्मक उपलब्धि की गारंटी नहीं देती है। इनके अलावा, ये सर्जनात्मकता की संभावनाओं और सर्जनात्मक प्रदर्शन की संभावनाओं का संकेत देती हैं। दिन प्रतिदिन के शिक्षण में सर्जनात्मक संभावनाओं को खोजने हेतु वास्तव में अनेकों अवसर होते हैं। कभी-कभी जानबूझकर परिस्थितियों का निर्माण किया जाता है।

अब तक विमर्श किए गए सर्जनात्मक चिंतन के टौरेन्स परीक्षण सर्जनात्मक परीक्षणों/उपकरणों की लिस्ट जर्नल ऑफ क्रिएटिव बिहेवियर (डेविस एंड स्कॉट 1971, कालटसौनिस 1972, कालटसौनिस और हनीवेल, 1980) में उपलब्ध हैं। इसके अलावा द मेंटल मेजरमेंट ईअरबुक्स एण्ड टेस्ट क्रिटिक्स (आस्कर 1938), मुद्रित उपकरणों/परीक्षणों का आलोचनात्मक पुनरावलोकन प्रस्तुत करती है।

गतिविधि -2

दी गई आदर्श परीक्षण गतिविधियों के आधार पर विद्यार्थियों की सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को प्रकाश में लाने के लिए उपयोग की जा सकने वाली दस गतिविधि/परिस्थितियों की रूपरेखा बनाइए।

3.7 अन्य उपागम तथा उपकरण

पिछले पृष्ठों में कुछ सामान्य सर्जनात्मक चिंतन क्षमता के आकलन का वर्णन है परन्तु कुछ इन्वेंटरीज तथा स्केल्स का विकास व्यक्तिगत तथा अभिप्रेरण गुणों के पहचान हेतु विकसित किया गया है जो एक व्यक्ति को सर्जनात्मक चिंतन हेतु प्रवृत्त करता है। रिम और डेविस, 1980 द्वारा विकसित रुचि जानने हेतु सामूहिक इन्वेंटरी (जी आइ एफ आइ) एक सेल्फ रिपोर्ट इन्वेंटरी है जो स्वतन्त्रता, लचीलापन, जिज्ञासा, अध्यवसाय और रुचियों का विस्तार और पहले की सर्जनात्मक गतिविधियों और शौकों का आकलन करती है। कुछ अन्य उपकरण, जैसे- खटेना-टौरेन्स क्रिएटिव परसेप्शन इन्वेंटरी (खटेना, 1976) है जिसमें दो सेल्फ रेटिंग स्केल्स 'समथिंग अबाउट माइसेल्फ' (SAM) और व्हाट काइन्ड ऑफ परसन आर यू? (Wkopay) सम्मिलित हैं। व्यक्तियों से इस प्रकार के कथन पूछे जाते हैं, जैसे, 'जब मैं सोचता हूँ कि मेरे पास रुचिकर विचार हैं, मैं इसे और मनोरंजक बनाने हेतु कुछ जोड़ना पसन्द करता हूँ' ये कथन इन पर लागू होते हैं या नहीं। दूसरी इन्वेंटरी ग्रुप इन्वेंटरी फॉर फाइंडिंग क्रिएटिव टेलेंट (रिम और डेविस 1980) की रूपरेखा बच्चे की सर्जनात्मक संभावनाओं को जाँचने हेतु बनाई गई है। इस सेल्फ रिपोर्ट इन्वेंटरी में अनेक कथन हैं जिसके उत्तर हाँ या नहीं में हैं और सर्जनात्मक चिंतन से संबंधित गुणों जैसे कल्पनाशीलता, स्वतन्त्रता आदि से संबंधित आइटम पर अपनी रुचियों और अभिवृत्ति को दर्शाते हैं। उदाहरण के लिए 'मैं बहुत प्रश्न पूछता हूँ' की हाँ प्रतिक्रिया जिज्ञासा दर्शाती है। क्रिएटिव एटीट्यूड सर्वे (शेफर 1971) का उपयोग किसी के विचारों में आत्मविश्वास, कल्पना, सौन्दर्यपरक रुझान, खुलापन, नवीनता के उपयोग हेतु प्रशंसनीय अभिवृत्तियों को आकलित करने के लिए उपयोग किया जाता है। रेनजूली (1983) द्वारा अभिवृत्ति, अभिप्रेरणा, रुचि, मूल्यों, विश्वास के आकलन हेतु रेटिंग स्केल एक अन्य इन्वेंटरी है जो जिज्ञासा, धाराप्रवाहिता, जोखिम लेना, हास्य और बौद्धिक क्रीड़ाओं, भावात्मक एवं सौन्दर्यपरक संवेदनशीलता, अनुमोदन न करना तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन जैसे लक्षणों की जाँच करती हैं। क्रिएटिव असेसमेंट पैकेज में दो टेस्ट के साथ एक अवलोकन रेटिंग स्केल को अध्यापकों या अभिवाकों द्वारा भरा जाता है (विलियन्स 1980)। पहला टेस्ट अपसारी चिंतन का है और दूसरे में व्यक्तित्व लक्षणों की सूची है जिन पर विद्यार्थियों को स्वयं को 3 बिंदुओं के स्केल रेटिंग में स्वयं के बारे में ज्यादातर असत्य में स्वयं को सत्य पर निर्धारित करते हैं।

यह सत्य है कि अनेकों प्रकार के उपकरण उपलब्ध हैं। कुछ सर्जनात्मक चिंतन प्रक्रिया को जाँचने, कुछ सर्जनात्मक उत्पादों तथा कुछ अन्य सर्जनात्मकता से जुड़े व्यक्तित्व के लक्षणों को जाँचने हेतु उपयोगी हैं। अतः सर्जनात्मक आकलन करने हेतु विद्यालय के भीतर और बाहर विभिन्न संकेतों और स्रोतों को देखना महत्वपूर्ण है।

3.8 आकलन डाटा का उपयोग

सभी आकलन युक्तियाँ शिक्षक तथा परामर्शदाताओं को अपना कार्य बेहतर करने में मदद करते हैं। उदाहरण के लिए सर्जनात्मकता का आकलन शिक्षक को अपने पाठ के नियोजन और उनकी सर्जनात्मक संभावनाओं के प्रोत्साहन हेतु पाठ्यचर्या अनुभव प्रदान करने में मदद करना चाहिए अन्यथा सर्जनात्मकता का आकलन व्यर्थ है।

आकलन डाटा शिक्षक परामर्शदाता को किसी एक विद्यार्थी की सर्जनात्मक अभिव्यक्तियों की ताकतों एवं कमियों के प्रति जागरूक रहने में मदद कर सकती है। हालांकि, एक ही कक्षा में, विद्यार्थी बहुत अधिक विभिन्नता दर्शाते हैं, परंतु एक ही कक्षा की सामान्य ताकतों तथा कमियों को पहचानना संभव होता है। आकलन डाटा हम सभी में सर्जनात्मक संभावनाओं को जगाने और बढ़ाने के लिए मध्यवर्ती योजनाओं की खाका बनाने हेतु तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करने में मदद कर सकता है। आप सामान्य शिक्षण योजनाओं के अन्तर्गत इसके बारे में पहले ही पढ़ चुके हैं।

आकलन डाटा द्वारा उनकी भी मदद की जानी चाहिए जिनकी सर्जनात्मकता उजागर न हो सकी हो या जिसे पहचान न मिल सकी हो। उदाहरण के लिए, यदि एक बच्चे की कलात्मक सर्जनात्मकता, जो उसके चित्रों में प्रदर्शित होती है, को दूसरों से कोई सराहना नहीं मिलती और उसे लगातार मित्रों के सामने नीचा दिखाया जाता है तो वह अपने चित्रों के द्वारा स्वयं को अभिव्यक्ति करने की रुचि खो सकता है। एक अन्य उदाहरण में, गति एवं नृत्य में प्रवाहात्मक सर्जनात्मक अभिव्यक्ति एक बच्चे को लगातार बेचैन रखेगी क्योंकि उसे कक्षा की नित्यचर्या की गतिविधियों में जबरदस्ती बंधे रहना पड़ता है। कक्षा में अपना स्थान बनाए रखने का तनाव उसे तोड़ने लगता है। कोई भी उसकी बेचैनी और अनमने अनियमित विद्रोहीपन के कारणों को समझ नहीं पाता। एक व्यक्ति की सर्जनात्मक संभावनाओं पर ध्यान न देने और उपयोग न किए जाने के ये दो उदाहरण हैं।

समस्या तब आरम्भ होती है जब सर्जनात्मकता का दमन किया जाता है। बच्चे कभी-कभी बहुत अनुकूल तथा आज्ञाकारी हो जाते हैं और अपनी अवास्तविक स्व-अवधारणा विकसित कर लेते हैं। जैसा कि उन्हें चुनौतीपूर्ण कार्य नहीं दिए जाते इसलिए वे कम उपलब्धियाँ दर्शाते हैं। कभी-कभी उन्हें धीमा सीखने वाला भी कह दिया जाता है। बच्चे, जिन्हें सर्जनात्मक तरीके से सीखने में रोका जाता है, सीखने में रुचि की कमी दिखाते हैं। अत्यधिक सर्जनात्मक विद्यार्थियों में व्यवहारगत समस्याएँ भी होती हैं। इसको विद्यालय में इन बच्चों को चुनौतीविहीन कार्य दिए जाने की प्रतिक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है। उचित एवं समय पर पहचान तथा आकलन ऐसे विद्यार्थियों को उनकी विशेष आवश्यकताओं तथा समस्याओं को पहचानने एवं संभावनाओं को आकार देने की सहायता करने में यागदान कर सकता है।

सतर्क शिक्षकों एवं परामर्शदाताओं को कक्षा में सर्जनात्मकता के विभिन्न सबूत मिल सकते हैं। टैरैन्स ने 1969 में अपने एक लेख में एक सर्जनात्मक विद्यार्थी का उदाहरण दिया था जिसकी सर्जनात्मकता को कला की कक्षा में पहचाना गया था। शिक्षक ने उस विद्यार्थी की नकल की प्रवीणता के तरीके से उसको पहचाना। विद्यार्थी को सजा देने से उसकी समस्या समाप्त नहीं होती, जो उसके नकल हेतु प्रेरित करती थी। अवलोकित व्यवहार के सकारात्मक गुणों (प्रवीणता तथा मौलिकता) पर जोर देते हुए शिक्षक द्वारा उसे चुनौतीपूर्ण कार्य दिए गए जिसमें सर्जनात्मक तरीके से समस्या सुलझाने की आवश्यकता थी। इसका परिणाम यह हुआ कि जिस विद्यार्थी को बेकार तथा समस्यात्मक विद्यार्थी माना जाता था उसने 'ए' ग्रेड प्राप्त कर कक्षा में सबसे बढ़िया प्रदर्शन किया। इसने उसके स्व-अभिमान को बनाए रखने में भी मदद की।

उचित निर्देशन द्वारा, सर्जनात्मक बच्चे अपनी समस्याओं का सामना करना व इसके साथ अपनी सर्जनात्मकता को बनाए रखना सीखते हैं। इसके लिए, यह महत्वपूर्ण है कि उनकी सर्जनात्मक संभावनाओं को विभिन्न आकलन प्रक्रियाओं के सबूतों द्वारा जाना जाए।

3.9 सारांश

- सर्जनात्मकता एकल क्षमता या गुण नहीं है। यह बहुआयामी और अनेक क्षमताओं, गुणों व कौशलों से परिपूर्ण होती है। सर्जनात्मकता का सार मौलिकता, नवीनता तथा कल्पना है। सर्जनात्मकता की प्रकृति को सर्जनात्मक विचार प्रक्रिया (यह कैसे होती है), सर्जनात्मक व्यक्ति (वह जो इसे कर सकता है), सर्जनात्मक उत्पाद (परिणाम या निष्कर्ष) तथा वातावरण (जो सर्जन करने में सहायक हो) के दृष्टिकोणों से समझने की आवश्यकता होती है।
- सर्जनात्मकता हेतु आवश्यक क्षमताओं, अभिवृत्तियों तथा अभिप्रेरणा का विकास करने में सभी सक्षम हैं। हालांकि व्यक्तिगत विभिन्नता न केवल सर्जनात्मक क्षमता के परिणाम वरन् इसकी अभिव्यक्ति के तरीके में भी विद्यमान होती है। मानव प्रयत्नों के प्रत्येक क्षेत्र, चाहे विज्ञान, संगीत, साहित्य, कहानी सुनाना या समस्या समाधान आदि हों, सभी में सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति होती है। हालांकि आनुवंशिक कारक महत्वपूर्ण हैं, वातावरणीय कारक सर्जनात्मक संभावनाओं के विकास को प्रेरित करता है। सर्जनात्मकता स्वयं को विभिन्न रूपों में क्षमताओं, कौशलों, गुणों तथा वातावरण के उचित मेल के आधार पर अभिव्यक्त करती है।
- सर्जनात्मकता के बारे में अनेक भ्रांतियाँ हैं। सामान्यतः केवल कलाकारों, वैज्ञानिकों, कवियों, लेखकों को सर्जनात्मक माना जाता है। परन्तु सर्जनात्मकता केवल आसाधरण उत्पादों तक ही सीमित नहीं है। शैक्षिक वातावरण में, यह स्मरण रखने की आवश्यकता है कि शिक्षा का एक महत्वपूर्ण लक्ष्य प्रत्येक बच्चे को उसकी सर्जनात्मक संभावनाओं के पूर्ण विकास के लिए अवसर प्रदान करना है। इसके लिए, सर्जनात्मकता के स्तर को पहचानना तथा आकलन करना आवश्यक है।
- आकलन के विभिन्न तरीके सर्जनात्मकता को पहचानने में सहायता करते हैं। सर्जनात्मकता की अभिव्यक्ति में योगदान करने वाला वातावरण सर्जनात्मकता की पहचान एवं आकलन में मदद करता है। विद्यार्थियों को सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के अनेक अवसर प्रदान करने की आवश्यकता है। विद्यालय तथा कक्षा में सर्जनात्मक अभिव्यक्ति को प्रेरित करने के अनेक अवसर होते हैं। आकलन हेतु अपरीक्षण तथा परीक्षण के तरीके हैं। सर्जनात्मकता का आकलन हालांकि बहुआयामी होना चाहिए क्योंकि आकलन के किसी एक तरीके को श्रेष्ठ नहीं कहा जा सकता है। पहचान एवं आकलन के उद्देश्य को विद्यार्थियों की उनकी संभावनाओं को साकार करने की सक्षमता हेतु सर्जनात्मकता के पोषण तथा निर्देशन के संदर्भ के रूप में भी देखा जाना चाहिए। शिक्षक परामर्शदाता को विद्यार्थियों की सर्जनात्मक संभावनाओं को पूर्ण राह या उपयोगिता न मिलने के परिणामों से भी भली-भांति परिचित होना चाहिए। अन्यथा यह व्यवहारात्मक तथा सामंजस्य की समस्याओं को जन्म देगा। विद्यार्थियों को उनकी सर्जनात्मकता को साकार करने व बनाए रखने हेतु उचित निर्देशन के लिए परामर्शदाता को आकलन आंकड़ों के उचित उपयोग की आवश्यकता है।

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास

- 1- सर्जनात्मकता के अर्थ को समझाइए।

- 2- यदि विद्यालयों में सर्जनात्मकता को प्रोत्साहन नहीं मिलेगा तो उसके क्या परिणाम होंगे ?
- 3- सर्जनात्मकता के आकलन का क्या लक्ष्य है ? सर्जनात्मकता के आकलन को बहुआयामी क्यों होना चाहिए ?
- 4- उदाहरण सहित स्पष्ट करें कि आप सर्जनात्मकता की पहचान हेतु कैसे अपरीक्षण तरीकों का उपयोग करेंगे ।
- 5- एक शिक्षक परामर्शदाता हेतु सर्जनात्मकता का आकलन कैसे उपयोगी है ?
- 6- उन व्यक्तिगत तथा वातावरणीय अवरोधों पर चिंतन करें जो बच्चों की सर्जनात्मकता की पहचान तथा प्रोत्साहन हेतु प्रेरक वातावरण उत्पन्न करने के प्रयासों को रोकते हैं ।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास के उत्तरबिंदु

1. सर्जनात्मकता को विलक्षण, नूतन एवं मौलिक उत्पाद या विचार या समस्या के समाधान के शब्दों में वर्णित किया जा सकता है जो किसी व्यक्ति की विचार-प्रक्रिया का परिणाम होता है । यह एक अकेली क्षमता या गुण नहीं है वरन् प्रकृति में बहुआयामी है ।
2. सर्जनात्मकता का विद्यालयों में पोषण किया जाना चाहिए क्योंकि यह प्रसन्नता तथा संतुष्टि को प्रोत्साहित करता है जो आगे चलकर अच्छे मानसिक स्वास्थ्य को बढ़ाता है । यदि सर्जनात्मकता को दबाया जाता है तो बच्चे या तो बहुत अधिक बनावटी या आज्ञाकारी हो सकते हैं या स्वयं अपनी अवास्तविक अवधारणा का विकास कर लेते हैं । सर्जनात्मक संभावना सुसुप्त हो सकती है और हताशा, आक्रामकता और स्वयं तथा दूसरों के साथ सामंजस्य संबंधी समस्याओं को आगे बढ़ा सकती है ।
3. इन बिंदुओं को विस्तृत करें :
 - सर्जनात्मकता के आकलन का लक्ष्य सभी विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता को पोषित एवं निर्देशित करना है ।
 - सर्जनात्मकता का आकलन बहुआयामी होना चाहिए क्योंकि सर्जनात्मक संभावना विभिन्न तरीकों एवं विभिन्न अवस्थाओं में विभिन्नता के साथ प्रकट होती है । उदाहरणार्थ- प्राथमिक स्तर पर नृत्य, नाटक, पेंटिंग और चित्रकला आदि सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के विभिन्न रूप हैं । हालांकि ज्यों-ज्यों बच्चे बड़े होते हैं, विशेष प्रतिभाएँ प्रकट होनी आरंभ हो जाती हैं । उन्हें उनकी सर्जनात्मक अभिव्यक्ति के विकास के लिए अनेक रास्ते उपलब्ध कराना आवश्यक है जिससे वे जिन क्षेत्रों में अच्छे हैं उनमें अपनी प्रतिभा की अभिव्यक्त कर सकें ।
4. निम्न अपरीक्षण तकनीकों को विस्तृत करें –
 - निरीक्षण : विद्यार्थियों में सर्जनात्मकता की कम या अधिक संभावनाओं को पहचानने के लिए इसे कक्षा, खेल के मैदान या अन्य स्वाभाविक परिस्थितियों में किया जा सकता है । उदाहरण के लिए, बच्चों को

कक्षा में विमर्श किए गए मुद्दों पर गहराई से विचार करने को कहना या दिन प्रतिदिन की गतिविधियों या स्वाभाविक परिस्थितियों में बच्चों के कार्य आरम्भ करने, उत्साह, मौलिकता के स्तर को जाँचना।

- रेटिंग : साथियों, शिक्षकों, अभिभावकों तथा स्वयं द्वारा रेटिंग की जा सकती है। निर्धारण करने वालों से विद्यार्थियों की सर्जनात्मकता के अधिक या कम गुणों का मूल्य निर्धारण करने को कह सकते हैं। जैसे- अभिभावकों के द्वारा एक विशेष पैमाने पर बच्चों की कार्य की आदतों, मनोरंजन के समय की आदतों, विचार शैली तथा कौशल आदि को रेटिंग दी जा सकती है।
 - चेकलिस्ट में सामान्यतः गतिविधियों का एक समूह होता है जिन्हें विद्यार्थी विभिन्न क्षेत्रों में अपने आप कर सकते हैं जैसे टौरेन्स के सर्जनात्मक प्रतिभा निर्देशन उपकरण में विविध गतिविधियाँ हैं।
 - जीवनियाँ तथा एनेकडोटल रिकॉर्ड वृत्तांतों, उदाहरणों, घटनाओं आदि का रिकार्ड रखने में मदद करते हैं जो विद्यार्थियों की कल्पनाओं, उत्सुकताओं, कार्य करने के मौलिक तरीकों, आदि पर प्रकाश डालते हैं। उदाहरण के लिए, किसी बच्चे के द्वारा कक्षा संवादों में कितना प्रतिभाग किया, समस्या समाधान में उसके सहने के स्तर का अध्ययन या समाधान ढूँढने की पटुता आदि को अंकित करना।
 - प्रश्नोत्तर: बच्चों से उपसक्रिय प्रश्न पूछना या विभिन्न नये तरीकों से सूचनाओं को जाँचने के लिए किसी दिए गए प्रसंग से यथासंभव अनेक प्रकार के प्रश्नों का निर्माण करना।
5. बच्चों की सर्जनात्मकता का आकलन शिक्षक परामर्शदाता को सर्जनात्मक प्रदर्शन की व्यक्तिगत खूबियों के साथ-साथ कमियों को पहचानने और जहाँ सर्जनात्मक दबी और रुकी हो वहाँ बच्चों में सर्जनात्मकता को प्रोत्साहित करने की तकनीकों को और अधिक विकसित करने में मदद करेगा।
6. सर्जनात्मक चिंतन प्रतिक्रिया के कुछ अवरोध निम्न हैं-
- सोचने तथा प्रतिक्रिया के जाने माने तरीके अर्थात् जब एक व्यक्ति सोचता है कि उसे उसी प्रकार करना है जिस प्रकार हमेशा किया जाता है तो नयी संभावनाओं का सर्जन कठिन हो जाता है।
 - नियम तथा प्रथाओं पर अधिक बल देना जो सर्जनात्मकता को रोकते हैं।
 - बोधात्मक अवरोध जैसे- चीजों को हमेशा परिचित तरीके से जानना और नये अर्थ, संबंध तथा विचारों को ना देख पाना।
 - सांस्कृतिक अवरोध जैसे- संघर्ष, दबाव, एकरूपता और मानकीकरण।
 - संवेगात्मक अवरोध जैसे- असुरक्षा, चिन्ता, आलोचना, अस्वीकृति तथा अनुत्तीर्ण होने का भय।
- सृजनात्मक विचारों वाले बच्चों के अवरोधों को हटाने हेतु मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित वातावरण देना चाहिए जहाँ वे अपने शिक्षकों के साथ बिना उपहास उड़ाए जाने के भय से मुक्त होकर खुलकर स्वतंत्रता के साथ अपने विचारों तथा भावनाओं पर चर्चा कर सकें। शिक्षक कक्षा में सकारात्मक फीडबैक देकर, गलतियों को स्वीकार करके और तत्काल निर्णय लेने व आकलन टिप्पणियों से बचकर सर्जनात्मोन्मुख वातावरण का निर्माण कर सकते हैं।

अब आप ऊपर दिए गए विचारों पर चिंतन करें तथा उन अवरोधों का ध्यान रखें जो बच्चों की सर्जनात्मकता को पहचानने तथा पोषण करने के आपके प्रयासों को अवरूद्ध करते हैं। उनसे ऊपर उठने के कुछ वैकल्पिक तरीके भी आप सोच सकते हैं। परिस्थितियों तथा संदर्भों के भिन्न होने के कारण आपके प्रयास तथा कौशल के भी भिन्न होने की आशा की जाती है।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -1 के उत्तरबिंदु

1. द 2. अ 3. ब 4. स

आत्म-निरीक्षण अभ्यास -2 के उत्तरबिंदु

1. स 2. द 3. ब 4. अ

संदर्भ पुस्तकें

- Davis, G. A. and Scott, J. A. 1971. Training Creative Thinking, Holt, Rinehart & Winston, New York.
- Guilford, J. P. 1950. Creativity, American Psychologist, 5, 444-54.
- Kalsounis, B. 1972. Additional instruments useful in studying creative behaviour and creative talent: Non commercially available instruments Part III. Journal of Creative Behaviour, 16, 268-274.
- Kalsounis, B. and Honeywell, L. 1980. Additional instruments useful in studying creative behaviour and creative talent, Part III, Non commercially available instruments. Journal of Creative Behaviour, Part IV, Junior Creative Behaviour. 5, 117-126.
- Khatena, J. and Torrance, E. P. 1976. Khatena: Torrance Perception Inventory. The Stoelting Company, Chicago.
- Oscar K. B. (Ed.) 1972. The Seventh Mental Measurements Yearbook (vol. 2). Gryphon Press, Highland Park, N.I.
- Renzulli, J. S. 1983. Rating the Behavioural Characteristics of Superior Students. GCT, 30-35
- Rimm and Davis, 1980. Five years of intensive research with GIFT ; An instrument for identification of creativity. Journal of Creative Behaviour, 14, 35- 46.
- Schaefer, C. E. 1971. Creativity Attitude Survey, Jacksonville Psychologist & Education.

- Torrance. 1966. The Torrance Tests of Creative Thinking: Technical norms manual (Res.ed.) Personnel Press, Princeton, N Jersey.
- Torrance, E. P. 1969. Guiding Creative Talent. Prentice Hall of India, New Delhi.
- Torrance. 1971: Are the torrance tests of creative thinking biased against or in favour of disadvantaged group? Gifted Child Quarterly, 15, 75-80.
- Williams, F. 1980. Creative Assessment Packet, Buffalo, DOK, New York.

पठनीय पुस्तकें

- Ambile, T. M. 1989. Growing up Creative Nurturing A life time of creativity : C.E.F. Press, New York.
- Gulati, S. 1995. Education for Creativity: A Resource Book for Teacher Educators. NCERT, New Delhi.
- Khandwalla, P. N. 1984. Fourth Eye: Excellence Through Creativity. A. H. Wheeler & Co. Pvt. Ltd. Allahabad.
- McLeod, J. and Cropley, A. J. 1989. Fostering Academic Excellence. Pergamon Press. Pritzker, S. R. and Runco, M. A. 1999. Encyclopedia of Creativity (Vols. I & II). Academic Press, U.S.A.
- Raina, M. 1989. Social Change and Changes in Creative Functioning. NCERT, New Delhi.
- Reynolds, C. R. and Kamphaus, R. N. 1990, Handbook of Psychological and Educational Assessment of Children's Intelligence. The Guilford Press, New York.
- Williams, F. E. 1972. A Total Creativity Programme for Individualizing and Humanizing the Learning Process. Educational Technology Publication, Englewood Cliffe, NT.

परामर्श में आंकड़ों का मूल्य निर्धारण

4.0 परिचय

4.1 उद्देश्य

4.2 आंकड़ों के मूल्य निर्धारण के आयाम

4.3 आंकड़ों के आकलन का एकीकरण

4.4 मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सोपान

4.4.1 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को व्यवस्थित करना

4.4.2 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को संक्षिप्त एवं एकीकृत करना

4.4.3 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को संप्रेषित एवं प्रतिवेदन करना (Reporting)

4.5 मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सावधानियाँ

4.6 मूल्य निर्धारण में आचार-संहिता

4.7 सारांश

आत्म- मूल्यांकन अभ्यास

आत्म — मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिन्दु

आत्म-निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिन्दु

संदर्भ पुस्तकें

4.0 परिचय

आपको शायद याद है कि मनोवैज्ञानिक आकलन एवं मूल्य निर्धारण परामर्श के उद्देश्यों को पूरा करने के साधन के रूप में कार्य करते हैं। आपने इस मॉड्यूल की अन्य यूनिटों में विविध प्रकार के आकलन की तकनीकों-गुणात्मक तकनीकों के साथ ही साथ परीक्षण तकनीकों के विषय में भी पढ़ा है। आपने उपयुक्त आकलन हेतु उपकरणों के चयन, आंकड़ों के संग्रहण, प्राप्तांकों तथा आंकड़ों के विश्लेषण के विषय में भी पढ़ा है। आंकड़ों से सार्थक अर्थ प्राप्त करने के लिए आपको इन्हें व्यवस्थित एवं एकीकृत करने की आवश्यकता होती है और तब उससे प्राप्त निष्कर्ष से संबंधित विद्यार्थी/सेवार्थी की सहायता करने के लिए प्रयोग करना होता है।

अब हम कक्षा-8 की विद्यार्थी पूजा का उदाहरण लेते हैं जिसे आपके पास सहायता के लिए प्रेषित किया गया है। वह अब तक एक अच्छी विद्यार्थी रही है लेकिन अपनी नई कक्षा में प्रवेश के समय से ही वह बार-बार विद्यालय से अनुपस्थित रहती है, गृहकार्य पूरा नहीं करती है और अपने मित्रों / कक्षा के साथियों से बातचीत करना बंद कर दिया है। उसका विद्यालयी प्रदर्शन भी निम्न स्तरीय हो गया है। उसके विषय में और अधिक जानकारी के लिए आपको विविध स्रोतों से उसके विषय में जानकारी एकत्रित करने की आवश्यकता है। लेकिन सामान्य रूप से आंकड़े एकत्रित करना पर्याप्त नहीं है। आपको एकत्रित किए गए आंकड़ों को संघटित, संक्षिप्तीकरण एवं एकीकृत करके इसके द्वारा सार्थक भाव निकालने की आवश्यकता है और तब इसे विद्यार्थी की सहायता करने के लिए इसके प्रयोग हेतु आप विचार कर सकते हैं। यह एक क्रमिक एवं जटिल प्रक्रिया है।

यह यूनिट आपको आकलित आंकड़ों के आयामों, आकलित आंकड़ों के प्रयोग में शामिल विभिन्न सोपानों के साथ ही साथ मूल्य निर्धारण को प्रभावी ढंग से संघटित, एकीकृत, संक्षिप्तीकरण तथा संप्रेषण की प्रक्रिया को समझने में सहायता करेगी। आप मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में कुछ निश्चित सावधानियों के विषय में भी सीखेंगे।

4.1 उद्देश्य –

इस यूनिट को पढ़ने के पश्चात् आप निम्न बिन्दुओं को समझने में समर्थ होंगे –

- मूल्य निर्धारित आंकड़ों के आयामों की सूची तैयार करना।
- मूल्य निर्धारित आंकड़ों के एकीकरण में शामिल सोपानों का वर्णन करना।
- मूल्य निर्धारित आंकड़ों के संघटन, संक्षिप्तीकरण एवं एकीकरण की प्रक्रिया की परिचर्चा करना।
- आकलन एवं मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में गलतियों के संभावित स्रोतों की पहचान करना।
- प्राप्त हुए आकलन के संप्रेषण एवं प्रतिवेदन करने में शामिल कौशलों का प्रयोग करना।

4.2 मूल्य निर्धारित आंकड़ों के आयाम –

जैसा कि परिचय में बताया गया है कि आपको विभिन्न स्रोतों के माध्यम से एकत्रित किए गए आंकड़ों को एकीकृत करने की आवश्यकता है तथा विद्यार्थी की सहायता करने के लिए निर्णय लेने से पहले व्यक्ति के विभिन्न पहलुओं

एवं पर्यावरण से उसे संबंधित करना है। आने वाले भागों में पहले आंकड़ों के एकीकरण की प्रक्रिया का विस्तार से वर्णन किया जाएगा। उसके पश्चात् उन आंकड़ों के संघटन एवं एकीकरण के लिए आवश्यक कौशलों का वर्णन किया जाएगा। प्रारम्भ करने के क्रम में विभिन्न आयामों को देखिए जिस पर आंकड़ों को वर्गीकृत किया जा सकता है।

आंकड़ों का संग्रहण

आपके द्वारा संग्रहित किया गया आकलित आंकड़ा कई आयामों पर भिन्न होगा जो इस प्रकार से हैं – (अ) विधि (ब) आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण (स) आकलन का क्षेत्र, (द) आकलन का समय निर्धारण, (क) स्रोत और (ख) परामर्शदाता का सैद्धांतिक अभिविन्यास जो मूल्य निर्धारण करता है। बारी-बारी से इन आयामों के विषय में पढ़ते हैं।

(अ) विधि -

प्रयोग की गई विधि के अनुसार आपने एक या कई आकलन तकनीकों से आंकड़ों को एकत्रित किया होगा जिनके बारे में आपने अन्य यूनिटों में पहले ही पढ़ा है। उनमें से प्रमुख हैं –

- विभिन्न व्यवस्थाओं में विद्यार्थी की अवलोकन रिपोर्ट जैसे कक्षा या गृह।
- सेवार्थी, अभिभावक, शिक्षकों या साथियों के साक्षात्कार।
- मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण जैसे – बुद्धि, व्यक्तित्व, अभिक्षमता या अभिरुचि या कोई अन्य परीक्षण।
- निर्धारित पैमाना/निरीक्षण सूची जिसमें सहायता की अपेक्षा करने वाले व्यक्ति के बारे में स्वयं विद्यार्थी, अभिभावक, शिक्षकों या अन्य लोगों की प्रतिक्रिया शामिल होती है।
- विद्यार्थी की इच्छा से संबंधित उसके सहपाठियों या मित्रों के द्वारा सामाजिक-माप आंकड़े।
- सेवार्थी का संचित विवरण कार्ड (Cumulative Records Card) जिसमें उसकी उपलब्धि विवरण, चिकित्सा विवरण तथा मानकीकृत परीक्षणों के परिणाम होते हैं। कुछ विद्यालयों में इस प्रकार का विवरण रखा जाता है।
- चिकित्सा और शारीरिक आकलन विवरण जैसे जन्म से संबंधित बातें, विकासात्मक कीर्तिमान, (अर्थात् वह अवस्था जब बच्चे ने चलना, बोलना, आदि प्रारम्भ किया) पहले की बीमारी, आदि के साथ ही साथ यदि आवश्यक हो तो वर्तमान चिकित्सा स्तर।

(ब) आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण

आंकड़ों के प्रस्तुतीकरण की प्रकृति के संदर्भ में भी आंकड़ों में भिन्नता हो सकती है।

- मौखिक या आरेखीय प्रस्तुतीकरण जहाँ पर प्राप्त निष्कर्ष को शब्दों या प्राप्ताकों या आरेखों के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।

- प्रस्तुत किए जा रहे आंकड़ों का संरचित या असंरचित प्रस्तुतीकरण जिसे संरचित संघटित शीर्षक या एक असंरचित अपरिष्कृत रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है।
- ध्यान केन्द्रित/विशिष्ट या व्यापक/विस्तृत रूप में प्रस्तुतीकरण जिसमें आकलन विवरणों को एक सामान्य बुद्धि प्राप्तांक से लेकर व्यक्तित्व वर्णन के व्यापक क्षेत्र तक बढ़ाया जा सकता है।
- मात्रात्मक या गुणात्मक प्रस्तुतीकरण जिसमें आंकड़ों को मात्रात्मक रूप में एक सांख्यिकीय प्राप्तांक के रूप में अर्थात् शतमक (Percentile) स्थान की तरह प्रस्तुत किया जाता है या यह एक वर्णनात्मक या विवरणात्मक विश्लेषण के रूप में हो सकता है।
- नियामक या भावमूलक प्रस्तुतीकरण जिसमें आकलन आंकड़ों की समूह नियामक का प्रयोग करते हुए विशेष समूह की तुलना में सुस्पष्ट तौर से व्याख्या की जा सकती है या यह सेवार्थी के भावों के विस्तृत विवरण से संबंधित हो सकता है।

(स) आकलन के क्षेत्र —

यह प्रस्तुतीकरण विद्यार्थी या परिस्थिति के विषय में एक विशेष प्रकार की सूचना पर केन्द्रित हो सकता है। यह निम्नलिखित तीन श्रेणियों में से किसी एक से संबंधित हो सकता है :

- सेवार्थी के विचार, भावनाएँ, संबंध एवं कार्य।
- सेवार्थी का अतीत या वर्तमान स्तर।
- सेवार्थी या परिवार या सामाजिक-पर्यावरणीय संदर्भ।

(द) आकलन का समय निर्धारण

आकलन के अपने समय निर्धारण के अनुसार आंकड़े अपने पहल किए गए समय या किसी अंतःक्षेप के समय या अंतःक्षेप के बाद के समय के अनुसार भिन्न हो सकते हैं।

(क) स्रोत —

आंकड़े उपलब्ध कराने वाले स्रोत या व्यक्ति के अनुसार विभिन्न प्रकार के व्यक्तियों के द्वारा एकत्रित किए गए आंकड़े जैसे — डॉक्टर, शिक्षक, सामाजिक कार्यकर्ता, मनोचिकित्सक या मनोवैज्ञानिक, इनमें से प्रत्येक स्रोत या व्यक्ति का विभिन्न अवबोधन हो सकता है। उदाहरणार्थ, एक सामाजिक कार्यकर्ता के द्वारा एकत्रित की गई जानकारी से एक शिक्षक का अवलोकन पूर्णतया भिन्न हो सकता है। आदर्श रूप में किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के पहले आंकड़ों को अदल-बदल कर निरीक्षण करना आवश्यक है।

(ख) परामर्शदाता का सैद्धांतिक अभिविन्यास

परामर्शदाता के सैद्धांतिक अभिविन्यास/उपागम के अनुसार एक विशेष प्रकार की जानकारी पर दिए जाने वाले बल एवं महत्व तथा प्रयोग की गई विधि में भी व्यापक अन्तर हो सकता है। एक मानवतावादी या सेवार्थी—

केन्द्रित मनोवैज्ञानिक औपचारिक और मात्रात्मक आकलन में विश्वास नहीं कर सकता है। उसकी तुलना में एक मनोसक्रिय केन्द्रित व्यक्ति गुणात्मक उपागमों को अधिक महत्व दे सकता है। इन भिन्नताओं के बावजूद भी अधिकतर परामर्शदाता एक अंतःक्षेप पर निर्णय लेने के पहले कुछ समग्र मूल्य निर्धारण में विश्वास करते हैं।

आत्म-निरीक्षण अभ्यास-1

स्तम्भ 'अ' में दिए गए विषयवस्तु को स्तम्भ 'ब' से मिलान कीजिए —

	अ	ब
i)	आंकड़े एकत्रित करने की विधि	अ) परिवार से संबंधित, पर्यावरण, मनोवैज्ञानिक पहलुओं को शामिल किया जाता है
ii)	आंकड़ों का प्रस्तुतीकरण हो सकता है	ब) डॉक्टर, शिक्षक, मनोवैज्ञानिक, मनोचिकित्सक के समान
iii)	आकलन का क्षेत्र हो सकता है	स) प्रारंभिक अवस्था या अंतःक्षेप के समय आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं।
iv)	आकलन का समय निर्धारण इस संबंध में हो सकता है	द) मानवतावादी, मनो-सक्रिय
v)	आकलन के व्यक्ति/स्रोत को अग्रप्रेषित किया जाता है	क) अवलोकन, साक्षात्कार, संचय विवरण कार्ड, मनोवैज्ञानिक परीक्षण
vi)	विभिन्न सैद्धांतिक उपागम संबंधित होते हैं।	ख) मात्रात्मक या गुणात्मक मौखिक या आरेखीय

उपर्युक्त परिचर्चा से यह स्पष्ट है कि आपके पास आकलन आंकड़ों का विस्तृत भण्डार उपलब्ध है। एक बार जब सभी आंकड़े एकत्रित कर लिए जाते हैं तथा प्रत्येक यूनिट की गणना एवं विश्लेषण कर लिया जाता है तब एकीकृत करना आवश्यक होता है और तब विस्तृत जानकारियों का संक्षिप्तीकरण किया जाता है तथा अग्रिम कार्यवाही के लिए सेवार्थी की एक समग्र तस्वीर प्राप्त होती है।

4.3 आकलित आंकड़ों को एकीकृत करना -

सेवार्थी का आकलन एक या कई तकनीकों का प्रयोग करके किया जाता है। इन आकलित आंकड़ों के एकीकरण में शामिल सोपानों को अब रेखांकित किया जाएगा। पहले की यूनिटों में आप उनमें से कुछ के विषय में पढ़ चुके हैं। आकलन एवं मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग एवं एकीकरण में उन अवस्थाओं एवं सोपानों को याद करना महत्वपूर्ण है।

आकलन के उपकरणों का विवेकपूर्ण चयन –

आप उपयुक्त आकलन उपकरणों का चयन करने के विषय में पहले ही पढ़ चुके हैं और आपने प्रत्येक उपकरण के लाभ एवं हानि का मूल्यांकन करने के बाद सावधानीपूर्वक उपकरणों का चुनाव किया है। परिचय में वर्णित पूजा के काल्पनिक मामले में आपने शायद मानसिक योग्यता परीक्षण तथा आत्म-सम्प्रत्यय तालिका के साथ ही साथ उसकी माता का साक्षात्कार एवं शिक्षकों के अवलोकन का प्रयोग करने का निर्णय भी लिया होगा। आपने शायद उसकी चिकित्सा दशा को पुनः देखने का भी निर्णय लिया हो।

एक या कई उपकरणों के द्वारा आंकड़ों का एकत्रीकरण –

आपने चयनित उपकरणों साक्षात्कार, लिखित अभिलेख तथा संभावित चिकित्सा अभिलेख का प्रयोग करके आंकड़ों को एकत्रित किया है। आपने उसकी माता एवं शिक्षक का साक्षात्कार भी लिया है तथा चिकित्सा जाँच अभिलेख एकत्रित किया है।

हर प्रकार के आंकड़ों की गणना एवं सुस्पष्ट व्याख्या -

अब आप मानकीकृत परीक्षण की संबंधित नियमावली में दी गई विधियों के आधार पर परीक्षण की गणना एवं सुस्पष्ट व्याख्या करेंगे। आप प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करेंगे तथा सूचना के तरीकों की पहचान करेंगे।

प्रमुख श्रेणियों के अन्तर्गत विभिन्न प्रकार के आंकड़ों को संघटित करना –

जैसा कि विभिन्न प्रकार के आंकड़े होते हैं, आपको इन्हें प्रमुख श्रेणियों या शीर्षकों के अन्तर्गत संघटित करने की आवश्यकता होती है, जैसे- मानसिक योग्यता, व्यक्तित्व के गुण, शैक्षिक समस्याएँ, साथियों से अन्योन्यक्रिया, चिकित्सा स्तर एवं पारिवारिक संबंध, आदि।

निष्कर्ष पर पहुँचने में समर्थ होने हेतु आंकड़ों को संक्षिप्त एवं एकीकृत करना –

प्रमुख शीर्षकों के अन्तर्गत आंकड़ों को संघटित करने के पश्चात् सेवार्थी एवं उसकी समस्याओं का एक समग्र एवं सम्पूर्ण विवरण प्राप्त करने के लिए आपको इसे एकीकृत एवं संक्षिप्त करने की आवश्यकता होगी। मूल्य निर्धारित आंकड़ों के एकीकरण में आपको अपने अनुभव, अंतर्दृष्टि एवं ज्ञान का प्रयोग करने की आवश्यकता होगी। आप आने वाले भागों में इस विषय में अधिक अध्ययन करेंगे।

समस्या को परिभाषित करना तथा विद्यार्थियों की सहायता करने के लिए अस्थायी योजना बनाना –

संक्षिप्त किए गए आंकड़ों एवं निष्कर्षों के आधार पर आप अब एक अस्थायी निदान एवं अंतःक्षेप योजना तैयार करेंगे। आकलन दिखा सकते हैं कि पूजा को घर पर अपने भाई-बहनों से प्रतिद्वन्द्विता की समस्या है। यदि आप

इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि उसकी समस्याओं को बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया है कि वह अपनी बहन से ईर्ष्या का अनुभव कर रही है। यह ईर्ष्या एवं असुरक्षा अनेकों मनःकायिक समस्याओं जैसे — बार-बार पेट में दर्द होने के रूप में सामने आ रही है और वह नियमित रूप से विद्यालय में उपस्थित होने में समर्थ नहीं है। वह अपनी माँ की सहायता के बिना गृहकार्य को करने में समर्थ नहीं है जो उसके बताने के अनुसार व्यस्त रहती है और उसकी बहन के ऊपर अधिक ध्यान देती है। एक परामर्शदाता के रूप में आप अब उसकी माँ से बात करने एवं पूजा के साथ परामर्श सत्र आयोजित करने हेतु अंतःक्षेप योजना के विषय में विचार कर सकते हैं।

आकलन से प्राप्त निष्कर्ष को संप्रेषित करना —

आकलन से प्राप्त परिणामों एवं निष्कर्षों को सेवार्थी एवं उसके परिवार को बहुत संवेदनशीलता के साथ संप्रेषित करना है। सम्प्रेषण की विधि, भाषा एवं समय निर्धारण बहुत महत्वपूर्ण है। सम्प्रेषण को बच्चे के सशक्त पक्ष का उल्लेख करते हुए तथा संरचनात्मक सुझाव देते हुए प्रस्तुत करना चाहिए।

परामर्श अंतःक्षेप की योजना बनाना एवं क्रियान्वयन —

एक बार जब निष्कर्ष आ जाता है तब एक अंतःक्षेप योजना का सुझाव दिया जा सकता है। यह सुनिश्चित करना परामर्शदाता की जिम्मेदारी है कि योजनाओं को सही प्रकार से क्रियान्वित किया गया है। सेवार्थी के संपर्क में रहना महत्वपूर्ण है। लगातार मूल्यांकन एवं भावी योजना थोड़े समय के पश्चात फालो-अप एवं बार-बार आकलन से संभव है।

जैसा कि पहले तीन सोपानों — उपकरणों का चयन, आंकड़ों का संग्रहण एवं गणना के विषय में पहले की यूनिटों में विस्तार से बताया गया है, अब आप मूल्य निरूपण के अन्य सोपानों जैसे — एकीकरण, सुस्पष्ट व्याख्या तथा मूल्य निरूपण आंकड़ों के सम्प्रेषण पर अधिक ध्यान देंगे।

4.4 मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सोपान -

आकलन एवं मूल्य निर्धारण किसी भी परामर्श प्रक्रिया के प्रमुख घटक हैं। आकलन एवं मूल्य निर्धारण का आधारभूत उद्देश्य परामर्शदाता के द्वारा परामर्श सहायता प्राप्त करने वाले व्यक्ति के विषय में सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त करना है तथा व्यक्ति को अपने विषय में अन्तर्दृष्टि प्राप्त करके सशक्त बनाना है। जैसा कि परामर्शदाता अनवरत रूप से व्यक्ति को समझने में लगे रहते हैं इसलिए एक व्यापक विवरण प्राप्त करने तथा अन्त में प्रतिवेदन एवं सम्प्रेषण के लिए उन्हें प्रयोग की जाने वाली आकलन तकनीकों का विवेकपूर्ण चयन, संग्रहित आंकड़ों का विश्लेषण, संक्षिप्त करना तथा एकीकृत करना होता है। मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में शामिल सोपानों को चित्र 4.1 के अनुसार श्रेणीबद्ध किया जा सकता है —

.....

मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सोपान

मूल्य निर्धारित आंकड़ों	मूल्य निर्धारित आंकड़ों को	मूल्य निर्धारित आंकड़ों का
का संघटन	संक्षिप्त एवं एकीकृत करना	संप्रेषण एवं प्रतिवेदन
आंकड़ों के सम्प्रेषण एवं प्रतिवेदन की विधि		परीक्षण आंकड़ों के सम्प्रेषण एवं प्रतिवेदन हेतु सोपान—
– लिखित प्रतिवेदन		– एक प्रतिवेदन तैयार करना
– साक्षात्कार के द्वारा		– परीक्षण के आयोजन के उद्देश्य
– समस्या के लिए परामर्श		पर पुनर्विचार करना
		– परिणामों पर परिचर्चा

.....

चित्र 4.1 : मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सोपान

4.4.1 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को व्यवस्थित करना -

मूल्य निर्धारित आंकड़ों को व्यवस्थित करने के महत्व एवं प्रक्रिया को समझने के क्रम में हमें निम्नलिखित काल्पनिक समस्या पर विचार करना चाहिए —

व्यक्ति अध्ययन : राहुल

एक पन्द्रह वर्ष का कक्षा-10 का विद्यार्थी राहुल विद्यालय के बरामदे में धूम्रपान करता पाया गया और उसे एक समस्या के रूप में परामर्श के लिए अग्रप्रेषित किया गया। वह पिछले एक वर्ष से शैक्षिक प्रदर्शन में पीछे होता जा रहा था और प्रथम सत्रीय परीक्षा के दौरान कई विषयों में अनुत्तीर्ण हुआ था। आपने बच्चे, अन्य शिक्षकों तथा अभिभावकों के साथ साक्षात्कार आयोजित किया होगा। आपने कक्षा में सामाजिक माप सर्वेक्षण भी किया होगा। आपने शायद योग्यता, उपलब्धि तथा व्यक्तित्व तालिका के मानकीकृत परीक्षणों को भी किया होगा। आपने उसके सहपाठियों एवं शिक्षकों से उसका मूल्य निर्धारण भी प्राप्त किया होगा। आपने उसके विद्यालयी उपलब्धि विवरणों के साथ ही साथ चिकित्सा विवरणों को भी देखा होगा। कक्षा में शिक्षकों के अवलोकन का प्रतिदर्श (Sample) भी लिया होगा।

यह स्पष्ट कि राहुल के विषय में आपके पास जानकारी का खजाना है। लेकिन आप इनसे क्या अर्थ निकालते हैं ? आप किस प्रकार से एक निष्कर्ष पर पहुँचते हैं ? क्या आप सूचनाओं के कुछ स्रोतों पर अन्य से ज्यादा विश्वास करते हैं ?

एक विवेकपूर्ण चयन के पश्चात् आपने विविध प्रकार की आकलन तकनीकों का प्रयोग किया होगा। आपने उन सबकी अलग-अलग गणना एवं विश्लेषण किया होगा। अब आपको उन्हें संक्षिप्त करके एक समग्र स्थिति पर पहुँचना है। आप उसके शिक्षकों एवं अभिभावकों को फीडबैक देने के लिए आवश्यकतानुसार कुछ निश्चित अवधारणाएँ बना सकते हैं। आपको कुछ निष्कर्षों को उनके परिणाम की अपनी सुस्पष्ट व्याख्या के आधार पर संशोधित करने की आवश्यकता हो सकती है। आप अन्त में एक आपसी स्वीकृत उद्देश्य एवं अंतःक्षेप की योजना पर पहुँचेंगे।

आंकड़ों का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने के पश्चात् आप निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि राहुल में उच्चस्तरीय बौद्धिक क्षमताएँ हैं परन्तु सांवेगिक रूप से वह असुरक्षित एवं अतिसंवेदनशील है। उसकी शारीरिक बनावट छोटे कद की है और उसकी लंबाई एवं वजन उसकी उम्र के हिसाब से औसत से कम है। वह निम्नस्तरीय आत्म सम्मान से पीड़ित है तथा उसके सहपाठी उसका मजाक उड़ाते हैं। उसकी माँ उससे अधिक उसके बड़े भाई का पक्ष लेती है। वह अपनी लम्बाई बढ़ाने के लिए पढ़ाई में कम एवं शारीरिक अभ्यास (कसरत) में अधिक समय देता है। वह मित्र बनाने के लिए बहुत व्यग्र है और कक्षा के दो साथियों ने उसे धूम्रपान से परिचित कराया है। ये सभी कारक उसके विद्यालयी प्रदर्शन के गिरते स्तर का कारण हो सकते हैं।

इससे पहले कि आप आकलन आंकड़ों पर आधारित अंतःक्षेप की सलाह दें, आकलन आंकड़ों की विस्तृत मात्रा को एक दृष्टि में समझने के लिए संक्षिप्त रूप में एक सारणीयन में व्यवस्थित करना उपयोगी होगा। इसको सारणीबद्ध करने का एक तरीका आंकड़ों के प्रकार, प्रयोग किए गए उपकरणों, सूचना के स्रोतों तथा प्रमुख परिणामों के शीर्षक बनाने होंगे। राहुल के मामले के अनुसार शीर्षकों को निम्न रूपों में सारणीबद्ध किया जा सकता है :-

आंकड़ों की प्रकृति	प्रयोग किए गए उपकरण	सूचना के प्रकार	सूचना के स्रोत	प्रमुख निष्कर्ष
समस्या का वर्णन	साक्षात्कार, अवलोकन चिकित्सा एवं विद्यालयी विवरण	बुद्धि, व्यक्तित्व, स्वास्थ्य स्तर, समकक्ष साथियों के साथ संबंध	राहुल, शिक्षक, अभिभावक, सहपाठी	धूम्रपान की घटना, शारीरिक कमजोरी, शैक्षिक असफलता, निम्न स्तरीय आत्म-सम्मान
समस्या का विवरण	साक्षात्कार, विद्यालयी विवरण	अतीत एवं वर्तमान का शैक्षिक प्रदर्शन, पहले की शिकायतें	शिक्षक, अभिभावक	समस्या एक वर्ष से प्रारम्भ हुई है।

सेवार्थी के उपलब्ध संसाधन	साक्षात्कार, आत्म-कथन, मानकीकृत परीक्षण, सामाजिक-माप आंकड़े	राहुल का सशक्त पक्ष एवं कमजोरियाँ	राहुल, सहपाठी, शिक्षक, अभिभावक	उच्चस्तरीय बौद्धिक क्षमता, संरचित अधिगम पर्यावरण तथा उपचारीय पाठों से लाभ प्राप्त कर सकता है।
पारिवारिक उपलब्ध संसाधन	साक्षात्कार, परीक्षण तथा निरीक्षण	पारिवारिक आय, परिवार का विस्तृत सहयोग	परिवार के सदस्य जैसे- माता, पिता, भाई/बहन	वित्तीय रूप से संतुलित, माता-पिता के द्वारा राहुल को अधिक समय एवं ध्यान देने की आवश्यकता है।

इस प्रकार से सारणी का संकलन एक दृष्टि में विविध आकलन आंकड़ों के मुख्य निष्कर्षों को समझने में सहायता करता है। उपर्युक्त सारणी केवल एक उदाहरण है और इसमें अधिक सूचनाओं को शामिल किया जा सकता था।

सामान्य रूप से आकलन आंकड़ों को व्यवस्थित करना पर्याप्त नहीं है। विविध प्रकार के आंकड़ों के एकीकरण में अधिक कौशल एवं अभ्यास की आवश्यकता होती है। इनको ध्यानपूर्वक पढ़ने के लिए आपको अपनी अन्तर्दृष्टि एवं कौशल के प्रयोग की आवश्यकता होती है। मूल्य निरूपण प्रक्रिया के बहुत व्यक्तिनिष्ठ होने की संभावना रहती है। आप अपना अन्वेषण करने की कोशिश कीजिए कि कहीं आप विशेष विद्यार्थी या समस्या के पक्ष या विपक्ष में पक्षपात तो नहीं कर रहे हैं। व्यक्तिनिष्ठता के कारण किसी गलती को दूर करने के क्रम में सबसे अच्छा विकल्प मूल्य निरूपण को जितना अधिक सम्भव हो सके वस्तुनिष्ठ बनाने की कोशिश कीजिए।

4.4.2 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को संक्षिप्त एवं एकीकृत करना –

सेवार्थी एवं उसकी समस्या के विभिन्न क्षेत्रों से संबंधित तथा विभिन्न स्रोतों से संग्रह किए गए आकलन आंकड़ों को एकीकृत करने के लिए निम्नलिखित शीर्षकों के अन्तर्गत आंकड़ों को संक्षिप्त करने का प्रयास करना चाहिए :-

- **अग्रप्रेषण के लिए कारण** - सेवार्थी को परामर्श के लिए अग्रप्रेषण हेतु कारणों की सूची बनाने की आवश्यकता होती है। कक्षा में उसके गिरते हुए प्रदर्शन का स्तर या कोई अन्य समस्यात्मक व्यवहार उदाहरण के रूप में हो सकता है।
- **वर्तमान समस्या की प्रकृति एवं इतिहास** – इस शीर्षक के अन्तर्गत आपको उस समय की सूची बनानी है जब समस्या सर्वप्रथम प्रारम्भ हुई और समस्या के आगे बढ़ने का सम्पूर्ण वृत्तान्त लिखना है। आपको समस्या के व्यवहारात्मक अभिव्यक्ति को विस्तार से लिखने की आवश्यकता है। इसके घटित होने की आवृत्ति एवं जिस सीमा तक यह स्वयं एवं अन्य की सामान्य जिन्दगी में हस्तक्षेप करता है उसका वर्णन करना है।

- **सेवार्थी का शारीरिक स्वास्थ्य एवं मनोवैज्ञानिक स्तर :** समस्या के लिए आकस्मिक आरोप स्थापित करने के क्रम में सेवार्थी को शारीरिक स्वास्थ्य पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। इसे व्यक्ति के चिकित्सा इतिहास का निरीक्षण करके किया जा सकता है, चाहे उसके वर्तमान समस्या का पुराना इतिहास रहा हो या कोई गंभीर बीमारी से पीड़ित हुआ हो। इसमें मुख्य रूप से व्यक्ति के चिकित्सा विवरण की सूची बनानी है। मनोवैज्ञानिक स्तर का अभिप्राय व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक कुशलता से है अर्थात् मानसिक स्वास्थ्य।
- **सेवार्थी की पारिवारिक संरचना -** पारिवारिक संरचना में परिवार के प्रकार जैसे संयुक्त/एकल, सामाजिक-आर्थिक स्तर, भाई बहनों की संख्या, माता-पिता के व्यवसाय, आदि के संबंध में सूचना शामिल होती है। यह सूचना महत्वपूर्ण है क्योंकि ये तथ्य यह प्रभावित करते हैं कि व्यक्ति किस प्रकार से व्यवहार करेगा, जैसे- एक सशक्त, मिलजुलकर रहने वाले, शिक्षित पारिवारिक पृष्ठभूमि के द्वारा बच्चे पर सकारात्मक प्रभाव की अपेक्षा की जाती है।
- **सेवार्थी की विकासात्मक अवस्था तथा जीवन-अनुभव -** सेवार्थी के आंकड़ों को मूल्य निर्धारित एवं संक्षिप्त करते समय आपको सेवार्थी की वर्तमान विकासात्मक अवस्था युवा, किशोरावस्था, आदि को ध्यान में रखने की आवश्यकता है। जीवन के अनुभव जैसे- भाई-बहन का जन्म या किसी प्रिय व्यक्ति की मृत्यु, आदि जैसी प्रमुख घटनाएँ हैं। ये अनुभव एक व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक या मानसिक स्तर को निर्धारित करने के लिए एक व्यापक सीमा तक प्रभाव डाल सकते हैं।
- **सेवार्थी का स्वयं एवं संसार के विषय में विचार -** व्यक्ति जीवन के अनुभवों एवं पारिवारिक संरचना के आधार पर स्वयं के विषय में अनुभूति विकसित करता है जिसमें आत्म-सम्मान, आत्म-स्वाभिमान एवं आत्म-सम्प्रत्यय शामिल होते हैं। ये सभी प्रबलन एवं फीडबैक से आते हैं जिसे व्यक्ति अन्य महत्वपूर्ण लोगों से प्राप्त करता है। यह संसार को देखने के लिए एक विशिष्ट प्रकार के तरीके के विकास की तरफ ले जाता है। एक व्यक्ति जो आत्म-विश्वास से परिपूर्ण है तथा स्वयं को सकारात्मक समझता है वह अधिकांश समय अपने आस-पास की अच्छी वस्तुओं पर ध्यान देगा। उदाहरणार्थ - जब आपकी मनोदशा अच्छी है तब आप के द्वारा अन्य लोगों की प्रशंसा करने की अधिक संभावना है।
- **वर्तमान समस्या के प्रति सेवार्थी की प्रतिक्रिया -** यहाँ आपको यह लिखने की आवश्यकता है कि सेवार्थी किस प्रकार से अपनी परिस्थिति में अनुकूलन कर रहा है अर्थात् क्या वह स्वीकार कर रहा है कि वह समस्या से पीड़ित है और इस पर ध्यान देने की आवश्यकता है। एक अन्य तरीका हो सकता है कि सेवार्थी कोई समस्या नहीं महसूस करता है और इस प्रकार किसी सलाह या अंतःक्षेप की आवश्यकता नहीं समझता है। जबकि पहले मामले में मार्गदर्शन एवं सहायता को अपेक्षाकृत आसान तरीके से उपलब्ध किया जा सकता है लेकिन बाद के मामले में सेवार्थी के अवबोधन के कारण अंतःक्षेप एवं सहायता प्रदान करना कठिन हो जाता है।
- **सेवार्थी का पर्यावरणीय, परिस्थितीय, एवं सामाजिक-सांस्कृतिक प्रसंग -** आकलन आंकड़ों को इस शीर्षक के अन्तर्गत एकीकृत करने की आवश्यकता है क्योंकि पर्यावरणीय एवं सामाजिक-

सांस्कृतिक प्रसंग न केवल सेवार्थी के मनोवैज्ञानिक अवस्था की जानकारी देने में सहायक हैं बल्कि उपलब्ध की जाने वाली सहायता या अंतःक्षेप को भी निर्धारित करते हैं। अन्त में, यह संस्कृति एवं पर्यावरण है जिसमें सेवार्थी को रहना तथा समायोजन करना है।

ये शीर्षक आकलन के उद्देश्य के अनुसार भिन्न हो सकते हैं। चिकित्सा व्यवस्था में परामर्शदाता एक व्यक्ति अध्ययन में मानक शीर्षकों का प्रयोग कर सकते हैं। अध्यापक ऊपर बताए गए शीर्षकों का प्रयोग कर सकते हैं। सेवार्थी के एक समग्र चित्रण पर पहुँचना एक कला एवं विज्ञान है। हर प्रकार के आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या के साथ ही साथ विशिष्ट मनोभावों को समझने में परामर्शदाता की दक्षता उसके कौशल एवं अनुभव का परिणाम है। कभी-कभी थायराइड समस्या जैसा एक छोटा सा तथ्य कई प्रकार की व्यवहारात्मक एवं सांवेगिक समस्याओं के लिए उत्तरदाई हो सकता है। चिकित्सा जानकारी की अनदेखी नहीं करना चाहिए। इसके अतिरिक्त सामान्य बोध जैसी बातों पर भी विचार करना चाहिए। एक परामर्शदाता स्मरण करता है कि किस प्रकार से एक जल्दबाजी में किए गए आकलन में एक बच्चे को (Attention- Deficit Hyperactive Disorder) ADHD के लिए उपचार किया गया था जबकि वास्तव में वह बच्चा अन्दर पहने हुए चुस्त पेंट के कारण परेशान था।

मूल्य निर्धारण को एक सतत प्रक्रिया के रूप में सबसे बेहतर रूप में देखा जाता है क्योंकि एक निष्कर्ष पर पहुँचने में विविध और प्रायः द्वन्द्वात्मक जानकारी के एकीकरण को एक नियमित एवं सार्थक रूप देना शामिल होता है। यह अंतःक्षेपों की योजना के लिए एक सुसंगत कार्यकारी प्रतिमान की रचना की तरफ ले जाता है। चिकित्सा या अंतःक्षेप के कोर्स के दौरान संग्रहित किए गए नए आकलन आंकड़ों को समग्र रूप देने के लिए संशोधन की आवश्यकता हो सकती है।

4.4.3 मूल्य निर्धारित आंकड़ों को सम्प्रेषित एवं प्रतिवेदन करना -

एक प्रशिक्षित परामर्शदाता के रूप में आपको एक आकलन के दौरान संग्रहित की गई जानकारी को सेवार्थी या पारिवारिक सदस्य या शिक्षकों के सामने प्रस्तुत करना एवं परिचर्चा करना है जिससे विद्यार्थियों की सहायता के लिए कार्य योजना हेतु एक सार्थक निष्कर्ष पर पहुँचा जा सके। आकलन आंकड़ों को सम्प्रेषित करने के लिए कोई सही रास्ता पहले से निर्धारित नहीं है। यह एक जटिल प्रक्रिया है तथा तदानुभूति एवं संवेदनशीलता के कौशल की आवश्यकता होती है जो परामर्श के सभी पहलुओं में आवश्यक हैं। निम्न स्तरीय योग्यता जैसी विशेष संवेदनशील सूचना को अभिभावकों को बताना कठिन है जिसे बहुत सावधानीपूर्वक एवं धीरे-धीरे करने की आवश्यकता होती है, रूखे एवं आकस्मिक रूप में नहीं।

संवेदनशील सूचना को देते समय परामर्शदाता का भाषिक एवं गैर-भाषिक दोनों व्यवहार महत्वपूर्ण होते हैं। सटीक शब्द, बोलने का स्वर, शान्ति, बीच-बीच में रूकना, बैठने का ढंग तथा चेहरे की भाव-भंगिमा सभी सम्प्रेषण प्रक्रिया में शामिल हैं। सांस्कृतिक कारक भी सम्प्रेषण के असर को प्रभावित कर सकते हैं। उदाहरणार्थ - "अतिसक्रियता" का अर्थ ग्रामीण व्यवस्था की तुलना में शहरी व्यवस्था में बहुत भिन्न हो सकता है। इसलिए, परामर्शदाता को उस व्यक्ति की सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि के प्रति बहुत संवेदनशील होना चाहिए जिसको सूचना सम्प्रेषित की जा रही है। व्यक्तिगत कारक जैसे- परामर्शदाता एवं उस व्यक्ति की आयु एवं लिंग जिसे सूचना दी जा रही है, यह भी सम्प्रेषण के असर को प्रभावित कर सकता है।

आंकड़ों को संप्रेषित करने की विधियाँ -

आकलन आंकड़ों को संप्रेषित करने की तीन प्रमुख विधियाँ हैं —

- (1) एक लिखित प्रतिवेदन (रिपोर्ट) अत्यधिक मूल्यवान है क्योंकि यह परामर्शदाता एवं अन्य लोगों के लिए सूचना का एक व्यापक एवं सही प्रलेखन उपलब्ध कराता है। यह भावी अग्रप्रेषण एवं अनुसंधान तथा मूल्यांकन उद्देश्यों के लिए आधार के रूप में कार्य करता है। यह अन्तरिम अनुमान तथा सुस्पष्ट व्याख्या को संघटित तथा स्पष्ट करने में परामर्शदाता की सहायता करता है। यह एक पेशेवर एवं वैध दस्तावेज के रूप में कार्य करता है। लिखित प्रतिवेदन का लिखने का तरीका भिन्न हो सकता है। एक प्रतिवेदन को लिखने का कोई परिपूर्ण तरीका नहीं है, यह उद्देश्यों एवं जिस व्यक्ति के लिए लिखा जा रहा है उसके अनुसार भिन्न हो सकता है। इसे साधारण रूप से एवं संक्षेप में, संघटित एवं एकीकृत रूप में लिखा जाना चाहिए तथा निष्कर्ष एवं सुझाव भी होने चाहिए।
- (2) एक साक्षात्कार के द्वारा आकलन सूचना का सम्प्रेषण सेवार्थी या पारिवारिक सदस्यों को करना एक उच्चस्तरीय संवेदनशील तकनीक है जिसमें प्रशिक्षण एवं कौशल की आवश्यकता होती है। आकलन के परिणाम को प्रत्यक्ष रूप में आमने-सामने साक्षात्कार के द्वारा सेवार्थी, अभिभावकों, शिक्षकों या नियोक्ताओं को बताया जा सकता है। साक्षात्कार कौशलों के विषय में इस पाठ्यक्रम में कहीं बताया जा चुका है। यह अत्यधिक महत्वपूर्ण है कि साक्षात्कार की शैली एवं भाषा को सम्प्रेषण प्राप्त करने वाले व्यक्ति की आयु एवं समझ के आधार पर प्रयोग किया जाय। प्रदान की जाने वाली सूचना की प्रकृति भी सम्प्रेषण शैली की एक महत्वपूर्ण निर्धारक है। कुछ आकलन को लिखित प्रतिवेदन बजाय साक्षात्कार के द्वारा बताना अधिक अच्छा है जैसे— निम्न स्तरीय योग्यता या असफलता से संबंधित निष्कर्षों को वरीयता के रूप में आमने-सामने साक्षात्कार के द्वारा बताना चाहिए जिसमें परामर्शदाता को सेवार्थी की संवेदनशील प्रतिक्रियाओं को अवलोकन करने एवं नियंत्रित करने का अवसर मिलेगा (यदि ऐसा होता है)।
- (3) अभिभावकों, शिक्षकों एवं अन्य पेशेवरों से आकलन आंकड़ों को बताने एवं परिचर्चा करने के लिए समस्या पर परामर्श आयोजित किया जा सकता है। इसमें एक समूह स्थिति शामिल होगी। इस समूह के कुछ सदस्य पेशेवर होंगे लेकिन कुछ सामान्य व्यक्ति होंगे जैसे पारिवारिक सदस्य। इसे सुनिश्चित करना चाहिए कि इसमें प्रयोग की जाने वाली भाषा और अवधारणा सभी के समझने योग्य हो। आकलन आंकड़ों को बताने के लिए वर्णनात्मक तथा गुणात्मक मूल्यांकन शब्दावली का प्रयोग किया जाना चाहिए। परामर्शदाता सम्मेलन में समूह नेता या मध्यस्थ होगा क्योंकि वह लक्ष्य किए गए दर्शकों को सबसे बेहतर रूप में आंकड़ों को बता सकता है एवं व्याख्या कर सकता है। समूह अंतःक्षेपों के लिए आपसी रूप से सहमति प्राप्त उद्देश्यों पर पहुँचने के लिए सूचना एवं निष्कर्षों पर परिचर्चा करेगा। सहयोग सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक सहभागी के विचार एवं प्रतिक्रियाओं को पर्याप्त महत्व दिया जाना चाहिए।

परीक्षण आंकड़ों को सम्प्रेषित करने के लिए सोपान :

आकलन आंकड़ों को सेवार्थी को सम्प्रेषित करने के लिए, विशेष रूप से मानकीकृत परीक्षणों को बताने के लिए पाँच बिन्दु वाली योजना का प्रयोग किया जा सकता है।

1. सर्वप्रथम व्यक्ति के साथ आत्मीय संबंध बनाने की कोशिश कीजिए। संबंधित विद्यार्थी की आयु, लिंग, बौद्धिक स्तर तथा सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना चाहिए। विद्यार्थी को निश्चित रहने के लिए तैयार करना चाहिए तथा स्पष्ट रूप से परिचर्चा करना चाहिए। विद्यार्थी को यह महसूस कराएं कि विश्वसनीयता कायम रखी जाएगी।
2. सेवार्थी से परीक्षण वाले दिन की उसकी भावनाओं को याद करने की कोशिश करने के लिए कहिए।
3. सेवार्थी से परीक्षण लेने का उद्देश्य और किस से प्राप्तांक को प्रस्तुत किया गया है जैसे- शतमक (Percentile) की समीक्षा करना। स्पष्ट करिए कि परीक्षण का परिणाम अन्तिम परिणाम नहीं है और किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के पहले उसे अच्छी तरह से जाँच करने की आवश्यकता है। व्याख्या कीजिए कि हम सभी अलग-अलग हैं। परीक्षण प्राप्तांक केवल अनुमान हैं तथा सूचना के अन्य स्रोतों के प्रकाश में प्रयोग करना चाहिए।
4. अगला सोपान परीक्षण परिणामों को साथ में जाँचना है और प्राप्तांकों के अर्थ की चर्चा करना है। फीडबैक को प्रोत्साहित करने के लिए सेवार्थी से हाँ या ना में उत्तर न दिए जाने वाले प्रश्नों को पूछा जाता है। यह सेवार्थी को अपने विषय में पहले से ही ज्ञात ज्ञान के साथ नई जानकारी को एकीकृत करने में सहायता करता है, यदि आवश्यकता हो तो स्पष्टीकरण मांगिए तथा अनपेक्षित प्राप्तांक के लिए शायद व्याख्या दीजिए।
5. अन्तिम अवस्था परीक्षण प्राप्तांक एवं साक्षात्कार के एकीकरण के द्वारा प्राप्त सभी जानकारियों को आपसी परिचर्चा के द्वारा अंतःक्षेप हेतु योजना में समाविष्ट करना है।

आकलन आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या एवं संप्रेषण हेतु कुछ दिशा-निर्देश :

आकलन सूचना को बताने के लिए जो भी तरीका हो, सेवार्थी को आकलन आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या एवं संप्रेषण को उचित तरीके से बताने के लिए कई दिशा-निर्देशों को ध्यान में अवश्य रखना है :

- सेवार्थी को जहाँ भी आवश्यक हो, फीडबैक देने एवं प्रश्न पूछने या स्पष्टीकरण के लिए प्रोत्साहित कीजिए। आकलन आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या में, फीडबैक देने में तथा विकल्पों के अन्वेषण में सेवार्थी को लगाए रखिए।
- सुनने वाले के अनुरूप भाषा का प्रयोग कीजिए। आंकड़ों की इस प्रकार से व्याख्या कीजिए जो सेवार्थी के लिए सार्थक हो।
- दी जाने जानकारी की विषय वस्तु के साथ-साथ शब्दावली और सम्प्रत्ययों का इस रूप में चयन कीजिए जो व्यक्ति की आयु, अभिरुचि और आवश्यकता के अनुरूप हों। सेवार्थी या पारिवारिक सदस्यों को

आंकड़ों को सम्प्रेषित करने का तरीका एक शिक्षक, मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित अन्य पेशेवर व्यक्ति या एक वकील या न्यायधीश को संप्रेषित करने के तरीके से पूर्णतया अलग होना चाहिए।

- प्रत्यक्ष जानकारी जैसे- अभिरुचि या उपलब्धि प्राप्तांक से प्रारम्भ करके फिर अमूर्त जानकारी जैसे व्यक्तित्व के वर्णन की तरफ बढ़ना चाहिए।
- जितना अधिक संभव हो, मात्रात्मक वर्णनों की बजाय गुणात्मक वर्णनों का प्रयोग करना चाहिए। उदाहरणार्थ – बुद्धि लब्धि के प्राप्तांकों पर बात करने के बजाय इस पर परिचर्चा करना चाहिए कि बच्चा अपने सहपाठियों से अपनी तुलना किस प्रकार से करता है। अपरिष्कृत प्राप्तांकों के बजाय शतमक (Percentile) श्रेणी का प्रयोग कीजिए क्योंकि अपरिष्कृत प्राप्तांक सामान्य लोगों के मतलब का शायद नहीं हो सकता है।
- वर्तमान आंकड़ों को एक साधारण, स्पष्ट एवं रुचिकर तरीके से आरेखीय रूप में प्रस्तुत कीजिए।
- आवश्यकता के अनुरूप जानकारी प्रदान कीजिए अर्थात् आंकड़ों को एक विशेष समय पर सेवार्थी को स्पष्ट रूप से समझाइए और बताइए न कि आप सेवार्थी को अत्यधिक ऐसी जानकारियाँ प्रदान करें जिसका उसको कोई लाभ न हो।
- सांवेगिक प्रतिक्रिया का सामना करने के लिए तैयार रहिए और उस समय सहायता देने के लिए तत्पर रहें जब आप सेवार्थी को असफलता के विषय में बता रहे हों।
- अंतःक्षेपों के विषय में विकल्पों एवं निर्णयों पर परिचर्चा अवश्य करनी चाहिए। अग्रप्रेषण के विषय में भी जानकारी अवश्य प्रदान करना चाहिए। प्रतिवेदन में अंतःक्षेप के लिए सुझाव तथा कार्य के लिए संस्तुति अवश्य होनी चाहिए।
- आकलन प्रतिवेदन के साथ सुझाव एवं संस्तुति की एक प्रति अग्रप्रेषण स्रोतों के पास तथा अन्य जिम्मेदार लोगों के पास विश्वसनीयता मामले को ध्यान में रखते हुए भेजना चाहिए।

आकलन सूचना की सुस्पष्ट व्याख्या करने, एकीकृत करने तथा सम्प्रेषित करने के लिए यह अनिवार्य है कि परामर्शदाता को गहन प्रशिक्षण एवं पर्यवेक्षण से गुजरना चाहिए। उपकरणों का प्रयोग करने में अनुभव एवं संवेदनशीलता बहुत महत्वपूर्ण है। नैतिक मूल्यों की जानकारी होना बहुत आवश्यक है। सभी प्रमुख परीक्षण क्षेत्रों जैसे शैक्षिक, उपचारीय, एवं नियोजन में दुरुपयोग घटित होता है जबकि असफलता से बचने के लिए सही आयोजन एवं स्पष्ट व्याख्या करना सीखने के लिए सावधानी बरतने की सलाह दी जाती है। परामर्शदाता को उपकरणों एवं नई तकनीकों में संशोधन के लिए अनवरत रूप से सावधान रहने की आवश्यकता है।

.....

क्रियाकलाप -1

उन अभ्यासों पर विचार कीजिए जिनका आप विद्यार्थियों को उपलब्धि प्राप्तांकों को सम्प्रेषित करते समय अनुपालन कर रहे हैं। दिए गए दिशानिर्देशों को ध्यान में रखते हुए उन परिवर्तनों की सूची बनाइए जिनको आप विद्यार्थियों को प्राप्तांकों को सम्प्रेषित करने के तरीके के रूप में लाना पसन्द करेंगे।

आत्म - निरीक्षण अभ्यास-2

प्रस्तुत विकल्पों से खाली स्थान को पूरा कीजिए —

1. विभिन्न तकनीकों.....का प्रयोग करते हुए सेवार्थी का आकलन किया जाता है।
2. अंतःक्षेप पर योजना बनाने से पूर्व एकत्रित किए गए विस्तृत आंकड़ों को करने की आवश्यकता है।
3. आंकड़ों को एकीकृत एवं संक्षिप्त करते समय हमें सेवार्थी की.....को ध्यान में रखना चाहिए।
4. आंकड़ों को सम्प्रेषित करने की तीन प्रमुख विधियाँ.....हैं।
5. परामर्शदाता को सुस्पष्ट व्याख्या करने में, एकीकृत करने एवं आकलन सूचना को सम्प्रेषित करने में गहन होना चाहिए।

(अ) प्रशिक्षण एवं अनुभव

(ब) मानकीकृत मनोवैज्ञानिक परीक्षण, साक्षात्कार, निरीक्षण/अवलोकन, चिकित्सा तथा विद्यालयी विवरण

(स) संघटित एवं एकीकृत

(द) लिखित प्रतिवेदन, साक्षात्कार तथा मामले पर सम्मेलन

((क) सेवार्थी का पर्यावरणीय, पारिस्थितिकीय एवं सामाजिक- सांस्कृतिक संदर्भ।

4.5 मूल्य निर्धारित आंकड़ों के प्रयोग में सावधानियां —

जैसा कि आप पहले भागों में सीख चुके हैं कि आकलन एवं मूल्य निर्धारण की प्रक्रिया में अधिक कौशल एवं अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। आकलन और मूल्य निर्धारण की विविध अवस्थाओं में गलतियों के कई स्रोत संभव हैं। संभावित गलतियाँ प्रत्येक स्तर पर निम्नलिखित हैं —

(अ) आंकड़ों की संग्रहण अवस्था -

इसमें आपको विस्तृत आंकड़ों को देखने के लिए तैयार रहना चाहिए परन्तु इसका ध्यान रखना चाहिए कि अनावश्यक रूप से अधिक आंकड़े एकत्रित न किए जाएं जिनका कभी भी प्रयोग नहीं करना है। इस संदर्भ में अन्य सावधानियां निम्नलिखित बिन्दुओं के प्रति सजग रहना है —

- एकत्रित की जा रही जानकारी का अनुपयुक्त चयन।
- अनुपयुक्त तरीकों का चयन।
- तरीके के चयन में गलती जैसे विश्वसनीयता एवं वैधता का निम्न स्तर।
- परामर्शदाता के द्वारा सुस्पष्ट व्याख्या करने या सेवार्थी के द्वारा गलत प्रस्तुतीकरण के कारण पक्षपात।
- भाषा की समस्या तथा सांस्कृतिक विभिन्नता के कारण गलतियाँ।

(ब) एकीकरण – सुस्पष्ट व्याख्या अवस्था –

इस स्तर पर आपको निम्न बिन्दुओं पर सावधान रहना है।

- विविध क्षेत्रों से संग्रहित सूचनाओं में समानरूपता प्राप्त करने के पक्ष में पक्षपात करना।
- व्यवहार के सीमित प्रतिदर्शों के आधार पर सामान्यीकरण करना तथा सेवार्थी के व्यवहार के एक पहलू से दूसरे पहलू पर निष्कर्ष पर आना।
- परामर्शदाता की तरफ से अनुपयुक्त वैचारिकता या सैद्धांतिक पक्षपात अर्थात् भाषा-पक्षपात।

(स) उद्देश्यों का चयन

पहले की अवस्थाओं में गलतियाँ अंतःक्षेप हेतु उद्देश्यों के गलत चयन के रूप में सामने आ सकती हैं।

मनोवैज्ञानिक मूल्य निर्धारण की विविध अवस्थाओं पर गलतियों की सम्भावना को कम करने के लिए अंतःक्षेप हेतु उपयुक्त उद्देश्यों पर पहुँचने के लिए एक बहु-प्रतिमान आकलन उपागम वांछनीय है। सेवार्थी की एक समग्र तस्वीर प्राप्त करने के लिए विविध स्रोतों से प्राप्त आंकड़ों का संक्षिप्तीकरण एवं एकीकरण मूल्य निर्धारण के समय गलत निर्णय की सम्भावना को समाप्त कर सकता है। मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग के सभी स्तरों पर आचार-संहितीय दिशानिर्देशों को हमेशा ध्यान में रखना चाहिए।

4.6 मूल्य निर्धारण में आचार-संहिता –

आप पहले के यूनिटों में पढ़ चुके हैं कि मार्गदर्शन एवं परामर्श पेशेवर गतिविधियाँ हैं। इसका तात्पर्य है कि इस कार्य के लिए पेशेवर संस्थाएँ हैं जो आचार-संहिता के लिए विशेष नियम बनाती हैं तथा अपने सदस्यों की गतिविधियों पर ध्यान रखती हैं। आचार-संहिता के नियम सेवार्थी के अधिकारों, गोपनीयता एवं विश्वसनीयता तथा नैतिक एवं वैधिक मानकों के विषय में दिशानिर्देश उपलब्ध कराते हैं। परामर्श में मूल्य निर्धारण एवं आकलन तकनीकों, परीक्षण के चयन, आयोजन, सुस्पष्ट व्याख्या तथा आकलन आंकड़ों के प्रतिवेदन करने के विषय में स्पष्ट दिशानिर्देश हैं।

आचार-संहिता के सभी पेशेवर नियम इस पर बल देते हैं कि आकलन आंकड़ों की व्याख्या करने में विभिन्न स्रोतों से आंकड़े प्राप्त करने में, अनुभूतिमूलक प्रमाण की वैधता में तथा जल्दबाजी में निष्कर्ष पर पहुँचने से बचने में अत्यन्त सावधानी बरतनी चाहिए। यह भी संस्तुति की गई है कि सेवार्थी के मूल्य निर्धारण आंकड़ों का प्रतिवेदन एवं सम्प्रेषण अत्यधिक संवेदनशीलता एवं सावधानी से किया जाना चाहिए। विश्वसनीयता को कायम रखने की आवश्यकता होती है तथा सेवार्थी के सम्मान तथा गोपनीयता का सदैव आदर करना चाहिए।

4.7 सारांश –

इस यूनिट में आंकड़ों के मूल्य निरूपण की प्रक्रिया की व्याख्या की गई है। आंकड़ों के मूल्य निरूपण में पहला सोपान एकत्रित आंकड़ों के विविध आयामों जैसे विधि, प्रस्तुतीकरण, आकलन का क्षेत्र, आकलन का समय, स्रोतों तथा परामर्शदाता के सैद्धांतिक अभिविन्यास के आयामों का उपयोग करना है ताकि प्रभावशाली परामर्श

के आयोजन के लिए आपके पास पर्याप्त एवं संबंधित जानकारी हो। आंकड़ों को एकत्रित करने के पश्चात् अगला सोपान आंकड़ों का प्रयोग करना है। प्रयोग में गणना करना, व्याख्या करना, संक्षिप्त करना तथा एकीकृत करना शामिल हैं। आंकड़ों के संक्षिप्तीकरण के लिए आप उपलब्ध जानकारी को इस प्रकार के शीर्षकों, जैसे- समस्या का इतिहास एवं प्रकृति, पारिवारिक संरचना, चिकित्सा तथा मनोवैज्ञानिक विवरणों के अन्तर्गत रख सकते हैं। आंकड़ों के और अधिक सरलीकरण के लिए इसे तालिका-1 में दिखाए गए रूप में सारणीबद्ध किया जा सकता है। इन आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या करना है तथा प्राप्त परिणाम को सेवार्थी को सम्प्रेषित करना है। आंकड़ों का आकलन एवं मूल्य निर्धारण करते समय ध्यान देने वाली बात यह है कि इस प्रकार की गलतियों, जैसे- झूठ, विश्वसनीयता एवं वैधता, विचार, व्याख्या के समय भाषा की समस्या एवं पक्षपात को देखने की आवश्यकता है। आंकड़ों के मूल्य निर्धारण में अधिक कौशल, सावधानी तथा अभ्यास की आवश्यकता है।

.....

आत्म-मूल्यांकन अभ्यास –

1. आप अपनी कक्षा के असाधारण समस्या वाले एक विद्यार्थी के लिए आकलन योजना तैयार कीजिए और व्याख्या कीजिए कि आप आंकड़ों का प्रयोग किस प्रकार से करेंगे।
2. मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग में सोपानों का वर्णन कीजिए।
3. मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग में एक परामर्शदाता द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली सावधानियों की सूची बनाइए।

.....

आत्म- मूल्यांकन अभ्यासों के उत्तरबिन्दु –

1. एक असाधारण समस्या वाले विद्यार्थी के लिए आकलन योजना में निम्नलिखित बिन्दु शामिल होंगे -
 - दो या तीन आयामों को निर्धारित करना जिन पर आप आंकड़े एकत्रित करेंगे। मूल्य निर्धारण आयामों के आधार पर आकलन, गणना एवं आंकड़ों की सुस्पष्ट व्याख्या के लिए उपकरणों का चयन कीजिए।
 - एक सारांश तैयार कीजिए जिसका परामर्श के समय एवं अंतःक्षेप के लिए आधार उपलब्ध कराते समय उपयोग किया जा सके।
2. मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग में सोपानों का वर्णन कीजिए।

निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना है -

- मूल्य निर्धारण आंकड़ों को संघटित करना ताकि ये समझने में आसान हों।
- मूल्य निर्धारण आंकड़ों को संक्षिप्त एवं एकीकृत करना जिससे उपयुक्त अंतःक्षेप की योजना बनाई जा सके।

- आकलित आंकड़ों को सम्प्रेषित एवं प्रतिवेदन करना ।
- आंकड़ों को सम्प्रेषित करने के तीनों तरीकों को विस्तार से लिखना —
 - (1) लिखित प्रतिवेदन
 - (2) साक्षात्कार के द्वारा आकलन सूचना का सम्प्रेषण ।
 - (3) मामले पर सम्मेलन आयोजित करना ।
- संवेदनशील सूचनाओं को प्रदान करते समय परामर्शदाता के भाषिक एवं गैर-भाषिक दोनों व्यवहार महत्वपूर्ण होते हैं ।

3. मूल्य निर्धारण आंकड़ों के प्रयोग में लाई जाने वाली सावधानियों को विस्तार से लिखिए :

- आंकड़ा संग्रहण अवस्था — आंकड़ा एकत्रित करने के लिए उपयुक्त विधि के चयन में सावधान रहने की आवश्यकता है, सेवार्थी की सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को ध्यान में रखना है, आदि ।
- एकीकरण-स्पष्ट व्याख्या अवस्था — विविध स्रोतों से एकत्रित किए गए आंकड़ों में समानुरूपता प्राप्त करने में सावधानी रखना, सामान्यीकरण या पक्षपात से बचना ।
- उद्देश्य चयन अवस्था — उपयुक्त अंतःक्षेप की योजना बनाने में उद्देश्यों के चयन में सावधानी रखना ।

.....

आत्म- निरीक्षण अभ्यासों के उत्तरबिन्दु —

आत्म- निरीक्षण अभ्यास-1

(i) क (ii) ख (iii) अ (iv) स (v) ब (vi) द

आत्म- निरीक्षण अभ्यास-2

1. ब 2. स 3. क 4. द 5. अ

.....

संदर्भ पुस्तकें

- Aiken, L.R. 2000. Psychological Testing and Assessment (10th ed.). Allyn & Bacon, New York.
- Anastasi, A., & Urbina, S. 1996. Psychological Testing. Pearson Education Inc, Delhi

- Hood, A.B & Johnson, R.W. 2002. Assessment in Counseling: A Guide to the Use of Psychological Assessment Procedures. American Counseling Association.
- Kline, P. 2000. Handbook of Psychological Testing, Routledge, London, New York.
- Milner, J., & O'Byrne, P. 2004. Assessment in Counseling: Theory, process and decisionmaking, Macmillan, Palgrave.
- Sutton, C. (2000). Child & Adolescent Behaviour Problems: A Multi-disciplinary Approach to Assessment and Intervention. BPS Books. The British Psychological Society, Leicester, U.K.
- Whiston, S.C. 2004 Principles and Applications of Assessment in Counseling. Wadsworth Publishers, New York.

वेबलिंक्स -

<http://www.kspope.com/assess/feedabs1.php>

<http://www.amhca.org/code>.

<http://www.apa.org/science/ttrr.html>

<http://www.schoolcounselor.org/files/ethical%20stndards.pdf>.

